30

5, II

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड—

राजा साहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंह जी बहादुर C. I. E. सोलन।

रावराजा कैप्टेन श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर।

श्रीमान् दीवान रुद्रशरणप्रतापसिंहजी जमीनदार साहब उपरोड़ा स्टेट सी.पी.

सहायक—

श्री १०५ मती माँजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य।

श्री १०५ मती सौ० राणी साहिबा वृन्दावनवाली जी (भरतपुर)।

रावबहादुर धर्मालङ्कार श्री १०५ मान् महाराज प्रभुनाथसिंहजी नरसिंहगढ़।

श्री १०५ मान् राजकुमार मानसिंहजी बार.एट-लॉ. जज हाईकोर्ट उदयपुर।

श्रीमान् दानवीर सेठ श्रीगोपालजी मोहता, उदयपुर (मेवाड़)।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंह जी साहब नाहन (सिरमौर)।

श्रीमान् कुँवर शिवसिंह जी B. A., L-L. P. सेशनजज सोलन।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंह जी अध्यक्ष धर्मसभा उदयपुर (मेवाड़)।

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंह जी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा।

श्री पं० देवकीनन्दन जी कथावाचक, यादव कीर्तन मण्डल अम्बाला।

श्रीमान् ला० बांकेलाल राजकुमार आढ़ती, खड़ (पंजाब)।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्यो० मा० ज्यो० र० श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

उपसम्पादक—

साहित्यरत्न काव्यतीर्थ श्री पं० भवानीशङ्कर त्रिवेदी शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

सम्मान्य ग्राहक

(३) जो सज्जन ५) से अधिक ५०) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय'के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३।।) और एक प्रतिका १) है।

(१) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होनेपर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे पूरा वार्षिक मूल्य ३।।) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौमासका मूल्य दो रुपये पन्द्रह आने २।।≡) दो अंकोंका छः माही मूल्य एक रुपया चवदह आने १।।=) और एक अंकका मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेसे उक्त मूल्यमें तीन आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर तथा पत्र व्यवहारमें अपना नाम पूरा पता और ग्राहक नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। ऐसा न करने पर अंक भेजने और उत्तर देनेमें विलम्ब हो सकता है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जायेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन, (शिमला)

ग्राहकों को सूचना—

पञ्चम वर्षका नववर्षांक

इस वर्षका 'नववर्षाङ्क' अब कार्यालयमें विक्रयार्थ अधिक नहीं है। यह विशेषाङ्क इतना अधिक उपयोगी लाभप्रद एवं लोकप्रिय सिद्ध हुआ कि दो मासके अन्दर ही सब प्रतियां समाप्त हो गयीं और अभी इसकी मांग निरन्तर आ रही है। अतः अब कार्यालयकी फाइलकी प्रतियोंमेंसे इस अङ्कका मूल्य ५) रु० कर दिया है। जिन सज्जनोंको अत्यधिक आवश्यकता हो वे ५) इस विशेषाङ्क के और २॥।–) शेष अगले तीन अङ्कों के मिला कुल ७॥–) भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। इस मूल्यमें भी यह अङ्क कुछ सीमित ग्राहकों को ही दिया जावेगा, सबकी आवश्यकता पूर्ण न हो सकेगी। विगत 'ग्रीष्माङ्क' की सूचनाको पढ़कर भी जो लोग अब दो तीन मास बाद मूल्य भेज रहे हैं उन पुराने ग्राहकोंको नववर्षाङ्क उसी मूल्यमें देनेमें अब हम असमर्थ हैं इसका हमें खेद है। यह हम पहले स्पष्ट लिख चुके थे कि जिनका मूल्य वर्षारम्भसे पहले आ जायेगा उन्हींको यह 'नववर्षाङ्क' मिल सकेगा और वी० पी० भी नहीं भेजी जायगी। फिर भी अब पुराने ग्राहकोंके लिए हम यह सुविधा कर रहे हैं कि जो वार्षिक मूल्य उन्होंने अब भेजा है इसीमें आगामी छठे वर्षका 'नववर्षाङ्क' उन्हें भेज दिया जावेगा। इस प्रकार उन्हें इस 'हेमन्ताङ्क' से ३ साधारण अङ्क और एक विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। यह सुविधा केवल पुराने ग्राहकोंके लिए है। अब इस 'हेमन्ताङ्क' से जो नये ग्राहक बनना चाहें वे आषाढ तक के ३ अङ्कों के लिए २॥।–) मनीआर्डर द्वारा भेजें।

गत चार वर्षोंकी कुछ प्रतियां शेष हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है। जिनको आवश्यकता हो वे शीघ्र मंगवा लें अन्यथा ये अङ्क भी अप्राप्य हो जावेंगे।

प्रथम वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य १॥) रु०

इसमें मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम और इतिहासके रहस्यको भलीभांति समझाया गया है। ग्रहोंका चमत्कार और भारतवर्ष, श्रुतिसम्मत-राज्यपद्धति, संस्कृत-साहित्य और काश्मीरी पण्डित, दीपावली, प्राकृतिक-चिकित्सा आदि कई खोजपूर्ण गम्भीर लेख हैं।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २॥) रु०

इस अङ्कमें मोक्षप्राप्तिका मर्म, राष्ट्रभाषा-मीमांसा, ब्रह्मार्पण, जीवन रहस्य, धर्मको जाननेकी विधि, ग्रहण-विवेचन चन्द्रमा, ग्रहण और राहु क्या वस्तु है? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है? राष्ट्रियपर्व होली, हेमन्त, ज्वालामुखीमें वनौषधियां, आचार्य श्रीअभिनवगुप्तपाद आदि कई लेख अत्यन्त गवेषणापूर्ण मननीय हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें अपमान न करो, मोक्षप्राप्तिका मार्ग, धर्मनिर्णयमें क्योंका स्थान, अहिन्सा, ऊंचा आदर्श, सांसारिक बर्ताव, वसन्त, राष्ट्रियपर्व—श्रीपरशुराम जयन्ती इत्यादि लेख अत्यन्त आकर्षक एवं पठनीय हैं। श्रीपरशुरामस्तोत्रका पद्यानुवाद भी इसमें हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें राजाका आदर्श, भारतीयदर्शन और आत्मज्ञान, अनुपम-शान्ति-साधन, क्या कलियुग समाप्त हो रहा है? उपाकर्म श्रावणी रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी और उसका महत्त्व, श्राद्धविवेचन; श्रीदेवीनवरात्र और शक्ति-संचय, विजयादशमी, विनाशकाल, विश्वशान्ति और ग्रहशान्ति, अनुभूतयोग, वारोंका क्रम, विराटनगर, पौराणिक ऐतिह्य-विवेचन और दुर्गा दुर्गतिनाशिनी इत्यादि कई लेख बड़े मार्मिक खोजपूर्ण एवं महत्त्वमण्डित हैं। चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य ४) रु०

इस अङ्कमें राष्ट्रपति, आत्माऽनुभवके कुछ अंश, कीर्त्तनकी महत्ता, मानवजीवन एक पहेली है, पितृलोकका समय विभाग श्राद्धरहस्य, दीपमालिका रहस्य, दीपमालिका विज्ञान, भारतीय ज्यौतिषप्रणाली, कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः, स्वाध्यायकी महिमा, शूद्रक-अग्निमित्र-इन्द्राणिगुप्त-विक्रमादित्य प्रथम, पौराणिक ऐतिह्यविवेचन, अंगूर, और प्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार इत्यादि कई लेख अत्यन्त मननीय और उपादेय हैं, जो अध्ययनसे ही सम्बन्ध रखते हैं।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २) रु०

इस अङ्कमें भारतकी भारती कौनसी होगी ?, जीवनकी एक झांकी, भगवती श्रीसीता, बृहस्पति और ममता, भारतीय ज्योतिष प्रणाली, कालाय तस्मै नमः, महायुद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा, नौवर्ष पहलेकी भविष्यवाणी, श्रीमहाशिवरात्रि, श्रीरामनवमी, शिक्षा का भारतीयकरण, हेमन्त, वसन्तोत्सव कैसे मनाया जाय ? वासन्ती (आषाढ़ी) नवसस्येष्टि होलिका, आर्यजातिका जन्मस्थान इत्यादि लेख अत्यन्त उपयोगी और देखने तथा मनन करने योग्य हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें स्वत्व, जीवनकी एक झांकी, ब्राह्मण, अक्षयतृतीया, श्रीपरशुरामाष्टक, कालका गाल, आधुनिक क्रयविक्रयविज्ञान, क्या रोगोंका कारण रोगाणु हैं ?' श्रीमहावीरजीका लङ्का निरीक्षण इत्यादि लेख बहुत ही मार्मिक एवं अन्वेषणात्मक हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें युद्ध, शान्तिरस्तु, श्रीगणपति पूजन, नागपंचमी, श्रावणी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, देवीनवरात्र, भारतीय ज्योतिषप्रणाली, काल, वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्यौतिष, विषूचिका (हैजा) यास्क और पाणिनिका समय इत्यादि लेख सारगर्भित रोचक एवं अत्यन्त मनन योग्य हैं।

इस द्वितीय वर्षकी पूरी फाइल (चारों अङ्कों) का मूल्य =) रु० है।

तृतीय वर्षकी फाइल

१—'नववर्षाङ्क' मूल्य ५) रु०

यह पिछले सब अङ्कोंसे बड़ा, अत्यन्त उपादेय ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण १२० पृष्ठका सचित्र अङ्क है।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २) रु०

इसमें युद्धका अन्त, वेदस्वरूपनिरूपण, हिन्दूपर्व, निद्राविज्ञान, स्वास्थ्यरक्षा आदि कई महत्त्वपूर्ण लेख हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १॥) रु०

इसमें उन्नतिका मूलमंत्र, ईश्वर उपासनामें मूर्ति पूजाकी अनिवार्यता, वेदस्वरूप-निरूपण, हिन्दू पर्व, संसारचक्र, असुर आदि कई गवेषणापूर्ण लेख हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १॥) रु०

इसमें अखण्डभारतवर्ष, बन्धमोक्ष-रहस्य, वेदस्वरूप-निरूपण, सनातनधर्मकी महत्ता, सूर्यग्रहण-विवेचन, कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका वैज्ञानिक महत्त्व, श्राद्धकी महत्ता, आदि आदि कई महत्त्वमण्डित ज्ञानगर्भित लेख हैं।

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइल मूल्य १०) रु०।

चतुर्थ वर्षकी फाइल

१—'नववर्षाङ्क' अप्राप्य

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य ३) रु०

इसमें सुधार, पशुपति, शिक्षा और श्रद्धा, पञ्चाङ्ग संशोधन, वेदस्वरूप निरूपण, चरणामृतकी वैज्ञानिक महत्ता, दीर्घजीवि बननेके उपाय, सन्तानिग्रह, मिहिरकुल नाटक इत्यादि अनेक मौलिक लेख हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य ३) रु०

इसमें उन्नति, नैर्मल्य, वेदस्वरूपनिरूपण, भगवान् श्रीराम, सर्वोत्तम धर्म, ज्योतिष और धर्मशास्त्र, मिहिरकुल (नाटक) भरोसा (कहानी) आदि कई मननीय लेख हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १॥)

इसमें साम्यवाद, प्रेम, श्रीकृष्णसन्देश, वेदस्वरूपनिरूपण, भारतीयज्योतिषप्रणाली, उपयोगी वस्तुएं बनानेकी विधि, दीर्घायुकी कुञ्जी, श्राद्धकी महत्ता, ग्रहोंका व्यापार व्यवसाय पर प्रभाव आदि अनेकों महत्वपूर्ण लेख हैं।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ५	सोलन, पौष शु० १० रविवार सं० २००२ वि०	संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

पूत-पद

[कविसम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध']

अपने करमें क्या है।
जो कुछ है वह हरि करमें है नर बपुरा बपुरा है।
हरि है कौन, कहाँ है, उसकी बलवत्ता है कितनी।
जितनी बतलाते हैं क्या वह वास्तवमें है उतनी॥
उन्हें कोई वैकुण्ठ-निवासी साकेताधिप कहता है।
सत्यलोक गोलोकनाथ कह कोई पुलकित रहता है॥
है यह केवल कान्त-कल्पना है वह विश्वनिवासी।
है यह घटना क्या न संघटित है वह घटघटवासी॥
है असार संसार नहीं कब है वह हरिसे न्यारा।
है स्वाभाविक हरिस्वरूप सारा संसार पसारा॥
हरि न अन्य है, उसके अस्तित्वादिक कृतिकी काया।
हैं संसार विमुग्धकारिणी विश्वब्रह्मकी माया॥

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा इहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का मुख्य उद्देश्य है।

सञ्चालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

सम्मान्य ग्राहक

(३) जो सज्जन ५) से अधिक ५०) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय'के नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ३॥) और एक प्रतिका १) है।

(१) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (पंजाब) के पतेसे भेजने चाहियें।

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होनेपर लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्क से (आश्विनमास विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषाङ्क न लेना चाहे तो बीच में किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे पूरा वार्षिक मूल्य ३॥) रु० न लेकर वर्षसमाप्ति तक (आषाढ़ तक) के शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौमासका मूल्य दो रुपये पन्द्रह आने २॥।≡) दो अंकोंका छः माही मूल्य एक रुपया चवदह आने १॥।=) और एक अंकका मूल्य १) रु० मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवानेसे उक्त मूल्यमें तीन आने अधिक रजिस्ट्री खर्चके बढ़ जावेंगे।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर तथा पत्र व्यवहारमें अपना नाम पूरा पता और ग्राहक नम्बर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। ऐसा न करने पर अंक भेजने और उत्तर देनेमें विलम्ब हो सकता है।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जायेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास न पहुँचे तो १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन, (शिमला)

ग्राहकों को सूचना—

पञ्चम वर्षका नववर्षांक

इस वर्षका 'नववर्षाङ्क' अब कार्यालयमें विक्रयार्थ अधिक नहीं है। यह विशेषाङ्क इतना अधिक उपयोगी लाभप्रद एवं लोकप्रिय सिद्ध हुआ कि दो मासके अन्दर ही सब प्रतियां समाप्त हो गयीं और अभी इसकी मांग निरन्तर आ रही है। अतः अब कार्यालयकी फाइलकी प्रतियोंमेंसे इस अङ्कका मूल्य ५) रु० कर दिया है। जिन सज्जनोंको अत्यधिक आवश्यकता हो वे ५) इस विशेषाङ्क के और २॥|–) शेष अगले तीन अङ्कों के मिला कुल ७॥|–) भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। इस मूल्यमें भी यह अङ्क कुछ सीमित ग्राहकों को ही दिया जावेगा, सबकी आवश्यकता पूर्ण न हो सकेगी। विगत 'ग्रीष्माङ्क' की सूचनाको पढ़कर भी जो लोग अब दो तीन मास बाद मूल्य भेज रहे हैं उन पुराने ग्राहकोंको नववर्षाङ्क उसी मूल्यमें देनेमें अब हम असमर्थ हैं इसका हमें खेद है। यह हम पहले स्पष्ट लिख चुके थे कि जिनका मूल्य वर्षारम्भसे पहले आ जायेगा उन्हींको यह 'नववर्षाङ्क' मिल सकेगा और वी० पी० भी नहीं भेजी जायगी। फिर भी अब पुराने ग्राहकोंके लिए हम यह सुविधा कर रहे हैं कि जो वार्षिक मूल्य उन्होंने अब भेजा है इसीमें आगामी छठे वर्षका 'नववर्षाङ्क' उन्हें भेज दिया जावेगा। इस प्रकार उन्हें इस 'हेमन्ताङ्क' से ३ साधारण अङ्क और एक विशेषाङ्क प्राप्त हो जावेगा। यह सुविधा केवल पुराने ग्राहकोंके लिए है। अब इस 'हेमन्ताङ्क' से जो नये ग्राहक बनना चाहें वे आषाढ तक के ३ अङ्कों के लिए २॥|–) मनीआर्डर द्वारा भेजें।

गत चार वर्षोंकी कुछ प्रतियां शेष हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जा रहा है। जिनको आवश्यकता हो वे शीघ्र मंगवा लें अन्यथा ये अङ्क भी अप्राप्य हो जावेंगे।

प्रथम वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य १॥) रु०

इसमें मोक्ष, धर्म, अर्थ, काम और इतिहासके रहस्यको भलीभांति समझाया गया है। ग्रहोंका चमत्कार और भारतवर्ष, श्रुतिसम्मत-राज्यपद्धति, संस्कृत-साहित्य और काश्मीरी पण्डित, दीपावली, प्राकृतिक-चिकित्सा आदि कई खोजपूर्ण गम्भीर लेख हैं।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २॥) रु०

इस अङ्कमें मोक्षप्राप्तिका मर्म, राष्ट्रभाषा-मीमांसा, ब्रह्मार्पण, जीवन रहस्य, धर्मको जाननेकी विधि, ग्रहण-विवेचन चन्द्रमा, ग्रहण और राहु क्या वस्तु है? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है? ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है? राष्ट्रियपर्व होली, हेमन्त, ज्वालामुखीमें वनौषधियां, आचार्य श्रीअभिनवगुप्तपाद आदि कई लेख अत्यन्त गवेषणापूर्ण मननीय हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें अपमान न करो, मोक्षप्राप्तिका मार्ग, धर्मनिर्णयमें क्योंका स्थान, अहिन्सा, ऊंचा आदर्श, सांसारिक बर्ताव, वसन्त, राष्ट्रियपर्व—श्रीपरशुराम जयन्ती इत्यादि लेख अत्यन्त आकर्षक एवं पठनीय हैं। श्रीपरशुरामस्तोत्रका पद्यानुवाद भी इसमें है।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १॥) रु०

इस अङ्कमें राजाका आदर्श, भारतीयदर्शन और आत्मज्ञान, अनुपम-शान्ति-साधन, क्या कलियुग समाप्त हो रहा है? उपाकर्म श्रावणी रक्षाबन्धन, श्रीकृष्णजन्माष्टमी और उसका महत्त्व, श्राद्धविवेचन; श्रीदेवीनवरात्र और शक्ति-संचय, विजयादशमी, विनाशकाल, विश्वशान्ति और ग्रहशान्ति, अनुभूत-योग, वारोंका क्रम, विराटनगर, पौराणिक ऐतिह्य-विवेचन और दुर्गा दुर्गतिनाशिनी इत्यादि कई लेख बड़े मार्मिक खोजपूर्ण एवं महत्त्वमण्डित हैं। चारों अङ्कोंकी पूरी फाइलका मूल्य ६) रु०।

द्वितीय वर्षकी फाइल

१—'शरदङ्क' मूल्य ४) रु०

इस अङ्कमें राष्ट्रपति, आत्माऽनुभवके कुछ अंश, कीर्त्तनकी महत्ता, मानवजीवन एक पहेली हैं, पितृलोकका समय विभाग श्राद्धरहस्य, दीपमालिका रहस्य, दीपमालिका विज्ञान, भारतीय ज्यौतिषप्रणाली, कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धः, स्वाध्यायकी महिमा, शूद्रक-अग्निमित्र-इन्द्राणिगुप्त-विक्रमादित्य प्रथम, पौराणिक ऐतिह्यविवेचन, अंगूर, और प्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार इत्यादि कई लेख अत्यन्त मननीय और उपादेय हैं, जो अध्ययनसे ही सम्बन्ध रखते हैं।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २) रु०

इस अङ्कमें भारतकी भारती कौनसी होगी ?, जीवनकी एक झांकी, भगवती श्रीसीता, बृहस्पति और ममता, भारतीय ज्योतिष प्रणाली, कालाय तस्मै नमः, महायुद्ध शीघ्र समाप्त नहीं होगा, नौवर्ष पहलेकी भविष्यवाणी, श्रीमहाशिवरात्रि, श्रीरामनवमी, शिक्षा का भारतीयकरण, हेमन्त, वसन्तोत्सव कैसे मनाया जाय ? वासन्ती (आषाढ़ी) नवसस्येष्टि होलिका, आर्यजातिका जन्मस्थान इत्यादि लेख अत्यन्त उपयोगी और देखने तथा मनन करने योग्य हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १।।) रु०

इस अङ्कमें स्वत्व, जीवनकी एक झांकी, ब्राह्मण, अक्षयतृतीया, श्रीपरशुरामाष्टक, कालका गाल, आधुनिक क्रयविक्रयविज्ञान, क्या रोगोंका कारण रोगाणु हैं ?' श्रीमहावीरजीका लङ्का निरीक्षण इत्यादि लेख बहुत ही मार्मिक एवं अन्वेषणात्मक हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १।।) रु०

इस अङ्कमें युद्ध, शान्तिरस्तु, श्रीगणपति पूजन, नागपंचमी, श्रावणी, श्रीकृष्णजन्माष्टमी, देवीनवरात्र, भारतीय ज्योतिषप्रणाली, काल, वर्तमान विश्वव्यापी संग्राम और ज्यौतिष, विषूचिका (हैजा) यास्क और पाणिनिका समय इत्यादि लेख सारगर्भित रोचक एवं अत्यन्त मनन योग्य हैं।

इस द्वितीय वर्षकी पूरी फाइल (चारों अङ्कों) का मूल्य ८) रु० है।

तृतीय वर्षकी फाइल

१—'नववर्षाङ्क' मूल्य ५) रु०

यह पिछले सब अङ्कोंसे बड़ा, अत्यन्त उपादेय ठोस सामग्रीसे परिपूर्ण १२० पृष्ठका सचित्र अङ्क है।

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य २) रु०

इसमें युद्धका अन्त, वेदस्वरूपनिरूपण, हिन्दूपर्व, निद्राविज्ञान, स्वास्थ्यरक्षा आदि कई महत्त्वपूर्ण लेख हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य १।।) रु०

इसमें उन्नतिका मूलमंत्र, ईश्वर उपासनामें मूर्तिपूजाकी अनिवार्यता, वेदस्वरूप-निरूपण, हिन्दू पर्व, संसारचक्र, असुर आदि कई गवेषणापूर्ण लेख हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १।।) रु०

इसमें अखण्डभारतवर्ष, बन्धमोक्ष-रहस्य, वेदस्वरूप-निरूपण, सनातनधर्मकी महत्ता, सूर्यग्रहण-विवेचन, कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणका वैज्ञानिक महत्त्व, श्राद्धकी महत्ता, आदि आदि कई महत्त्वमण्डित ज्ञानगर्भित लेख हैं।

चारों अङ्कोंकी पूरी फाइल मूल्य१०) रु०।

चतुर्थ वर्षकी फाइल

१—'नववर्षाङ्क' अप्राप्य

२—'हेमन्ताङ्क' मूल्य ३) रु०

इसमें सुधार, पशुपति, शिक्षा और श्रद्धा, पञ्चाङ्ग संशोधन, वेदस्वरूप निरूपण, चरणामृतकी वैज्ञानिक महत्ता, दीर्घजीवि बननेके उपाय, सन्तानन्निग्रह, मिहिरकुल नाटक इत्यादि अनेक मौलिक लेख हैं।

३—'वसन्ताङ्क' मूल्य ३) रु०

इसमें उन्नति, नैर्मल्य, वेदस्वरूपनिरूपण, भगवान् श्रीराम, सर्वोत्तम धर्म, ज्योतिष और धर्मशास्त्र, मिहिरकुल (नाटक) भरोसा (कहानी) आदि कई मननीय लेख हैं।

४—'ग्रीष्माङ्क' मूल्य १।।)

इसमें साम्यवाद, प्रेम, श्रीकृष्णसन्देश, वेदस्वरूप-निरूपण, भारतीयज्योतिषप्रणाली, उपयोगी वस्तुएं बनानेकी विधि, दीर्घायुकी कुञ्जी, श्राद्धकी महत्ता, ग्रहोंका व्यापार व्यवसाय पर प्रभाव आदि अनेकों महत्त्वपूर्ण लेख हैं।

पता—व्यवस्थापक, श्रीस्वाध्याय सदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति [राष्ट्रालोक]

वर्ष ५	सोलन, पौष शु० १० रविवार सं० २००२ वि०	संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
—अ० वा० आचार्य

पूत-पद

[कविसम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध']

अपने करमें क्या है ।
जो कुछ है वह हरि करमें है नर बपुरा बपुरा है ।
हरि है कौन, कहाँ है, उसकी बलवत्ता है कितनी ।
जितनी बतलाते हैं क्या वह वास्तवमें है उतनी ॥
उन्हें कोई वैकुण्ठ-निवासी साकेताधिप कहता है ।
सत्यलोक गोलोकनाथ कह कोई पुलकित रहता है ॥
है यह केवल कान्त-कल्पना है वह विश्वनिवासी ।
है यह घटना क्या न संघटित है वह घटघटवासी ॥
है असार संसार नहीं कब है वह हरिसे न्यारा ।
है स्वाभाविक हरिस्वरूप सारा संसार पसारा ॥
हरि न अन्य है, उसके अस्तित्वादिक कृतिकी काया ।
है संसार विमुग्धकारिणी विश्वब्रह्मकी माया ॥

मोक्षका एकमात्र साधन

यह तो 'श्रीस्वाध्याय' के इसी स्तम्भमें हम कई बार उद्घोषित कर चुके हैं कि 'मोक्ष' शब्दसे व्यावहारिक और पारमार्थिक दोनों प्रकारकी मुक्ति अथवा स्वतन्त्रता अभिप्रेत हैं। इसलिए प्रस्तुत पंक्तियोंमें उभयविध मोक्ष प्राप्तिके साधनपर प्रकाश डाला जायगा। जो साधन यहां निर्दिष्ट किया जा रहा है उसकी सबसे बड़ी विशेषता यही है कि उसे अपना लेनेपर व्यक्ति और समुदाय दोनोंको उक्त दोनों प्रकारकी मुक्ति सहज हीमें प्राप्त हो सकती है।

हां, तो वर्तमानमें व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के सभी, सभी दृष्टियोंसे पतनोन्मुख हो रहे हैं। यों तो सभी राष्ट्रोंकी दुर्दशा हो रही है, किन्तु जो भारत अनेकों युगों तक संसारका शिरोमणि और मार्ग प्रदर्शक रहा उसी भारतकी आज अत्यन्त हीन दशा हो रही है। समाजके सभी अंगोंमें विश्रृंखलता आ गई है। सभी वर्गोंमें अन्याय, अत्याचार, स्वार्थान्धता और अकर्मण्यताने अपना पूर्ण प्रभुत्व जमा रक्खा है। कुछ एक स्वनामधन्य महापुरुषों और नेताओंको छोड़कर भारतीय जनता अधिकांशतः अत्यन्त लोलुप, कायर, पाखण्डी और धर्मध्वजी हो गई है। व्यवस्था, नियम और अनुशासनका तो मानो कहीं नाम भी दिखाई नहीं देता। सब लोगोंने अपनी इच्छा और सुविधाके अनुसार अपने अपने धर्म और सिद्धान्त बना रक्खे हैं। जितने मुंह उतनी बातें नहीं किन्तु जितने मुंह उतने धर्मकी लोकोक्ति आज हमारे देशमें अक्षरशः चरितार्थ हो रही है। कहीं दुधमुंहे बच्चोंके विवाह हो रहे हैं तो कहीं बालविधवाओंका आर्त्त क्रन्दन सुनाई दे रहा है। अशिक्षा या निरक्षरताका तो मानों हमारा देश ही एकमात्र रक्षक हो रहा है। जहां एक ओर छोटे छोटे बच्चे विवाह बन्धनमें बांध दिए जाते हैं वहां दूसरी ओर इन बच्चोंको संसारमें प्रवेश करनेके पूर्व ही साधू सन्यासी और यती भी बना दिया जाता है। बेकारी और दरिद्रताका पूछना ही क्या? जहां संसार के दूसरे देशोंमें निकम्मे लोगोंकी संख्या रक्खी जाती है और इस बातके लिए सर्वदा प्रयत्न किया जाता है कि लोग निकम्मे न रहें एवं यदि कुछ लोगोंको कभी व्यवस्थापूर्वक निकम्मा बैठना भी पड़े तो राष्ट्र अथवा राज्यकी ओरसे उनके जीवन निर्वाहका प्रबन्ध किया जाता है। किन्तु, हन्त भारत! तेरी अवस्था आज बिलकुल विपरीत है। इस देशके लिए यह असम्भव है कि यहांके निकम्मे लोगोंकी गणना हो सके। विपरीत इसके यहां तो कारोबारमें लगे हुये लोगोंकी ही संख्या गिनी जा सकती है। अर्थात् एक ओर हम जब समाचार पत्रोंमें पढ़ते हैं कि अमेरिका में १० लाख व्यक्ति निकम्मे बैठे हैं तो दूसरी ओर अपने देशका ध्यान देने पर हमें तो बरबस यही मानना पड़ता है कि हमारे देशमें तो १० लाख व्यक्ति कारोबारमें लगे हैं।

इसी प्रकार त्यागके अनुपम आदर्श बन आत्मोद्धारके साथ ही साथ राष्ट्र और समाजका लौकिक और पारलौकिक कल्याण करना ही जिन साधुओं और सन्यासियोंका एकमात्र कर्तव्य था, जिनके लिए शास्त्रने किसी भी प्रकारकी सवारी पर बैठना निषिद्ध ठहराया, द्रव्यसंग्रह तो दूर रहा धातूका स्पर्श मात्र भी जिनके लिए अनियमित था, बड़े २ प्रासादों और महलोंमें रहना तो कहीं रहा ग्राममें रहना भी जिनके लिए अवैध था, उन्हीं साधू सन्यासियोंने आज अपने बड़े-बड़े महल बना रखे हैं। निर्धन सद्गृहस्थियोंके पास अन्न वस्त्र और रुपये पैसोंका दर्शन भी न हो पर इन साधू नामधारी पूंजीपतियों के पास अत्यन्त रत्नभण्डार भरे पड़े हैं, संसार के उत्तम श्रेष्ठतम पदार्थोंका ये भोग करते हैं, इनके विलास और व्यभिचारकी कहानियां प्रायः पत्रोंमें

प्रकाशित होती हैं, बड़े-बड़े तीर्थधाम इन्हींके कारण आज भ्रष्टाचारके गढ़ बन रहे हैं। जब त्यागके आदर्श साधु सन्यासियोंकी ही यह दशा है तो गृहस्थियों की क्या ? कोई भी गृहस्थ परिवार वर्तमानमें राष्ट्रके लिए किसी भी प्रकारका त्याग करनेके लिए प्रस्तुत नहीं है। ज्यों ज्यों मनुष्य बड़ा होता है त्यों त्यों वह माया-ममताके मोह जालमें फंसता जाता है, वृद्धावस्थामें पैर रखते ही तो वह लोभ और मोहकी साकार मूर्ति ही बन जाता है। यदि देशके लिए उसे कुछ दान या काम करनेको कहा जाय तो उसे अपने पुत्र या पौत्रके विवाह यज्ञोपवीत आदिका ध्यान आ जाता है और किसी भी अवस्थामें न तो अपने परिवारके नवयुवकको ही शुभ कर्म करने देता है तथा न स्वयं ही कुछ करता है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति १०-१५ वर्षकी अवस्थामें ही पैसा कमानेकी धुनमें लग जाता है और मृत्यु पर्यन्त उसे धनोपार्जन ही की चिन्ता लगी रहती है, यहां तक कि साठ वर्षका बूढ़ा भी पेन्शन तक नहीं लेना चाहता। इस प्रकार राष्ट्रके लिए बलिदान और त्याग के लिए लोगोंको अपने जीवनमें क्षण भर भी समय नहीं मिलता। यह दशा वर्तमान भारत और भारतीय समाज की है। बेकारी, निरक्षरता, लोलुपता, स्वार्थपरायणता, आर्थिक दुर्वस्था, राजनैतिकदासता, सामाजिक विशृंखलता, कर्तव्यहीनता आदि सम्पूर्ण दोषोंने भारतमें अपना अड्डा बना रक्खा है।

अब विवेचक विज्ञवर्गके समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि इस दुर्वस्थासे उद्धार हो तो कैसे ? ऐसा कोई सरलतम साधन अवश्य ढूंढ़ना चाहिए जिसके द्वारा सभी प्रकारकी त्रुटियोंका सुधार हो सके और देशका उद्धार हो जाय।

हम समझते हैं कि हमारे त्रिकालदर्शी महर्षियों ने हमें सब प्रकारकी विपत्तियोंसे बचाने के लिए एक अत्यन्त सुन्दर सरल और हितकर व्यवस्था बना दी थी। यदि आज भी सम्पूर्ण जनता उसे फिरसे अपना ले तो कुछ ही समयमें इसका उद्धार हो सकता है। उद्धार ही क्यों वह वास्तवमें संसारका पथप्रदर्शक बनकर जगद्गुरु कहलानेका पुनः अधिकारी भी हो सकता है। हां तो आप यह जाननेको उत्सुक हो रहे होंगे कि वह कौनसी सरल व्यवस्था है जिसके द्वारा अति शीघ्रतासे भारतका उद्धार हो सकता है। अच्छा तो सुनिये—वह है 'आश्रम व्यवस्था'।

यदि आज सम्पूर्ण भारतीय इस आश्रम-व्यवस्था का पालन करने लग पड़ें तो निस्संदेह भारतका स्वर्णयुग फिरसे तत्काल आ सकता है। देखिये:—सर्वप्रथम ब्रह्मचर्य-आश्रमका विधि-विहित पालन होने लग पड़े—प्रत्येक व्यक्ति २५ वर्ष पर्यन्त नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर २५ वर्ष पर्यन्त विद्याध्ययन करने लग पड़े तो फिर भला भारतमें निरक्षरता रह ही कैसे सकती है। इसके साथ ही बाल-विवाहकी कुप्रथा भी अपने आप ही लुप्त हो जाती है और ऐसी स्थितिमें भला बाल विधवा तो मिलेंगी ही कहां से ? फिर हमें न तो शारदाएक्टकी आवश्यकता होगी और न विधवा विवाहके लिये ही आन्दोलन करना पड़ेगा। दूसरी ओर बालकों और नवयुवकोंका बलात्कारसे साधु सन्यासी बनानेकी प्रथा भी स्वतः लुप्त हो जायगी। इसके अतिरिक्त २५ वर्ष तक अनेकानेक शिल्प कला, उद्योग एवं विविध विज्ञानकी शिक्षा प्राप्त किये हुये व्यक्ति जब समाजमें प्रवेश करेंगे तो उनके कार्य अपने आप ही सफल एवं सुसम्पन्न होंगे और उनका गृहस्थ जीवन सुख और शान्तिका सदन होगा। तत्पश्चात् ५० वर्ष तक गृहस्थ जीवन बिताकर वानप्रस्थ और सन्यास आश्रमको ग्रहण कर लेने पर मनुष्य अपना और राष्ट्रका सब प्रकारका कल्याण बड़ी सुगमतासे कर सकता है। ऐसी अवस्थामें आज जो वृद्धोंमें माया ममता और मोह दिखाई देता है वह लेश मात्र भी न रह पायेगा। देशके लिए न्योछावर होने वाले स्वयं सेवकोंका आज जो अभाव है उसकी भी पूर्ती हो जायगी। क्योंकि वानप्रस्थियों और सन्यासियोंके

लिए अपना व्यक्तिगत कार्य तो कोई रह ही नहीं जाता, उनका तो सर्वस्व ही जनता-जनार्दनके लिए ही समर्पित हो जाता है। इसलिये उक्त दोनों आश्रमियोंके द्वारा साक्षरता, शिक्षाका प्रचार आदि जन हितकर कार्य तो सरलता पूर्वक सम्पन्न हो ही सकते हैं; साथ ही आवश्यकता पड़ने पर करोड़ों अनुभवी व्यक्तियोंकी एक बड़ी भारी सेना भी सुसंगठित हो जाती हैं, जिनको कि अन्न वस्त्रके सिवाय किसी भी वस्तुकी चिन्ता नहीं। इसके साथ ही विद्वान्, तेजस्वी, ब्रह्मनिष्ठ सन्यासियोंके द्वारा न केवल भारत ही में प्रत्युत विश्व भरमें सद्धर्मका प्रचार हो सकता है। सन्यासी जहां भारतके गांव गांवमें जा कर धर्म प्रचार करें वहां विदेशोंमें, देशदेशान्तरोंमें आर्य संस्कृतिका प्रचार करना भी उनका ही कर्तव्य और धर्म है। आश्रमव्यवस्थाके अनुसार जब तीन आश्रमोंको पार करनेके पश्चात् ही सन्यासाश्रममें प्रविष्ट होनेकी प्रथा पुनः प्रचलित हो जायगी तो आधुनिक साधु सन्यासी वर्गमें दिखाई दे रहा दुराचार और पूंजीवाद भी अपने आप समाप्त हो जायगा। साधुओंके दुराचारी होनेका मूल कारण तो यही है कि अधिकांशतः वे अपरिपक्वावस्था ही में अथवा यों कहें कि गृहस्थाश्रममें प्रविष्ट हुये बिना ही साधु हो जाते हैं अथवा बना दिये जाते हैं।

एवमेव आश्रम-व्यवस्थाके सुचारू रूपसे पालन करनेका सत्प्रभाव जहां हमारे धार्मिक सामाजिक और राजनैतिक जीवनको उन्नत करता है वहां हमारी आर्थिक दुरवस्था तथा बेकारीकी समस्या समाधान होने में भी सहायक होता है। क्योंकि अभी तो कारोबार और काम धन्धे कम हैं और काम करनेवाले व्यक्ति बहुत। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि सम्प्रति १५-१६ वर्षका बच्चा किसी-न-किसी काममें जुटकर मृत्यु पर्यन्त अपने पद या स्थानसे चिपटा ही रहता है। वह आने वाली पीढ़ी अथवा नवयुवकोंके लिये स्थान रिक्त करना नहीं चाहता। किन्तु आश्रम व्यवस्थाके प्रचार होने पर तो ऐसी स्थिति रहेगी ही नहीं। प्रत्येक व्यक्ति ५० वर्ष के पश्चात् स्वतः अपना स्थान दूसरे के लिये रिक्त कर देगा और स्वयं निष्काम सेवामें लग जायगा। फिर भला बेकारी फटक ही कैसे जायगी ?

इस प्रकार यह तो निश्चित हो ही गया कि आश्रम धर्मके परिपालनसे लौकिक सुख सम्पत्ति और स्वातन्त्र्य बड़ी ही सुगमतासे प्राप्त हो सकता है। साथ ही पारलौकिक मुक्तिका भी निष्काम कर्मयोग ही एक मात्र साधन है और अपने-अपने वर्णाश्रम धर्मका विधिपूर्वक पालन करनेसे बढ़कर और कोई निष्काम कर्म हो ही नहीं सकता। फलतः आश्रमव्यवस्थासे पारलौकिक मोक्ष भी अवश्य प्राप्त हो जाता है।

स्मरण रहे कि तप (कष्ट सहन) और त्यागकी भावनाका प्रचार और अङ्गीकार ही आश्रमव्यवस्थाका एकमात्र उद्देश्य है। अर्थात् आश्रम-व्यवस्थाके सम्यक् परिपालनसे मनुष्यकी प्रवृत्तियां बहिर्मुखी न होकर अन्तर्मुखी हो जाती हैं। किन्तु जो व्यक्ति आरम्भ हीसे जन्म जात तपस्वी और त्यागी हो, माया, ममता, मोहको त्यागकर सच्चे अर्थमें सन्यासी अथवा दूसरे शब्दोंमें कर्मयोगी बन गया हो, तब तो यदि वह बाह्य दृष्टिसे चाहे किसी भी आश्रममें क्यों न रहे उसने चारों ही आश्रमोंका फल अनायास ही प्राप्त कर लिया, भले ही वह भौतिक रूपसे एक आश्रमका त्याग और दूसरेका ग्रहण न भी करे अथवा इनका व्यत्यय भी क्यों न कर डाले। इसी लिये श्री शुकदेव, भीष्मपितामह, श्री शङ्कराचार्य, श्री स्वामी विवेकानन्द जी, महात्माबुद्ध श्री स्वामी दयानन्दजी सरस्वती आदि वीतराग महापुरुषोंने गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होनेसे पूर्व ही अथवा गृहस्थको सहसा त्याग कर सन्यास ले लिया इसमें कुछ भी आपत्ति या दोष नहीं क्योंकि 'त्याग' और 'तप'में तो कभी भी कुछ भी दोष हो ही नहीं सकता। दोष तो

आसक्ति, उपभोग और वासनामें है, अर्थात् जन्मभर ब्रह्मचारी या सन्यासी रहना बुरा नहीं, बुरा तो सर्वदा गृहस्थके जंजालमें फंसे रहना ही है और इसी उद्देश्यसे तो आश्रमव्यवस्थाका विधान हुआ है कि मनुष्य जन्मभर गृहस्थके मायापाश ही में आबद्ध न रहे।

इसी प्रकार जनक, भगवान् राम, कृष्ण, महात्मा गांधी, ज़वाहरलाल, मालवीयजी आदिने यदि लौकिक दृष्टिसे किसी आश्रम-विशेषका त्याग या ग्रहण नहीं किया तब भी कोई हानि नहीं, क्योंकि ये भी जन्म-जात कर्मयोगी अथवा सन्यासी हैं।

किन्तु साधारण व्यक्तिको तो और विशेष रूपसे ऐसे व्यक्तिको जिसके जीवनका अधिक भाग स्वार्थ साधन हीमें बीत रहा हो, अवश्यमेव आश्रमधर्मका सम्यक्तया परिपालन करना ही चाहिए।

इसलिए राष्ट्रहितैषियोंसे हमारा निवेदन है कि वे आत्मकल्याण और राष्ट्रकल्याणके लिए रूसके साम्यवाद या अन्य किसी पश्चिमी सिद्धान्तका मुंह न ताककर भारतके अपने आदर्श-आश्रमधर्मका पालन करनेका प्रण करे। आज अनेकों धार्मिक संस्थायें अनेकों इधर उधरकी धार्मिक चर्चायें और आन्दोलन करती हैं, किन्तु आर्यसंस्कृतिकी मूल इस आश्रमव्यवस्थाकी ओर किसीका भी ध्यान नहीं जाता। अतः हम पुनः राष्ट्र नेताओं, धर्मोपदेशकों एवं विज्ञ विद्वानोंसे निवेदन करते हैं कि वे अन्यान्य सभी गौण बातोंको छोड़कर जनतामें आश्रमव्यवस्था हीको अपनानेका प्रचार करें। आश्रमव्यवस्था हीसे भारत तथा विश्व अभ्युदय एवं निश्रेयसको प्राप्त कर सकता है और यही उभयविध मोक्षका एक मात्र साधन हैं।

———

"आह्वान"

[श्री डा० श्रीनाथजी तिक्कू शास्त्री]



दरस दो प्रभो दया निधान !
कौन पापके कारण हमसे कुपित हुए भगवान्।
दरस दो प्रभो दयानिधान॥

महा मोह-मय तिमिरि-पटलसे,
कालनिशाने घेरा हमको।
भटक रहें हम धैर्य हीन हो
कर दो निज आलोक प्रदान॥
दरस दो०॥

उरमें मिलनेकी आशा है,
नयनोंमें जल भर आया है।
बाट जोहते वरसों बीते,
आओ कर दो जीवन दान॥
दरस दो०॥

भक्तोंके अपनानेमें तुम,
सदा निरत रहते ज्योतिर्मय।
पतितजनोंको भी तारा है,
हम पर फिर क्या रोष महान्।
दरस दो०॥

गुप्त-रूपसे कब तक ऐसे,
छुपे रहोगे अविदिति रह कर।
आना ही होगा आखिरमें,
करने भक्तोंका उत्थान।
दरस दो०॥



सनातनधर्म

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय एम० ए०]



[प्रस्तुत लेखके लेखककी गणना आधुनिक भारतीय श्रेष्ठतम दार्शनिक विद्वानोंमें है। आपके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "आस्तिकवाद" का विद्वद्वर्गने पर्याप्त आदर किया और अ० भा० हि० सा० स० ने उक्त ग्रन्थके निमित्त पण्डितजीको मंगलाप्रसाद पारितोषिकसे पुरस्कृत कर अपना ही गौरव बढ़ाया है। "आस्तिकवाद" के अतिरिक्त आपके अन्यान्य ग्रन्थोंने भी प्रभूत ख्याति प्राप्त की है। आपके अमूल्य सद्विचारोंसे पाठक भविष्यमें निरन्तर लाभ उठाते रहेंगे। —सम्पादक]

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात् पुनर्णवः,
अहोरात्रे प्रजायेते अन्यो अन्यस्य रूपयो ::॥

यह अथर्ववेद का मन्त्र है। इसमें सनातनधर्म की व्याख्या इस प्रकार की है कि जो वस्तु पुरानी होते हुए आज भी नई जैसी दिखाई देती हो उसे 'सनातन' कहते हैं। इसके लिए वेदमें एक अच्छा दृष्टान्त दिया है। हम नित्य देखते हैं कि रातके पीछे दिन और दिनके पीछे रात होती है। यह प्रवाह अनन्त कालसे चला आ रहा है। एक दिन वैसा ही होता है जैसा कि दूसरा दिन और एक रात्रि वैसी ही होती है जैसे फिर दूसरी रात्रि। रात और दिनके रूपों में कोई भेद नहीं है। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह प्रवाह सनातन है। क्योंकि समयका परिवर्तन इनके रूपमें परिवर्तन नहीं कर सकता। इसीलिये सनातनको कालातीत भी कहते हैं। ईश्वर इसीलिए सनातन कहलाता है, यद्यपि वह पुरानेसे भी पुराना है तथापि वही नया से नया भी है। क्योंकि उसमें पुरानेपनकी जर्जरता नहीं है।

इसी प्रकार सनातनधर्म भी वह धर्म है जो पुराना होते हुये भी नया है, और नया होते हुए भी पुराना है। अर्थात् उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता और न हो सकता है। इसको स्पष्ट करनेके लिए एक दो उदाहरण आवश्यक हैं। दो कुर्सियां और दो कुर्सियां मिलकर चार कुर्सियां होती हैं, दो रोटियां और दो रोटियां मिलकर चार रोटियां होती हैं, दो घर तथा दो घर मिलकर चार घर होते हैं। यहां कुर्सियां, रोटियां और घर तीनों परिवर्तनशील हैं। इनमें प्रतिक्षण कुछ-न-कुछ परिवर्तन होता है। अतः इनको सनातन नहीं कह सकते। परन्तु दो और दो मिलकर चार होनेका नियम न तो कुर्सियोंकी परिवर्तन शीलता के अन्तर्गत है, न रोटियों अथवा घरों की। यह तो भूत और भविष्यत्से अतीत है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। इसलिए इस नियम को सनातन कहना चाहिये। हम किसी ऐसे देश या किसी ऐसे कालकी कल्पना नहीं कर सकते जबकि दो और दो चार न होते थे तथा न होंगे। हमारा विज्ञान उत्तरोत्तर उन्नति करता जा रहा है, नयेसे नये अन्वेषण सामने आ रहे हैं, परन्तु दो और दो अब भी चार होते हैं। इसमें उन्नतिका अवकाश ही नहीं इसी लिए यह 'सनातन' है।

एक और उदाहरण लीजिये। एक त्रिभुजके तीन कोणोंको लीजिए, उनका योग १८० अंश के बराबर होता है। त्रिभुज छोटे और बड़े हो सकते हैं, उन की आकृतियोंमें भेद हो सकता है, वे श्यामपट पर बनाये और बिगाड़े जा सकते हैं। इसलिये इस अंशमें कहा जा सकता है कि जिन त्रिभुजोंको हम नाप रहे हैं वह 'सनातन' नहीं हैं। परन्तु तीनों कोणोंका योग १८० अंशके बराबर है, यह नियम तो परिवर्तनशील नहीं है। क्योंकि यह सब त्रिभुजों में, चाहे वे भूतकाल में बने हों और चाहे भविष्यमें बनने वाले हों, समानरीत्या ओतप्रोत है। अतः हम

कह सकते हैं कि यह नियम सनातन है। यदि दश हजार वर्ष पहले कोई अध्यापक अपने शिष्योंको कहीं पढ़ाता होगा, तो यही पढ़ा सकता होगा।

इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्यका जो मुख्य धर्म है, वह मनुष्यकी परिस्थितियोंमें विभिन्नता होने पर भी एक ही रहता है। इसीको वेदादि शास्त्रोंमें सनातनधर्म कहा है। मनुष्यकी परिस्थितियां बदल सकती हैं और बदला करती हैं, परन्तु वस्तुतः यदि गम्भीरतासे विचार किया जाय तो इन विभिन्न परिस्थितियोंमें भी धर्मकी एकता और सनातनता स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाती है। मनु महाराजने धर्मके दश लक्षण कहे हैं। अर्थात्:—

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधः दशकं धर्मलक्षणम्॥

ये दशों लक्षण किसी युगविशेष या देश-विशेष से सीमित नहीं हैं। ऋतुओंका परिवर्तन इनको बदल नहीं सकता। शीतकाल या निदाघकालसे ये प्रभावित नहीं होते। पौर्वात्य या पाश्चात्य देशोंकी इन्हें अपेक्षा नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि मनुजीका बतलाया हुआ यह धर्म सनातन है। यह सतयुगमें भी वैसा ही माननीय था जैसा कि त्रेता या कलियुगमें और आगे आने वाले युगोंमें भी होगा।

इसी प्रकार पतञ्जलि मुनिके बताये हुये यम-नियम और संयम भी सनातन ही हैं।

बहुधा लोग नियम और परिस्थितिके भेदको नहीं जान सकते। अतः उनको धोखा हो जाता है और वे भिन्न २ देशों और युगोंमें भिन्न २ धर्मोंकी कल्पना कर बैठते हैं। इससे अर्थके स्थानमें अनर्थ हो जाता है और अनेक भ्रममूलक विचार जनतामें प्रचलित हो जाते हैं। इसका मुख्य कारण यही है कि तत्त्व और अतत्वमें भेद करनेकी शक्ति प्रत्येक पुरुषमें नहीं होती।

यह सत्य है कि मनुष्य निर्मित नियम भिन्न भिन्न देशों और भिन्न-भिन्न समयमें भिन्न भिन्न देखे जाते हैं। परन्तु वह त्रुटिपूर्ण होते हैं और मनुष्यका मिथ्या ज्ञान ही उनका आधार होता है। अज्ञान दूर होने पर उनकी विभिन्नता और परिवर्तनशीलताका दोष भली भांति प्रतीत हो जाता है कि ऐसे नियम मनुष्यका नेतृत्व नहीं कर सकते। इस लिये हमारा कल्याण इसीमें है कि हम सत्य सनातन-धर्मकी खोज करें और उसीका अवलम्बन करें।

अमूल्य उपदेश

हमारी स्वतन्त्रता अथवा परतन्त्रताका कारण हमारे विचार ही हैं, बाह्य पदार्थ नहीं। अपने विचारों ही के कारण हम बन्दी होते हैं और उन्हीं के कारण हम मोक्ष भी पाते हैं। यदि मैं यह कल्पना करने लगूं कि मेरे पासकी वस्तुएं और मनुष्य बहुत शक्तिशाली हैं—उनसे आगे बढ़ना मेरे लिए असम्भव है तो मैं उन्नति कर ही नहीं सकता। उसके विपरीत यदि मैं यह कल्पना करने लगूं कि मेरे विचार और लोगोंके विचारोंसे उत्तम हो सकते हैं, मेरा जीवन औरोंके जीवनसे श्रेष्ठ होगा, तो वही भावना मुझे उन्नति पथ पर ले जायेगी।

वैदिकधर्म ही सृष्टिका आदि धर्म है

इस्लामने भी लैलतिल्कद्रके नामसे शिवरात्रिको ही अपनाया है

[लेखक—श्री गणपतराव बा० गोरे]



[प्रस्तुत लेखमें जहां शिवरात्रिके महत्व पर उस दिनके कर्तव्य पूजा अर्चा आदिके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डाला गया है वहां साथ ही अकाट्य प्रमाणोंसे यह भी सिद्ध कर दिया गया है कि मुसलमानोंमें भी न केवल मकामें शिवलिंग की पूजा ही का प्रचार है प्रत्युत वे 'लैलतिल्कद्र' के नामसे शिवरात्रिकी महत्ता भी स्वीकार करते हैं और शिवरात्रि वस्तुतः ज्ञानप्रदायिनी रात्रि ही है। अतः यह लेख श्रद्धालु भक्तोंके लिए तो महत्वका है ही साथ ही विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन करने वालोंके लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। इस वर्ष शिवरात्रिका व्रत २ मार्च फा० कृ० १४ शनिवार को है। —सम्पादक]

पाश्चात्त्य साहित्यके पढ़नेसे पढ़े-लिखे पुरुष भी पथ भ्रष्ट होकर ऐसा ही मानते हैं कि, आर्यों तथा सेमेटिक जातियों-हिन्दुओं और यहूदी ईसाई तथा मुसलमानों में किसी भी प्रकारकी समानता नहीं ! अर्थात् ये दो जातियां (जिनमें संसारकी प्रायः सभी सभ्य जातियों का समावेश हो जाता है) विभिन्न वंश, धर्म तथा संस्कृतिको मानने वाली हैं ऐसा उनका मत है! परन्तु आर्यों तथा सेमेटिक जातियोंके धर्म ग्रन्थ इस विचार-सरणीका खण्डन करते हैं, शर्त ये कि उन्हें कोई अन्ध-विश्वास और धर्म-पक्षपातकी ऐनक उतार कर पढ़े।

१. लैलतिल्कद्र किस रात का नाम है ?

अल्लाह कुर्आन में कहते हैं 'वर्णन करने वाली अथवा प्रत्यक्ष ❀ पुस्तक की शपथ है कि, हमने एक शुभ रात्रि के समय उस [कुर्आन] को उतारा.... ॥ ४४।१।३ ॥

'शुभ रात्रि' शब्दों पर मराठी कुर्आनकी टिप्पणी-शुभ रात्रका अर्थ है शाबान महीनेकी १५ वीं रात्र जिस रात्रीको देवदूत पृथ्वी पर उतरते हैं, प्रार्थनाएं स्वीकारी जाती हैं, और पृथ्वी पर बखशीशें (Rewards) बरसाई जाती हैं। यही रात्रि शुभ है। अन्य सर्व सम्मत बात यह दीखती है कि, रमजान महीनेकी अन्तिम विषम रात्रियोंमेंसे [यह शुभ रात्र] एक है—बहुत करके २७ वीं रात। इस रातको अरबीमें 'लैलतिल्कद्र' अर्थात् महत्त्व की रात कहते हैं। भाष्यकारों ने इस जगह दो अर्थ लिखे हैं। एक यह कि उस रातको पहली वह्य अर्थात् प्रकटीकरण हुआ, और पश्चात् कुर्आन समय समय पर प्रकट होता रहा। दूसरा अर्थ यह कि उस रातको सारा कुर्आन निचले आकाश में देवदूतोंको प्रकट हुआ। फिर जितना जितना परमेश्वरको प्रकट करना होता था, उतना उतना अंशतः अंशतः आता रहा। पृ० ६४६ संस्करण १६१६।

❀यहां अल्लाह अपनी 'वर्णन करनेवाली अथवा प्रत्यक्ष पुस्तक, [अरबी= अल् किताब अल् मुबीनि] की शपथ खा कर कहते हैं कि, हमने कुर्आनको एक शुभ रात्रीमें उतारा। मुसलमान टीकाकारोंमेंसे किन्हीका मत है कि, अल्लाहने अरबी कुरानकी शपथ खाई है। दूसरे कहते हैं कि अल्लाहने लौहे महफ़ूजकी शपथ खाई है। हम दूसरे विचारसे सहमत हैं, क्योंकि अरबी कुर्आन न तो इस ४४ वीं सूरत तक पूरा उतरा ही है और न एक रात्रीमें सारे कुर्आनके उतारनेकी बात स्वयं मुसलमानोंको मान्य है!

यह शुभ रात्रि Blessed night (अरबी-लैलतिमुबारकतिं) कौनसी रात्र है, यह बात मुस्लिम विद्वानोंके लिए आज तक एक पहेली बनी हुई है ! आगे ६७ वीं सूरत * की समस्त ५ आयतों में कुर्आन इसकी विशेषताएं निम्न प्रकार वर्णन करता है—

मराठी कुर्आन का अर्थ [अल्लाह कहते हैं] हमने कुर्आन (के प्रथम प्रकटीकरण) को 'कद्र' के रात को उतारा ॥ १ ॥ ❀ और (हे पैगम्बर !) तूने क्या समझा है कि [लैलतिल्कद्र] 'कद्र' की रात का क्या अर्थ है ? ॥ २ ॥ 'कद्र' की रात (पुण्यप्रसादमें) हजार महीनों से भी उत्तम है ॥ ३ ॥ उस रात को (आगामी वर्ष के) प्रत्येक व्यवस्थाके लिए देवदूत तथा 'जिब्रील' * ये अपने पालनकर्त्ताकी आज्ञासे (पृथ्वी पर) उतरते हैं ॥ ४ ॥ वह (रात अभय व) शान्ति (की रात) है: (और) वह (अर्थात् उसका पुण्य व समृद्धि) अरुणोदय पर्यन्त (रहती) है ॥ ५ ॥

* इस ६७ वी सूरतका नाम है सूरतुल्कद्र = महत्व वा प्रतिष्ठाका अध्याय = The chapter of the Majesty or grandeur.

❀ मराठी कुर्आनकी टिप्पणीमें १ ली आयत का दूसरा अर्थ—"कुर्आन एकदम ही लौहे महफूज में से निचले आकाशमें उतरा और फिर वहांसे अंशतः अंशतः प्रकट होता रहा ॥"

* अरबी शब्द है अरूह – वह आत्मा – गीता ४ ७ का तदात्मानं – ईश्वरी प्रेरणा – इलहाम (इल्हाम) – वही (वह्य), –Divine Knowledge or inspiration. जिब्रील के अन्य नाम **रूहुलूकुदुस् रूहुलू अमीन** भी हैं। सेमेटिक जातियों में यह जिब्रील सदासे पैगम्बरों को ईश्वरीय ज्ञान पहुँचानेवाला दूत माना गया है–ठीक उसी प्रकार जैसे आर्य जाति सूर्य देवताको परमात्मा की ज्ञान तथा जीवन दातृ शक्ति समझती आयी है।

४ थी आयत का मौ० मुहम्मद अली कृत आंग्ल अर्थ—The angels and the inspiration (or spirit) decend in it by the permission of their Lord for every affair ॥ 4 ॥

यह आंग्ल अर्थ भी मराठी अर्थ का समर्थक है।

कुर्आन २५।८ में अल्लाहने कहा है कि, हम देवदूतोंको सत्यासत्यके निर्णय करनेके लिए (नित्य प्रति) भेजा करते हैं। आयत ४ पर पाद टिप्पणी सं० २७७६ में मौ० मुहम्मद अली लिखते हैं:—

देवदूतों तथा प्रेरणा (Inspiration) के उतरने में भी लैलुतिल्कद्रका एक गहरा अर्थ झलकता है। इस प्रकारकी यद्यपि रमजान महीनेकी एक विशेष रात ईश्वरीय आशीर्वादोंके कारण विशेषता पा गई, तथापि देवदूत तथा ईश्वरीय प्रेरणा उस रातको अधिक विशेषताके साथ इस लिये उतरा करते हैं, कि जिस (पैगम्बर) को अल्लाहने संसार के पुनरुद्धार (regeneration) के लिये नियत किया है, उसके पैगम्बरी (mission) में सहायक हों। पैगम्बरों के कामोंमें अल्लाह इसी प्रकार सहायक हुआ करते हैं।

आयत ५ पर पाद-टिप्पणी २७८० में आप लिखते हैं–

अर्थ—लैलतिल्कद्र की मुख्य विशेषता है शान्ति (peace) यह शान्ति मन की स्थिरता (tranquility) के रूप में सच्चे उपासकोंके हृदयोंमें उत्पन्न होती है। इसी कारण वे परमात्माके आशीर्वादोंको ग्रहण करने के योग्य बनते हैं....

इतने विवेचन के पश्चात् भी यह बात अबतक निश्चित नहीं हो सकी कि लैलतिल्कद्र रमजान महीने की कौनसी रातका नाम है। मौ० मुहम्मद अली १ली आयत पर पाद-टिप्पणी २७७७ में लिखते हैं उसके आवश्यक भागका अर्थ यह है कि लैलतिल्कद्र रमजान महीनेकी एक सुप्रसिद्ध (?) रात है जो २१वीं

या २३वीं या २५वीं या २७वीं या २९वीं रात उक्त महीनेकी है — अथवा अधिक सम्भवतः अन्तिम तीन रात्रियों मेंसे एक है। इसे ही ४४।३ में शुभ रात्री कहा गया है। कुर्आन २।१८५ से प्रतीत होता है कि, पवित्र कुर्आन रमजानके महीनेमें प्रकट हुआ था, तथा उक्त आयतोंसे दीखता है कि कुर्आनका प्रकटीकरण बड़ी वा महत्त्वकी रातको हुआ। प्रकटीकरणका अर्थ केवल प्रथम प्रकटीकरण ही है, कारण सारा कुर्आन तो तेईस वर्षों तक थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट होता रहा। शब्द 'कुर्आन' अंश अथवा पूर्ण दोनोंका वाचक है। .... निर्गमन २४:१८ के अनुसार प्रकटीकरणके ग्रहण करनेसे पूर्व ह० मूसीका चालीस दिनतक उपवास रखना तथा मति ४।२के अनुसार ह० ईसाका भी पैगम्बरी लेनेसे पूर्व चालीस दिनका लंघन करना दिखाता है कि, प्रकटीकरणका दान उपवास करनेसे मिला करता है। इसीलिए मुसलमानों को प्रतिवर्ष (रमजानके महीनेमें) तीस दिन तक रोजे (Fasts) * रखने पड़ते हैं और अन्तिम दिनोंके रोजोंके लिये उन्हें विशेष ईश्वरीय आशीर्वादोंका आश्वासन दिया गया है।

* कुर्आन २।१८३ में अल्लाह कहते हैं कि "हे मुसलमानों! जिस प्रकार तुमसे पूर्वके (ग्रन्थधारी) लोकोंके लिये उपवास करना कर्तव्य किया गया था, उसी प्रकार तुम्हारे लिए भी उपवास कर्तव्य बनाया गया है, इसलिये कि तुम (पापोंसे) सुरक्षित रहो।"

पूर्वके ग्रन्थधारी जातियोंमें आर्यों, पारसियों, यहूदियों तथा इसाइयों आदि जातियोंका समावेश होता है। परन्तु इनके उपवासों और मुसलमानोंके रोजोंमें बड़ा अन्तर है! पाप शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आदि कई प्रकारोंके होते हैं और इन सबसे मुसलमानोंको बचाना कुर्आनका उद्देश्य था। परन्तु हमारा विचार है कि कुर्आनके उद्देश पूरे नहीं हो रहे! क्यों? इसलिए कि मुसलमान दिन भर भूखे प्यासे रहकर, रात भर खाते पीते रहते हैं। यह तो भोजनका समय बदलना हुआ, लंघन करना कहां हुआ?

२. लैलतिल्कद्रके पर्याय तथा गुण—यहां तक इस शुभ रात्रिके हमें कुर्आनमें अंकित दो नाम प्राप्त हुए—१ ला लैलतिमुबारकतिं ४४।३ में जिसका अर्थ है बरकत दी हुई रात= Blessed night= ऐश्वर्य की रात्रि। २ रा नाम है लैलतिल्कद्र= इज्जत, महत्त्व वा प्रतिष्ठाकी रात। The night of honour Majesty.or grandeur. इसीको फारसी भाषामें शबे कद्र कहते हैं, क्यों कि अरबी लैल= फारसी शब= संस्कृत रात्रिके हैं। इसीका दूसरा नाम फारसी भाषामें शबे-बरात [शब्दार्थ रातका जलूस= night of procession] है। यह शबेबरातके नामका त्यौहार भारतीय मुस्लिम हर साल शअबान महीने की १५ वीं तारीखको मनाया करते हैं, रमजान महीनेमें नहीं! फारसी कोष जवाहिरुल्लुगातके अनुसार मुसलमानोंका विश्वास है कि इस रात्रिको अल्लाहकी ओरसे देवदूत उम्र और रोजी [आयु और अन्न life and bread] बांटा करते हैं। परन्तु कुर्आन के भाष्यकार यह रात रमजान महीनेमें ही है ऐसा मानते हैं। मराठी तथा आंग्ल भाष्यकारोंका मत ऊपर दिया है, अब उर्दू कुर्आनमें मौजहूअल् कुर्आन के लेखक ह० शाह अब्दुलकादिर साहेबका मत देखिये, जो कि उन्होंने ९७।५ की टिप्पणीमें प्रदर्शित किया है:—

"कदाचित् प्रथम इसी रातमें कुर्आन उतरना आरम्भ हुआ [और] फिर सदा [उतरता रहा], उसमें ये तीन गुण अल्लाहने रखे—

१. उस रातमें जो नेकी करे वह सहस्र मासोंकी नेकीके सदृश होगी।

२. संसारके सारे कार्य जो पहलेसे निश्चित [मुकर्रर] हैं, वे उस रातको नीचे उतरते हैं।

३. उस रातको अल्लाहकी ओरसे चैन [आराम = Ease वा अम्न = Trsnquility] तथा दिलजमई [ढारस वा धैर्य = Assurance; Satisfaction; Peace] नीचे उतरते रहते हैं।

यह सारी रात मीठी भक्तिमें [बीतती] है। वह रात कुर्आनके अनुसार रमजान महीनेमें है। हदीस के अनुसार रमजान महीनेकी पिछली विषम रातों २१ से २७ तकमेंसे कोई एक है। छिपी हुई बात है अल्लाह जाने।"

३. इस्लामी विश्वासका सारांश—इतनी उहापोहके बाद लैलतिल्कद्रके सम्बन्धमें निम्न ज्ञान प्राप्त हुआ:—

१. इस रातको पहलेसे निश्चित हुए कार्यों अर्थात् प्रारब्ध आदिका फल विशेषतासे मिलता है। नेकियोंका बदला सहस्र गुना हो कर मिलता है।

२. विशेषत: उस रातको उपवास करनेसे मनमें शान्ति और स्थिरता, हृदयमें धैर्य और विश्वास उत्पन्न होता है; शरीरको सामर्थ्य तथा आरोग्य और आत्माको ज्ञान विज्ञान तथा उत्तम बुद्धिकी प्राप्ति होती हैं। ह० मूसा ४० दिन उपवास करके पैगम्बर बने। ह० ईसाने भी इतना ही उपवास करके ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया। हजरत मुहम्मद पर इसी रातको पहिला प्रकटीकरण हुआ। अथवा इस रातको सारा कुर्आन लोहेमहफूजमेंसे निकल कर निचले आकाशमें उतरा और फिर वहांसे थोड़ा-थोड़ा करके २३ वर्षों तक देवदूत ह० मुहम्मद साहेब पर प्रकट करते रहे।

३. परन्तु इन सब बातों पर विश्वास करते हुए भी मुस्लिम विद्वान् इस बातको निश्चित नहीं कर पाए कि वह कौनसी रात है! कुर्आनके अनुसार वह रात रमजान महीनेकी ३० रातोंमेंसे कोई एक है। हदीसके अनुसार कोई २१ से २७ तक और कोई २१ से २९ तककी विषम रात्रियोंमेंसे एक रात समझता है। कोई २५, २७, २९ इन पिछली तीन रात्रियोंमेंसे कोई एक लैलतिल्कद्र है, ऐसा मानता है। और कई मुसलमान विद्वान् तो शअबान महीनेकी १५ वीं रातको ही लैलतिल्कद्र मानते हैं, और इसे ही शबेबरात वा शबेकद्र कह कर हर साल त्यौहार मनाया करते हैं।

४. रात अनिश्चित है, परन्तु विश्वास यह है कि वह रात है रमजान महीनेमें ही! यही कारण है कि मुसलमान सारा महीना भर दिनका उपवास रोजे रखते हैं, कि लैलतिल्कद्र कभी चूक न जाये। जिनका विश्वास है कि वह अन्तिम दस वा पांच रात्रियोंमेंसे एक है, वे केवल अन्तिम दस वा पांच रोजे ही रखते हैं।

लैलतिल्कद्रकी खोजमें यहां तक हमने केवल एक पक्ष अर्थात् मुसलमानोंके धर्म ग्रन्थोंसे ही कुछ वर्णन दिया है। अब आगे दूसरा पक्ष भी सुनिये।

४. पौराणिक महाशिवरात्रिका परिचय

महाशिवरात्रिकी उत्पत्ति—शंकर प्रसन्न होकर ब्रह्मा तथा विष्णुको कहते हैं:—हे पुत्रों! आज मैं इस [महा दिनमें] बड़े दिनमें तुम्हारी पूजासे बहुत ही सन्तुष्ट हुआ हूँ ॥८–९॥ इस कारणसे यह दिन अत्यन्त ही पवित्र होगा। यह शिवरात्रिके नामसे प्रसिद्ध होगा और यह तिथि मुझको अत्यन्त प्रिय होगी ॥ १० ॥ इस समयमें मेरे लिङ्ग और बेर❋ की जो कोई पूजा करेगा। वह मनुष्य जगत्के सम्पूर्ण कार्य, उत्पत्ति तथा स्थितिके करनेमें समर्थ हो सकता है * ॥ ११ ॥

महाशिवरात्रिका सार्थक नामकरण तथा तिथि—जिस तिथिका जो स्वामी हो, उसका उस तिथिमें अर्चन करना लाभदायक होता है। चतुर्दशीके स्वामी शिव हैं (अथवा शिवको तिथि चतुर्दशी है)। अत: उनकी रात्रिमें व्रत किये जानेसे इस व्रतका नाम शिवरात्रि होना सार्थक हो जाता है। यद्यपि प्रत्येक मासकी कृष्णचतुर्दशी शिवरात्रि होती है, किन्तु फाल्गुन कृष्णचतुर्दशीके निशीथ (अर्धरात्रि) में शिवलिङ्गतयोद्भूत: कोटि सूर्यसमप्रभ: ❋ के

❋ लिङ्ग = सूर्य। बेर = चन्द्र।

* शिवपुराण, विश्वेश्वर संहिता अ. ९.

❋ शिवपुराण, ईसानसंहिता।

अनुसार ज्योतिर्लिङ्गका प्रादुर्भाव हुआ था, इस कारण यहां महाशिवरात्रि मानी जाति है । *

शिवपूजाका संकल्प—शिवभक्त पूर्व वा उत्तरमुख हो कर यह संकल्प पढ़े—'ममाखिलपापक्षयपूर्वक सकलाभीष्टसिद्धये शिवपूजनं करिष्ये' अर्थात् मैं पूर्वकृत सब पापोंके नाश और सब मनोकामनाओंकी सिद्धिके लिए शिवकी पूजा करता हूँ ।

शिवपूजाकी प्रार्थना

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शंकर !
प्रसीद सुमुखो नाथ ! ज्ञानदृष्टिप्रदो भव ॥

अर्थ—हे शंकर ! मैं संसारिक दुःखोंकी लपटसे झुलस गया हूँ, अतः इस मेरे व्रतसे हे नाथ ! तू प्रसन्न मुखाकृतिवाला बन कर मुझको ज्ञानमय दृष्टि देनेवाला बन जा ।

महाशिवरात्रिका पावित्र्य तथा महात्म्य—सिद्धान्तरूपमें आजके सूर्योदयसे कलके सूर्योदय तक रहनेवाली चतुर्दशी शुद्धा और अन्य विद्धा मानी गई है ।※ उसमें भी प्रदोष (रात्रिका आरम्भ) और निशीथ (अर्ध-रात्रि) की चतुर्दशी ग्राह्य होती है । +

शिवरात्रिको शिव और उनकी शक्तियोंका भ्रमण

निशि भ्रमन्ति भूतानि शक्तयः शूलभृद्यतः ।
अतस्तस्यां चतुर्दश्यां सत्यां तत्पूजनं भवेत् ॥
(स्कन्द पुराण)

अर्थ [फाल्गुन कृष्णा १४ को] रात्रिके समय स्वयं शिवजी तथा उनकी भूत, प्रेत, पिशाच आदि शक्तियां भ्रमण करते हैं। अतः उस समय उनका पूजन करनेसे मनुष्यके पाप दूर हो जाते हैं* यदि यह (महाशिवरात्रि) त्रिस्पृशा (१३-१४-३० इन तीनोंके स्पर्श की) हो, तो अधिक उत्तम होती है※ यथा—

त्रयोदशी कला ह्येका मध्ये चैव चतुर्दशी ।
अन्ते चैव सिनीवाली 'त्रिस्पृशा' शिवमर्चयेत् ॥
(माधव)

महाशिवरात्रिका व्रत कौन करे ?— 'आचाण्डालमनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ' के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र, अछूत स्त्री, पुरुष, और बाल युवा वृद्ध ये सब इस व्रतको कर सकते हैं और प्रायः करते ही हैं ।

महा शिवरात्रिके व्रतका फल—"शिवरात्रिव्रत नाम सर्वपापप्रणाशनम्" अर्थात् शिवरात्रिके व्रतं करनेसे सब पापोंका नाश विशेष हो जाता है ।

दृष्टान्त- एक बार एक धनवान् मनुष्य कुसङ्गवश शिवरात्रि को पूजन करती हुई किसी स्त्रीका आभूषण

---

* इस्लामी साहित्यसे लैलतुल्कद्रकी तिथि निश्चित न हो सकी, परन्तु पुराणानुसार महाशिवरात्रिकी तिथि निश्चित ही फाल्गुन कृष्णपक्षकी चतुर्दशी है अर्थात् अमान्त माघ महीनेकी २६ वीं रात। रमजानकी २६ वीं रात पर मुसलमानों का भी शक है ।

※ इस बात का मिलान उपर्युक्त कुर्आन ६७।१ तथा फुटनोट २७८० से करो ।

+ सूर्योदयमारभ्य पुनः सूर्योदय पर्यन्ता 'शुद्धा' तदन्या 'विद्धा' सा प्रदोषनिशीथोभयव्यापिनी ग्राह्या ।
(तिथिनिर्णय)

*इसके साथ उपर्युक्त कुर्आन ६७।४ तथा पादटिप्पणी २७७६ को पढ़कर तुलना करो कि कुर्आन तथा पुराणके सिद्धांत में कितना साम्य है ।

※ इस पौराणिक त्रिस्पृशा (तीन छूने वाली) महाशिवरात्रिके अभिप्रायका कुर्आनके भाष्यकारोंके कथन से तुलना कीजिए । ६७।१ के भाष्यमें लिख दिया कि लैलतुल्कद्र रमजानकी २५ वीं, २७ वीं, वा २६ वीं इन तीन रातोंमेंसे एक है ! देखो ६७।१ पर टीप २७७७ । इसके विपरीत पुराण निःसंशय कहता है कि माघ की २६ वीं रात, (जो भूतकालीन २८ वीं तथा भविष्यकालीन ३० वीं के बीचमें होनेके कारण दोनोंको छूनेवाली हो] वही अत्युत्तम है । रमजान भी कभी २६ कभी ३० दिनोंका होता है । अतः इस पौराणिक सिद्धान्तके अनुसार जब-जब रमजान ३० दिनोंका हो, तब-तब २६ वीं रात उत्तम लैलतिल्कद्र है ।।

चुरा लेनेके अपराधमें मार डाला गया। किन्तु चोरीके लिए वह आठ प्रहर भूखा प्यासा और जागता था, इस कारण स्वतः व्रत हो जानेसे शिवजीने उसको सद्गति दी।

स्वेच्छासे न किये हुये कर्मोंका फल मिला करता है वा नहीं ? इस विवादास्पद प्रश्नको जाने दीजिये। पुराणका अभिप्राय केवल महाशिवरात्रिका पावित्र्य और महात्म्य बतानेका है। पूर्वकृत कर्मोंका फल किसी शुभ समयमें अनायास मिल जानेसे उस समयका महत्व बढ़ जाता है। परन्तु महाशिवरात्रि को उपवास तथा जागरण करनेसे ऐसे फल अधिकता से मिला करते हैं, ऐसा हिंदुओंका विश्वास है, जैसा कि अगली कथाओंमें भी आयेगा। इसी प्रकार मुसलमान भी मानते हैं कि "लेलतुल् कद्रकी रात १००० महीनोंसे बेहतर है। उसमें की हुई नेकियां हजार गुणा होकर मिलती हैं" इत्यादि।

महाशिवरात्रिमें ज्ञान प्राप्ति

दृष्टान्त पहला:—किसी वनमें 'गुरुद्रुह' नामक भील रहता था, जो चोरी करके अथवा मृगोंको मार कर जीवन व्यतीत करता था। परन्तु एक महाशिवरात्रिको सारा दिन मृग न मिलनेके कारण उसके माता पिता स्त्री और बच्चे भूखे रहे। कुछ लेकर ही घर जाना चाहिए, ऐसा सोच कर वह एक तालाबके किनारे बिल्व वृक्ष पर छिप कर बैठ गया कि रात्रिको कोई मृग जलपान करनेको आयेगा तो उसे मार ले जाऊंगा। इतनेमें हरिणी आई। भीलने तीर कमान संभाला। इनकी रगड़से कुछ बिल्वके पत्ते शिवलिङ्ग पर (जो वृक्षके नीचे ही था) जा पड़े, अतः शिवकी पहले पहरकी पूजा अनायास हो गई, जिससे भील का पातक भी कुछ नष्ट हो गया। शब्द सुन हरिणीने पूछा, 'आप क्या करना चाहते हैं ?' भीलने कहा, 'सारा परिवार भूखा है, तुझे मार ले जाऊंगा !' हरिणीने कहा, 'बड़े सौभाग्यकी बात है कि मेरा शरीर परोपकारमें लगता है, परन्तु आप मुझे छुट्टी दें कि मैं अपने बच्चोंको अपनी बहिनके पास छोड़ आऊं।' हरिणीके लौट आनेकी शपथ खानेपर भील ने उसे छुट्टी दे दी। वह पानी पीकर चली गई। पश्चात् उस हरिणीकी बहिन उसको ढूंढती हुई आई। भीलने तीर चढ़ाया, फिर शिवकी दूसरे पहर की पूजा स्वाभाविक रीत्या हो गई। मृगीसे वही प्रश्नोत्तर हुए। मृगीने अपने बच्चे पतिको सौंप आने की छुट्टी चाही। उसे भी छुट्टी मिली। वह पानी पी कर चली गई। इतनेमें मृग उन तीनोंको ढूंढता हुआ वहीं आ निकला। भीलने बाण चढ़ाया। बिल्व पत्ते गिरे और तीसरे प्रहरकी पूजा हुई। वही वार्तालाप हुआ। मृगने बच्चोंको माता पिताके पास छोड़ आनेकी शपथ खाई। उसे भी छुट्टी मिली और वह पानी पी कर चला गया।

जब मृगियां और मृग अपने घर मिले तो तीनों ने बच्चोंको पड़ोसियोंको सौंपा। परन्तु बालकोंने सोचा जो दशा इनकी होगी वह हमारी भी होगी और ऐसा सोच कर माता पिताके पीछे वे भी चल पड़े।

अन्तमें प्रतिज्ञानुसार सब मिल कर आये। भील ने बाण चढ़ाया। पत्ते गिरे और शिवकी चौथे पहर की पूजा अनजाने ही हो गई। भीलका जागरण और व्रत तो स्वाभाविक ही हो गया था। अतः अब भील के सब पाप नष्ट हो चुके थे।

तब वे मृगियां और मृग भीलसे बोले कि 'हे व्याधसत्तम ! तुम हमारे शरीरको सार्थक करो।' ऐसा उनका वचन सुन कर वह भील विस्मित हो शिव पूजनके प्रभावसे दुर्लभ ज्ञानको प्राप्त हुआ (और सोचने लगा कि) यह परस्पर मिले हुए ज्ञान रहित मृग धन्य हैं जो अपने शरीरसे परोपकार करनेमें तत्पर हैं। मनुष्य जन्म पाकर मैंने क्या फल पाया, जो दूसरोंके शरीरको पीड़ा देकर अपना शरीर पाला, मेरे जीवनको धिक्कार है ! बाण उतार कर भील मृगों से बोला 'हे मृगश्रेष्ठों ! तुम धन्य हो ! जाओ अपने स्थानको ! शिवजी प्रकट होकर कहते हैं—'वर मांग !'

व्याध ज्ञानप्राप्तिके कारण पहले ही मुक्त हो चुका था। अतः वह शिवजीके चरणोंमें गिर पड़ा और उसने कहा 'महाराज! मैंने सब कुछ प्राप्त कर लिया! ❀

इस कथामें भी बाण चढ़ाते हुए पत्तोंके गिरने से ही शिव पूजाका फल प्राप्त हुआ। भीलने स्वेच्छा से शिव पूजन नहीं किया था। तो भी उसे महाशिव-रात्रिको उपवास और जागरण करनेके कारण सत्य ज्ञानकी प्राप्ति हुई !! उपर्युक्त दोनों कथाओंसे ऐसा सिद्ध होता है कि महाशिव-रात्रिको जागरण तथा उपवास करना ही फलदायक है—अतः सारा महात्म्य दिनके साथ रात्रिको भी उपवास तथा जागरण करने का है! इस्लामी साहित्यमें भी लैलतिल्कद्र अर्थात् महत्त्वके रातकी ही महिमा है, दिनकी नहीं! परन्तु रातोंको तो वे खाते पीते रहते हैं। केवल दिन भर ही उपवास करते हैं।

अब एक ऐतिहासिक घटना भी पढ़िए।

दृष्टान्त दूसरा

जब मूलजी (ऋषि दयानन्दका बचपनका नाम) की अवस्था १३ वर्षकी थी तो उनके पिताने उन्हें शिवरात्रिका व्रत करनेका आदेश किया।....अतः उस शिवरात्रिको ही अच्छा अवसर पा कर मूलजीको बुला कर कहा कि तुम आज उपवास रखना, शिवालयमें जाकर रात्रिमें जागरण करना क्योंकि आज तुम्हें पवित्र शैवधर्मकी दीक्षा लेनी होगी। ....जिस समय मूलजी की दूसरे पहरकी पूजा समाप्त हो चुकी तब उन्होंने देखा कि मंदिरके पुजारी और मंदिर में आये हुये गृहस्थ व्रतधारी सभी मंदिरके बाहर जाकर सो रहे हैं, यहां तक कि उनके पिता भी निद्रा के वशीभूत हो गये। परन्तु मूलजी सो न सके, क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि व्रतधारीके लिए शिव रात्रिमें सोना बहुत ही निन्दनीय है और निद्राके कारण व्रत भंग करना महापाप है।

❀ यह कथा शिव पुराण, कोटि-रुद्र-संहिता के अध्याय ४० में लिखी है।

(आगे स्वयं ऋषि दयानन्दका वर्णन पढ़िये—लेखक)

"जब मैं मंदिरमें इस प्रकार अकेला जाग रहा था, तो....कई चूहे बाहर निकल कर महादेवकी पिण्डीके ऊपर दौड़ने लगे और....महादेव पर जो चावल चढ़ाये गये थे उन्हें भक्षण करने लगे। देखते देखते मेरे मनमें आया कि यह क्या है ? जिस महादेवकी शान्त पवित्र मूर्तिकी कथा, जिस महादेवके प्रचण्ड पाशुपतास्त्रकी कथा और जिस महादेवके विशाल वृषारोहणकी कथा गत दिवस व्रतके वृत्तान्तमें सुनी थी क्या वह महादेव यही है ?....मैंने सोचा कि यदि यथार्थमें यह वही प्रबल प्रतापी, दुर्दान्त-दैत्य-दलन-कारी महादेव हैं तो यह अपने शरीर परसे इन थोड़े से चूहोंको क्यों विताड़ित नहीं कर सकता ?' ....मूल जीने अपने सोते हुए पिताको जगाया और उनसे प्रश्न किया। उन्होंने...पुत्रको उत्तर तो दिया, परंतु मूलजीका संशयान्दोलित चित्त उससे शान्त नहीं हुआ। ....प्रतिमूर्तिसे संतुष्ट न होनेपर उन्होंने प्रकृत के देखनेका सङ्कल्प कर लिया, कि जब तक त्रिशूलधारी यथार्थ महादेवको न देखूंगा, तब तक किसी प्रकार भी उसकी पूजा न करूंगा। *

शिवरात्रिके महात्म्यकी यह तीसरी कथा है; इस से भी यही सिद्ध होता है कि मूलशंकर के हृदय में ज्ञानके प्रकाशका कारण शिवरात्रिका उपवास और जागरण ही था। शिवपूजन छूटा परन्तु शिवरात्रिको आर्यसमाजी भी छोड़ न सके! नाम बदल दिया पर रात्रि वही रही !! अब 'शिवरात्रि' की रातको 'ऋषि-बोध-रात्रि' कहकर आर्यसमाजी ऋषिबोध उत्सव मनाया करते हैं !!! इतना शिवरात्रि का महत्व है।

Call the rose by any other name and it will smell as sweet. (shakespeare)

'वैदिकधर्म'

* म. द. स. जी. चरित्र पृ० १७२-

होलिकादहन या सत्याग्रहकी विजय

[लेखक—श्री पं० मुरारीलाल जी शास्त्री कौशिकाचार्य महामहोपदेशक]



"जो दृढ़ राखे धर्मको तेहि राखे करतार।"

आज से पौने दो अर्ब वर्ष पूर्व इस भूमण्डल पर हिरण्यकशिपु राज्य करता था, उसकी राजधानी जहां आज कल मुलतान है वहीं पर थी। वह इतना उद्दण्डी एवं आत्माभिमानी था कि अपने समक्ष किसीकी सत्ता नहीं समझता था। उसमें अपरिमित बल तथा साहस था। उसने चौदह भुवन के देव, दानव, मनुष्य, गन्धर्व अपने आधीन कर समस्त राज्य भर में "न होतव्यं न दातव्यं" की डुगडुगी पिटवा दी थी। इस बात की प्रबल घोषणा करा दी थी कि जो कुछ भी यज्ञ हवन हों वह मेरे लिए ही हों, इस आज्ञाका प्रतिवाद करने वाला जीता हुआ ही जला दिया जायगा। इस प्रकारकी अन्यायपूर्ण घोषणासे समस्त प्रजामें हा! हा! कार मच गया, देवता तथा ब्राह्मण घबराने लगे। लोगोंके हृदय इतने निर्बल हो गये थे कि हिरण्यकशिपुके विरुद्ध आवाज उठानेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी, यदि कोई स्वतन्त्रताका राग अलापता भी था तो उसे प्रलापी पापी कहकर सीधा स्वर्गका मार्ग दिखा दिया जाता था। धर्मको अधर्मने और न्यायको अन्यायने पूर्णतया अपने आधीन कर "नाकों चने चबाने" वाली कहावत-चरितार्थ कर दिखाई थी। रामका नाम लेवा तथा दान देवाओंको रहनेके लिए कहीं ठौर ठिकाना नहीं था। हिरण्यकशिपुके छोटे पुत्र श्री प्रह्लाद जी उन दिनों बहुत छोटे थे, किन्तु फिर भी ईश्वरेच्छासे इस सात आठ वर्षकी अवस्थामें आपमें असीम ज्ञानराशिका भण्डार भरा हुआ था, दयालु भी परले सीमाके थे, इसीसे गीतामें "प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानाम्" कहा है। एक दिन अपने समवयस्क बच्चोंके साथ खेलते समय उपरोक्त धर्म विरुद्ध आज्ञाको सुना और प्रत्यक्षावलोकन कर अनुभव किया कि इससे समस्त प्रजा अत्यन्त दुखी है। भगवद्भजन करने और सत्य धर्मके पालन करनेमें भी 'आर्डिनेन्स' जारी किये गये हैं। आपका रोम २ विकल हो उठा। आपने देखा कि जहां ऋषियोंके हवनका धुआं नजर पड़ा या स्वाहा, स्वधा का शब्द सुनाई दिया कि तुरन्त वहीं राक्षस पहुँच कर यज्ञ विध्वंस कर देते हैं। ऋषियोंको बुरी तरह से मार पीट द्वारा घायल कर घसीटते हैं। प्रह्लादसे यह सहन नहीं हुआ। आपने मन हीं मन प्रतिज्ञा की कि शरीरको बलि वेदी पर चढ़ा कर भी यदि प्रजाजनोंको स्वतन्त्र बनाना पड़ेगा तो वह भी करूंगा।

आज पिताकी आज्ञा है प्रह्लाद कुमारको पाठशालामें पढ़नेके लिये भेज दिया जाय। आप इस आज्ञासे अत्यन्त सन्तुष्ट हुए, कारण आपने अपने भावोंको समवयस्क बालकों पर प्रकट करना ही अत्यन्त हितकर उपयुक्त समझा, क्योंकि वयोवृद्ध और नवयुवकगण कुछ तो खुदगर्जी और कुछ राज-भक्त? रायसाहब और रायबहादुरीके छिन जानेके भयसे मेरे इस सत्याग्रह आन्दोलनमें सम्मिलित नहीं होंगे और 'छोटे मुंह बड़ी बात' कहावतके अनुकूल मेरी बात पर विश्वास भी नहीं करेंगे। हां, बहुल्य संख्यक ऐसे (साधु महात्मादि) जन भी हैं जो मेरी रायके अनुसार बोलने पर तैयार हैं किन्तु वे श्री पिता (हिरण्यकशिपु) से डरते हैं, उनके घर बार पहले ही जब्त हो चुके हैं तथा स्वार्थी कर्मचारियों द्वारा अकारण नित्य सताये जाते हैं। नये लगान, टैक्सों, एवं हैसियत् करोंसे दिनों दिन पब्लिकके हौसले पस्त होते जाते हैं। अतः वे मेरी

सम्मतिके अनुकूल मेरे सत्याग्रहमें भाग तो ले सकेंगे किन्तु ऐसा करने पर उनको बड़ी आपत्तियोंका शिकार बनना पड़ेगा। किन्तु बच्चे सर्वथा इस भयसे निर्भय हैं, उन्हें किसीका डर व भय नहीं। अतः उन्हींको अपना सन्देश सुनाकर अपनी पार्टी बनानी चाहिए—'समुदायो हि अर्थवान्' के अनुसार आपने गुरुकी अनुपस्थितिके समय पाठशालाके विद्यार्थियोंको अपना मन्त्रोपदेश देकर बताया कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है तथा ईश्वरका भजन व कीर्तन करनेमें हम सर्वथा स्वतन्त्र हैं। उसी परमात्मा ने इस ब्रह्माण्डको रचकर स्वर्ग नरकादिकी नियमानुकूल व्यवस्था की है। अतः हे बालकों! रामनामका भजन करो और स्वतन्त्रताके लिए प्रयत्न करो।'

जब प्रह्लादका जादू चल गया, तब आपने बतलाया कि देखो यह मेरी आवाज एक सातद्वीपके बड़े भारी सत्ताधारी महाराजाधिराजके प्रतिकूल है और इसके अनुसार चलने पर बड़ी २ आपत्तियोंका सामना भी करना पड़ेगा। किन्तु आप लोग घबराना नहीं, मैं तुम सबसे पहिले सत्याग्रह करूंगा। फांसीके तख्ते पर भी मैं नहीं घबराने का, केवल तुम अप्रकट रूपसे मेरे सत्याग्रहको प्रबल बनाते रहना।

एक दिन प्रेमसे पिताने प्रह्लादको गोदीमें बिठलाकर पूछा 'बेटा! तूने गुरुके पास रहकर आजतक क्या पढ़ा है? और तुम्हें किस चीजसे प्रेम है; इसके उत्तरमें कुमार प्रह्लादने कहा:—

'तत्साधुमन्येऽसुरवर्य देहिनां,
सदासमुद्विग्नधियामसद्ग्रहात्।
हित्वात्मपातं गृहमन्धकूपं,
वनं गतो यद्धरिमाश्रयेत्॥

अर्थात्—'हे असुरपति! मिथ्या संसारके प्रति मोहके कारण चंचल चित्त जीवोंके लिये मैं यही अच्छा समझता हूं कि आत्माको हीन करने वाले अन्धकूपके सदृश संसारको छोड़कर वनमें जाकर भगवान् विष्णुकी शरण लेवे।' प्रह्लादके मुखसे अपने शत्रुके नामको सुनकर हिरण्यकशिपु आग बबूला हो गया, अग्निमें घृत पड़नेका जो प्रभाव होता है वही इस समय प्रह्लादके शब्दोंका हुआ। प्रह्लादको मारनेके लिये हिरण्यकशिपुने यहां तक शिरतोड़ प्रयत्न किया कि—पर्वतोंसे गिराया, पत्थर बांध समुद्रमें डुबाया, नागोंसे डसाया। एक दिन अवसर पाकर ढूंढ़ा नामकी राक्षसी आकर कहने लगी कि "भाई! मुझे ब्रह्माकी आज्ञा है कि मैं अग्निमें नहीं जल सकती अतः अपनी गोदीमें लेकर प्रह्लाद सहित मैं बैठ जाती हूँ आप आग लगा दें" उसकी सम्मतिसे वैसा ही किया गया, किन्तु—

"जाको राखे साइयां मार न सके कोय।
बाल न बांका कर सके जो जग बैरी होय॥"

इस कहावतानुकूल सर्वान्तर्यामीकी असीम कृपा से प्रह्लाद तो जीवित बच गया किन्तु दूसरेका बुरा चाहने वाली राक्षसी जलबलकर भस्म हो गई। अन्तमें गर्ज कर राजाने कहा "अब मैं तुझे अपने हाथसे ही मौतके घाट पहुंचाता हूँ। बता तेरा परमात्मा कहां है? या तो अपने सत्याग्रहको त्याग दे या अपने परमात्माको दिखा दे, कहो तेरा प्रभु इस स्तम्भमें भी है या नहीं?" प्रह्लादने प्रेमसे नम्र होकर स्तम्भके सामने मस्तक झुकाते हुए कहा कि मेरा "राम" तो इसमें भी बैठा है और वह प्रेमसे दोनों हाथ बढ़ाकर मुझे बुला रहा है, किन्तु दुःख है कि पिताजी वह आपको नहीं दीखते। राजाने कहा 'बेटा मैं तुझे मारने से पूर्व फिर समझाता हूं कि इस सत्याग्रहके लिये नाहक अपने प्राणोंको न खो, आ मैं तुझे गले लगा लूं तू मेरी आज्ञाका पालन कर।' इसपर वीर बालकने कहा 'परवाह नहीं, मरना स्वीकार है किन्तु मैं भगवान् का नाम लेना नहीं त्याग सकता।'

इस प्रकार उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा देखकर हिरण्यकशिपु गदाका प्रहार करनेके लिये स्तम्भ पर झपटा और मारना ही चाहता था कि झट स्तम्भ बीचमेंसे फट गया और उसमेंसे एक अलौकिक भीम काय

स्वरूप प्रकट हुआ जिसका आधा शरीर मनुष्यका और आधा सिंहका था, उसके दिव्य अट्टहाससे समस्त सभामें सन्नाटा छा गया, इतने पर भी हिरण्यकशिपु उनकी ओर मारनेको ही तैयार था कि इतनेमें ही जैसे चिड़िया पर बाज झपटता है वैसे ही झपटकर हिरण्यकशिपुको पछाड़कर मृत्युका ग्रास बना दिया। प्रह्लादको अभय प्रदान कर स्वतन्त्र बना गये। इसी को वेदने कहा है:—

प्रतद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीम कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमेणष्वधि क्षियंति भुवनानि विश्वाः॥

ऋ० १।११।१५४।

अर्थात् - नृसिंह रूपधारी भगवान् निज तेजसे स्तुतिको प्राप्त होते हैं। जो वराह रूपसे पृथ्वी और पर्वतोंमें विचरण करते हैं और त्रिपाद द्वारा समस्त विश्वको कम्पित करते हैं। इसी मन्त्रकी पुष्टिमें नृसिंह-तापिन्युपनिषद्में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। तैत्ति-रीयारण्यकमें लिखा है—

'वज्र नखराय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि तन्नो नारसिंह प्रचोदयात्'॥ (१।१।३१)

इत्यादि मन्त्रोंमें प्रह्लादके सत्याग्रहके परिणाम स्वरूप भगवान् नृसिंहका प्रकट होना डंकेकी चोटसे बतलाया गया है। हिरण्यकशिपु प्रजा द्रोही था, प्रजाके रक्तको चूसकर मक्कारी दगाबाजी व फरेब और धोखेसे परमेश्वरके नामके स्थान पर स्वयं ईश्वर बन बैठा था, अतः उसका विनष्ट करना ही ठीक था और वैसा ही किया गया। यह होलिकाका त्यौहार प्रति वर्ष आता है और चला जाता है, किन्तु ऐसे बहुत थोड़े मनुष्य होंगे जो इसकी वास्तविकता पर ध्यान देते हों। मेरे प्रिय भारत निवासियों! इस त्यौहारसे यह शिक्षा लेनी चाहिये कि जब-जब भी देशको न्याय विरुद्ध चलने वाले शासकोंने अपने चंगुलमें डालकर अवनतिके गर्त्तमें पहुंचानेका प्रयत्न किया है तभी-तभी नवयुवकों तथा वयोवृद्धोंकी तो बात ही क्या अपितु छोटे-छोटे बालकोंने अपने सत्याग्रह द्वारा उनके शासनकी कुलिश सम कठिन एवं पुष्ट परतन्त्रताकी बेड़ियोंको तोड़कर देशको पूर्ण स्वतन्त्रता दिलानेके लिये अपने समस्त सुखोंको ठुकरा कर हंसते हंसते देशके लिये बलिवेदी पर अपने प्राणोंकी आहुति देकर कर्तव्यका पालन किया है, जिसके उदाहरण स्वरूप वीर बालक प्रह्लाद, हकीकत और गुरु गोविन्दसिंहके वीर बालक हैं। देशके धनी-मानी, ज्ञानी-ध्यानी सभीको उक्त बालकों से पाठ सीखना चाहिये। खाक तो बहुत उड़ चुकी अब हमारे पास रह ही क्या गया है। देश भूखा और नङ्गा हो गया, किसान भूखे मरते हैं, देशकी क्या दशा है। आंखें खोलो और इस लेखके शीर्षक के शब्दार्थ पर ध्यान दो जो कुछ होनी थी सो तो होली पराधीन तो हो गये, कंगालीने अपना भारतको घर बना लिया, घर-घर खाक उड़ रही है, द्रव्य सुवर्णादिसे देश दिनोंदिन खाली हो रहा है। कौंसिलोंमें धर्मकी नियम परिधिको तोड़नेके लिये शिर तोड़ प्रयत्न हो रहे हैं, अभी तक सनातनधर्मी हिन्दुओंकी आंखें नहीं खुली, कोई सुसङ्गठित सनातन हिन्दू सभा नहीं, सब अपनी २ ढपली अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। जब तक कोई सुसङ्गठित सना-तन हिन्दू सोसाइटी न होगी तब तक कोई सुख व लाभ नहीं होगा। इस पर लिखा है कि जो कुछ थी सो तो होली किन्तु होलिकादहन तभी होगा जब कि धर्म पर कट मरने वाले धर्मवीर सनातनधर्मकी रक्षार्थ सत्याग्रहका व्रत धारण करेंगे। यही सब कुछ उपदेश इस होलिका-दहन त्यौहारसे लेना चाहिये।

ये आंखें क्या कहती हैं ?

[लेखक—श्री पं० ईशनारायण जी जोशी शास्त्री]

(गताङ्कसे आगे)



अङ्ग लक्षण शास्त्रके आचार्योंने आजसे कई हजार वर्ष पूर्व जो खोजें की वे भी विचारणीय हैं। आंखोंको लेकर उसके रंग, आकार, परस्पर दूरी तथा निकटता, छोटा बड़ापन, पशु पक्षियोंकी आंखोंसे समानता, दृष्टि विक्षेपका ढंग आदि बातोंसे व्यक्तिके स्वभाव, सुख दुख, ज्ञान अज्ञान, पुण्यात्मा पापात्मा होना, सुस्त या तेज तर्रार होना, धनी निर्धन होना, सदाचारी दुराचारी होना, दीर्घायु अल्पायु होना आदि आदि अनेक बातें बताई हैं। वे खोजें यद्यपि बहुत पुरानी हैं फिर भी उनको बहुत सी बातें मिलती हैं। बहुत सी बातें इस ढंगसे लिखी गई हैं कि अब उनका समझना कठिन है, कष्ट साध्य है, पर असाध्य नहीं, उदाहरणके रूपमें कुछ बातें लीजियेः—

(१) मेंढक तथा कौवेकेसे नेत्र वाला पुरुष नीच प्रकृतिका होता है।

(२) बिल्लीके नयनके सदृश नयन वाला पुरुष पापी होता है।

इसी प्रकार स्त्रियोंके नेत्रोंके विषयमें भीः—

(१) कबूतरके नेत्रके सदृश नेत्र वाली स्त्री दुःशीला होती है।

(२) मार्जार तथा मेंढेके नेत्रके सदृश नेत्र वाली अल्पायु होती है।

(३) हाथी, भैंसके नेत्रोंके समान नेत्र शुभ नहीं हैं।

(४) हरिणी तथा मोरके नेत्रके सदृश नेत्र शुभ हैं। मंगलदायक हैं। काव्यमें स्त्रीके नयनोंकी उपमा हरिणीके नयनोंसे अधिक दी जाती है।

प्रश्न किया जा सकता है कि ऐसा क्यों है ? इसका उत्तर यह है कि जिसमें रूप, गुण और शील समान हों, उसी वस्तुके साथ चाहे वह पशु हो, पक्षी हो या पुरुष हो उपमा दी जाती है। हरिणी या कहिये मृगके नयन सुन्दर, कानोंकी ओर फैले हुए अर्थात् बड़े, श्वेत, श्याम, रतनार रंगोंसे शोभित और भोली (सर्वप्रिय) चितवन तथा स्वाभाविक मंद चंचलतासे युक्त होते हैं। इधर किसी स्त्रीके नयनोंमें भी ये ही गुण विद्यमान हों तो फिर उसके सौन्दर्यकी कल्पना कीजिए—कर लीजिए—इसी लिए सुन्दर नेत्रवाली स्त्रीको हरिणाक्षी, मृगाक्षी कहते हैं। इसी प्रकार ऊपर कही हुई बातोंका अर्थ लगाया जा सकता है। यदि आपको उचित जंचे तो जरा कबूतर, बिल्ली, हाथी, भैंसके नयनोंके आकार, गुण रंग आदिको किसी स्त्रीकी आंखोंसे मिलाइये। अथवा मेंढक, कबूतर, बिलाव, नेवला, मोरकी आंखोंको किसी पुरुषकी आंखोंसे मिलाइये और जिसकी आंखोंसे मिल जांय फिर उसमें सामुद्रिक शास्त्रोक्त गुण अवगुणको मिलाइये और अच्छा यह होगा कि आप इन जानवरोंके फोटो भी रखिये जिससे आंखोंकी सही शक्ल आपके सामने हो और आप उनके 'कट्स' को भी अच्छी प्रकार देख समझ सकें। जब हम उस समय की कल्पना करते हैं जब ये शोधें की गई थीं तो आश्चर्य होता है। किसी बातको समझनेके लिए प्राकृतिक साधनसे अच्छे और सदा रहने वाले साधन क्या हो सकते हैं ? यदि चित्र भी रखे जाते तो आज तक वे कैसे सुरक्षित रहते, अतः अपनी खोजको टिकाऊ बनानेके लिए जो प्राकृतिक साधन अपनाये गये वह प्रशंसनीय हैं। हमें चाहिए कि अब हम आधुनिक वैज्ञानिक साधनोंसे उनको युगके अनुकूल, हमारी आवश्यकताके योग्य बना लें।

वह साहित्य संस्कृत अमर-भारतीमें है और

अन्य संस्कृत-साहित्यकी भांति पद्यमय हैं, एवं उसमें पद्यके गुणों दुर्गुणोंका होना, उपमादि अलंङ्कारोंका होना स्वाभाविक ही है अतः उसको उचित रीतिसे समझा जाय।

जिस प्रकार पशु पक्षियोंकी आंखोंसे आंखोंको मिलाया है उसी प्रकार पुष्पोंसे भीः—

(१) नील कमलके सदृश नेत्र वाला पुरुष विद्वान् होता है।

(२) स्त्रीके कमलसदृश नेत्र शुभ हैं, मंगलदायक हैं।

पुष्पोंमें नील कमल (इन्दीवर) और अलसीके पुष्पोंको ही लिया है। वैसे पुष्प बड़े आकर्षक, सर्वप्रिय और आल्हादकर होते ही हैं। कवियोंने भी कमलसे आंखोंकी उपमा दी है। कमलसे आंखोंकी उपमामें कमलके 'कट' को विशेषता दी गई है, ऐसा समझमें आता है। प्रारम्भके (गताङ्कमें) दिये हुए कवित्तोंमें आंखोंका उपमान 'कमल' को आप देख ही चुके हैं। एक श्लोक यहां और देखियेः—

यदि स्यान्मण्डलेसक्तमिन्दोरिन्दीवरद्वयम् ।
तदोपमीयते तस्या वदनं चारु लोचनम् ॥

यदि चन्द्रके बिम्ब (मण्डल) में दो कमल और लगा दिये जांय तो उस सुन्दरी ललनाके सुन्दर नयनोंसे संयुक्त मुखचन्द्रकी उपमा चन्द्र हो सकता है अन्यथा नहीं।

हां, तो मेरे कहनेका मतलब यह था कि कमलका 'कट' भी एक खास चीज है। किसी कमलाक्षीके आंखके चित्रको नाकसे मिले हुए भागको नीचे करके खड़ा कीजिये और एक बन्द खड़े हुए कमलसे उसको मिलाइये यदि वह 'कमल कट' है तो बिलकुल मिल जायगा। अलसी पुष्पकी रंगमें आंखोंसे तुलना की गई है।

अब देखिये आंखोंके वर्ण (रंग) को। आंखों का रंग आंखोंकी परीक्षाका एक विशेष अङ्ग है।

१ नीले रंग की आंख हों तो सुशील, सुखसौभाग्ययुक्त और बुद्धिमान् पुरुष होता है। पाश्चात्य देशों में तो नीली आंखों वाले व्यक्तिको असाधारण सुन्दर माना जाता है और स्त्रीकी आंखें हो तो क्या कहना है। भारतवर्षमें ऐसी आंखोंके धनी क्वचित् ही मिलते होंगे।

२ श्याम नेत्रवाला व्यक्ति प्रेमी स्वभाव व सरल चित्तका होता है।

३ नीले तथा पीले नेत्र हों तो व्यक्ति स्वार्थप्रिय तथा अधीर प्रकृतिका होता है।

४ नीले तथा लाल नेत्र हों तो प्रेमी स्वभावका व्यक्ति होगा।

५ पीले नेत्रवाला व्यक्ति धैर्यवान् नहीं होता।

६ भूरी आंखों वाला व्यक्ति कवि तथा कारीगर होता है। ऐसी आंखें योग्यताकी सूचक होती हैं।

७ आंखोंके दोनों बाजूके कोण ताम्रके सदृश लाल रंगके हों तो वह व्यक्ति लक्ष्मीवान् होता है।

८ श्वेत नेत्रवाला व्यक्ति बुद्धिमान् तथा पटु होता है। ऐसे व्यक्तिको चतुर कहिये।

९ आंखें लाल रंगकी हों तो कामातुरता प्रकट करती हैं।

१० काली हों तो (श्वेत पटल काला हो) आचार हीनता तथा दाम्पत्य सुखका अभाव व वैधव्य का होना प्रकट करती हैं।

११ पीतवर्णकी आंखोंवाली स्त्री व्यभिचारिणी होती है अथवा स्वेच्छा चारिणी होतीहै। मनुने ऐसी स्त्रीसे विवाह करना मना किया है। देखिये मनुस्मृति अध्याय ३ श्लोक ८ "नाललोमिकां नातिलोमां न वाचाटां न पिङ्गलाम् ।" जिसकी देह पर रोम न हों [बेबाल] व अधिक रोम हों, बहुत बकवादिन और पीले नेत्र वाली कन्यासे विवाह न करे। यदि किसी रोगके कारण पीले हों तो उसपर विचार नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार रोगके कारण कोई रंग आंखोंमें आगया हो तो उससे उपर्युक्त लक्षण नहीं मिलाना चाहिये। बल्कि गताङ्कमें हमने जो विभिन्न रोगोंमें आंखोंकी

परीक्षा लिखी हैं उसके अनुसार विचार तथा व्यवहार करना चाहिये।

आंखोंकी परीक्षामें आंखोंकी परस्पर दूरी [लड़ाने के लिये नहीं] के विषयमें भी ऐसे विचार हैं—

१ जिस पुरुषकी आंखें एक दूसरेसे (एकही पुरुष की दोनों आंखें) अधिक दूर हों वह पक्षपातहीन स्वभावका तथा सत्यवक्ता होता हैं, उसका हृदय साफ और स्वभाव सरल होता है। अत्यधिक दूर होना अच्छा नहीं है ऐसा होना व्यक्ति में मूर्खता और अज्ञानता प्रकट करता है। वैसे 'अति' सब स्थानों पर वर्जित है ही, सो वैसा ही यहां भी जानिये।

२ आंखोंका एक दूसरेसे अधिक निकट होना ठीक नहीं है। ऐसा व्यक्ति बदमाश तथा धोखेबाज होता है। दो विद्यार्थियोंमें यह बात देखी गई, उन्हें चाकू छुरे पर बजारमें लड़ते देखा गया।

आंखोंका आकार भी अनेक रहस्य खोलता हैं, इस लिये आकार पर ध्यान देना परीक्षाके समय परमावश्यक है।

१ विस्तीर्ण तथा स्वच्छ आंखोंवाला व्यक्ति फुर्तीला सौन्दर्यप्रिय अर्थवान् तथा विद्वान् होता है अतः बुद्धिमान् भी। यह बातें पशुओंमें भी देखनेमें आती हैं। बड़ी आंखों वाले पशु बड़े फुर्तीले होते हैं; जैसे सिंह, हाथीसे जिसकी आंखें छोटी होती हैं अधिक फुर्तीला और तेजवान् होता है। इसी तरह खरगोश गिलहरी, बिल्ली फुर्तीले होते हैं। आंखके आकार पर फुर्ती निर्भर है। जिस प्रकार शरीरसे वे फुर्तीले होते हैं उसी प्रकार मस्तिष्क से भी। पाश्चात्य देशों में बड़ी आंखके विषय में ऐसी मान्यता है कि बड़ी आध्यात्मिक आंख होती हैं। कहींभी ऐसा नहीं माना जाता कि छोटी आंख आध्यात्मिक आंख हैं।

२ छोटी आंख वाला अनुत्साही तथा सुस्त होता है। यह बात मनुष्योंके समान पशुओंमें भी देखी जाती है कि छोटी आंख वाले पशु उतने चुस्त और फुर्तीले नहीं होते जितने बड़ी आंख वाले हाथी सुअर, गेंडा। अधिकतर बड़े २ पशुओंकी आंखें छोटी होती हैं जो अपने भारी शरीरके कारण सुस्त होते हैं।

(३) बड़ी और आगे को कुछ उभरी हुई आंखों वाला व्यक्ति वीर्यवान्, शक्तिशाली, ओजस्वी और तेजस्वी होता है (महाराणा प्रतापका चित्र देखिए)

(४) एक आंख छोटी तथा एक बड़ी हो तो व्यक्ति दुःख भोगी होगा। उसके जीवनमें सुख की अपेक्षा दुःख अधिक रहेगा।

दृष्टि विक्षेप पर भी कुछ बातें निर्भर हैं:—

(१) सीधा देखने वाला सीधे मनका सरल स्वभावका होता है।

(२) ऊपरको देखने वाला पुण्यात्मा होता है। वैसे वृद्ध लोग ऊपर देखकर चलनेको मना करते हैं, संभवतः इसलिए कि सड़क पर ऊपर देखकर चलनेसे नजर छज्जे पर जाती है अथवा यह कि ऊपर देखकर चलनेसे घमंडी होना व्यक्त होता है। यदि आप अच्छे योगियोंके चित्र देखें तो उनकी आँखें कुछ ऊपरको देखती हुई सी देखेंगे। संभवतः इसलिए कि वे अनन्त आकाशमें किसी को खोजती रहती हैं। और ऐसी ही वे प्रतीत होती हैं।

(३) नीचे को देखने वाला व्यक्ति पापात्मा होता है। एक सफल अध्यापक जब विद्यर्थियोंसे कोई बात पूछने वाला होता है तो वह सब विद्यार्थियों पर एक बार दृष्टि डाल कर यह जान लेता हैं कि किसे याद है और किसे नहीं। जिस विद्यार्थीको याद नहीं होता वह नीचेकी तरफ देखता रहता है, अध्यापकके सामने नहीं देखता, इस भयसे कि कहीं मुझसे पूछ न लें और चतुर अध्यापक इसी बातसे उसको ताड़ जाता है।

(४) भयभीत तथा दीन दृष्टि वाला द्रव्यहीन तथा दुर्बलात्मा होता है। उससे कोई साहसका कार्य नहीं हो सकता, इसलिए जीवनमें उसे कोई

बड़ी सफलता नहीं मिलती और न वह धन ही एकत्रित कर पाता है।

(५) जो व्यक्ति बात करते समय और हंसते समय अपनी आंखोंको बन्द कर लेता है वह बगुला भक्त और दूसरोंकी निन्दा करने वाला होता है, उसकी इच्छा प्रतिष्ठा प्राप्त करनेकी रहती है परन्तु वह लोगोंको धोखा देनेके कारण अपनी बगुला भक्तिके कारण लोगों द्वारा जान लिये जाने पर अधिक सफल नहीं हो पाता, परन्तु उसकी प्रतिष्ठा और धन प्राप्त करनेकी सतत अभिलाषा और उत्कट इच्छा उसे कुछ बना देती हैं। वह स्वयं दूसरोंके धोखेमें नहीं फंसता, यही क्या कम है। मैंने चार व्यक्ति ऐसे देखे हैं।

(६) अन्धा तथा काणा व्यक्ति दुष्ट प्रकृति होता है। अन्धेके विषयमें किसीका कहना है कि अन्धों-को भले ही दिखलाई न दे पर वे सूक्ष्मदर्शी होते हैं। बहुधा अन्धे व्यक्ति गायन वादन आदि कला में चतुर और तत्त्वज्ञ पाए जाते हैं। गुजराती भाषा की एक कहावत है:—"आंधड़ों हिकमती ने कानड़ो किफायती।" झाड़शाही भाषामें भी एक कहावत है जिसका भावार्थ ऐसा है कि "सवासौ व्यक्तियोंमें एकाक्षीके बराबर बुद्धिमान् और चतुर एक ही होता है। एक वृद्ध और अनुभवीका कहना था कि ऐसे व्यक्ति लोक व्यवहारमें बड़े चतुर होते हैं। सामुद्रिक विशारदोंका यह भी कहना है कि अन्धेकी अपेक्षा काणा और काणेकी अपेक्षा दृष्टि फेरने वाला (कैरा) अधिक दुष्ट होता है। चतुरतामें भी हम उसे इनसे अधिक चतुर कह सकते हैं। झाड़शाही कहावतके अनुसार ऐसा व्यक्ति लाखोंमें एक ही निकलता है। स्त्रीके विषयमें अस्थिर बुद्धि होना बताया गया है जो अच्छी बात नहीं है, आप स्वयं सोच सकते हैं।

ये बातें हमने सामुद्रिक शास्त्रके अनुसार लिखी हैं, इसलिये इसमें किसीको बुरा नहीं मानना चाहिये और यदि किन्हीं सज्जन या सज्जना को ये बातें बुरी लगी हों या इनके पढ़नेसे उन्हें दुःख हो, लेखक पर क्रोध आवे, तो उनसे हम करबद्ध क्षमाके प्रार्थी हैं।

भारतीय भैषज्यविज्ञानके चमत्कार

[लेखक—एक अनुभवी वैद्य]

दमेकी अद्भुत चिकित्सा

"सिग्रेटके दो कश लगाइये और दमाका दौरा दूर"

यदि किसीको दमाका दौरा पड़ा हुआ हो और किसी प्रकारसे भी ठीक न होता हो तो निम्न लिखित औषधिका प्रयोग कर देखिये। हाथ पर सरसों जमा देने वाली बात है। दमाका दौरा दो चार मिनटमें ही ठीक हो जायगा।

भांग सूखी, कलमी शोरा और धतूरेके सूखे पत्ते, सबको बराबर बराबर लेकर कूट कर रख लें। जब कभी आवश्यकता हो दो तीन चुटकी लेकर चिलममें रखकर तम्बाकूकी भांति पिलायें, या सिगरेट बनाकर या चुरुटमें रखकर पिलायें, प्रयोजन केवल इतना ही है कि इसका धुआं रोगीके अन्दर पहुँच जाना चाहिये। फिर आप स्वयं देख लेंगे कि धुएंके बादलोंके साथ दमाका दौरा भी कपूर बनकर उड़ जाता है। जब दौरा ठीक हो जाय उसका इलाज किसी योग्य वैद्यसे पर्याप्त समय तक करवाना चाहिये।

'सांपका काटा सोये और बिच्छूका काटा रोये'

चिलमके कश लगाओ और बिच्छूका विष दूर—

यदि किसीको बिच्छू काट जाये तो नीमका ताजा छिलका ४ माशे लेकर और मोरका पंख मरोड़ कर चिलममें रखकर तम्बाकूकी भांति खूब दबाकर कश लगाइये, एक, दो, तीन, चार...... सात, आठ, नौ दश कश लगाते ही धुएंके साथ बिच्छूका विष भी धुआं होकर उड़ जायगा।

अन्य औषधि

जमालगोटेकी गिरि निकालकर उसको सिलबट्टे पर दो चार छींटे पानीके डालकर भलीभांति रगड़ लीजिये और उस स्थान पर लगाइये जहां बिच्छूने काटा हो, तीन चार मिनटमें आराम आ जायगा।

दाल खाने वालोंके लिए

जिन लोगोंको चने या माष (उड़द) की दाल खानेसे पेटमें दर्द या वायु हो जाता हो उनको चाहिये कि वह "हालों" का प्रयोग किया करें। अत्यन्त उपयोगी वस्तु है। कोई दाल या सब्जी जो पचती न हो पकाते समय उसमें हालोंके पत्ते कुतर कर डाल दीजिये, कभी कोई खराबी न होगी।

चाय

पश्चिमकी देन और भारतका दुर्भाग्य।

चायकी हानियां—बच्चे और स्त्रियोंको विशेषतया हानि पहुंचाती है। देर तक प्रयोग करते रहनेसे दृष्टिको निर्बल करती है। खूनी अर्श (बवासीर) के लिए अत्यन्त हानिकारक है। रक्तको शुष्क और जिगर को खराब करती है। मेदाको निर्बलकर भूखको बन्द करती है। मधुमेह और स्वप्नदोष उत्पन्न करती है। हड्डियोंको खारती है। स्वास्थ्यके लिये घिनका कार्य करता है।

अब आपकी सेवामें एक ऐसी चाय भेंट करता हूँ जिसके प्रयोगसे कोई हानि नहीं बल्कि लाभ ही लाभ है। इसका रंग, सुगन्धी और स्वाद बिल्कुल चाय जैसा ही होता है, वह है—

गोरखपान

गोरखपानकी पत्ती और फूल लेकर उसको पानी में खूब उबालो, जब दो तीन जोश आ जायें तो उसमें दूध मिला दो और मजेसे चीनी मिलाकर पीजिये। सरदीकी ऋतुमें यदि थोड़ीसा दालचीनी, लौंग, जायफल और बड़ी इलायची भी मिला ली जाये तो अधिक

स्वादिष्ट हो जाती है, परन्तु गरमीमें यह मसाला न मिलाया जाय तो अच्छा है; केवल गोरखपानकी ही चाय बनाई जाय।

लाभ—गोरखपानकी चाय दृष्टिको तीव्र करती है, खूनी और बादी बवासीरके लिए लाभदायक है। ताजा रक्त पैदा करती है। जिगरको शक्ति देती हैं। रक्तको शुद्ध करती है। मेदाको बलवान् बनाकर भूख लगाती है। प्रमेह और स्वप्नदोषकी शरतिया औषधि है। हृदय और मस्तिष्कको बलवान् बनाती है। मूत्र की जलन और सुजाककी शरतिया दवाई है। स्वास्थ्य को ठीक कर आयुको दीर्घ करती है।

ऊपर लिखी हुई अद्भुत औषधियां सम्पादक महोदयके अनुरोध पर आपकी भेंट की गई हैं, अन्यथा कौन अपने सीनेके राज बताता है। औषधियें अत्यन्त लाभदायक हैं, इनको सस्ता समझ कर न छोड़ दिया जाय।

हेमन्तऋतु और शक्ति-संचय

[लेखक—वैद्यभूषण श्री पं० कन्हैयालाल राधारमण जी शास्त्री]



निर्बल, बलहीन, निस्तेज, निर्वीर्य, क्षीणांग और रोगी मनुष्योंको हृष्ट पुष्ट अतिबलवान् कांतिवान् रोगमुक्त तथा स्वस्थता प्रदान कर शरीर रूपी बगीचे को हरा भरा बनाने वाली हेमन्त ऋतुके समान अन्य ऋतु नहीं हो सकती। इस ऋतुमें ही बलवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, पाक व रस सेवन करने वाले वर्षभर तक स्वस्थ रहते हैं। रसायन वाजीकरण औषधि सेवनका सर्वोत्तम समय यही है। इसलिए 'श्रीस्वाध्याय' के पाठकोंकी सेवामें मैं अपने सहस्रशोऽनुभूत कुछ उत्तम पौष्टिक-प्रयोग भेंट करता हूँ, इनके सेवन मात्रसे प्रमेह, स्वप्नप्रमेह, नपुंसकता, निर्बलता नष्ट हो कर वीर्य पुष्ट होते हुए शरीर हृष्ट पुष्ट और कान्तिमान बनता है। स्तम्भन शक्तिको बढ़ाता और पौष्टिक होते हुए भी कब्जी व भारीपन नहीं करता किन्तु दस्त साफ लाता है और भोजनको शीघ्र पचाकर भूख व रुचिको बढ़ा देता है। आशा है आप इन अनुभूत प्रयोगों द्वारा अवश्य लाभ उठावेंगे।

वीर्यवर्द्धक पौष्टिक चूर्ण

शतावर, मुलेठी, गोखरू, सफेद मूसली, स्याह मूसली, असगंध, विदारीकंद, तालमखाने, नागबला, विधारा, लज्जावन्तीके बीज, जायफल, जंगीहरड़, छोटी इलायची, ये सब समान भाग और सबके समान मिश्री ले लो।

विधि—उपरोक्त औषधियां कूट पीस कपड़छान कर लो और मिश्री मिला डिब्बेमें भर लो। मात्रा—३ माशेसे ६ माशे तक प्रातः सायं दोनों समय एक पाव खांड मिले गोदुग्धके साथ लो।

मदनमस्त गुटिका

पिस्ते, विदारीकंद, अजमोद, सेमलकी मूसली, सालममिश्री, सफेदमूसली, बलबीज, असगंध, कौंचके बीजकी गिरी, अकलकरा, बंसलोचन, तज, दालचीनी, इलायची, नागरमोथा, लौंग, समुद्रशोख, भनिया, जावित्री, जायफल, सफेदजीरा, स्याहजीरा, अजवायन, तालमखाने, गोखरू दक्षिणी, सिंघाड़े, जुफाहरड़, कंकोल, खस, सब १ एक तोला लेवें और मोचरस ७ तोला लेवें।

विधि— सबको पीस कपड़छन चूर्ण बना— इसमें शर्करा १६ तोला, घृत ५ तोला, शहद ६ तोला मिला— १ एक तोलेकी गोली बना ऊपर चांदीके वर्क चढ़ा लो।

सेवन विधि—प्रातः काल एक ही समय १ गोली अधउटे हुए मीठे दूधसे सेवन करें २५ दिन तक।

कामविलास गुटिका

केसर, दालचीनी, जायफल, रूमीमस्तगी, गोंद बबूल, आवरेशाम कतरा हुआ, बहमनसफेद, मुलहट्टी का सत्त, प्रत्येक ३॥ माशे, मायसतराअरबी ५। माशे, कस्तूरी १। माशे, अम्बर १॥ माशे, बादामकी गिरी छिली हुई, काहुके बीज छिले हुए, खसखास सफेदके बीज, कोदोंके बीजोंकी गिरि, कुलंजिन, प्रत्येक ७-७ माशे, शुद्ध अफीम १ माशा।

विधि—सबको कूट छान बादामके तैलमें घोटो, बद-खसखासको पानीमें घोट उस पानीसे फिर घोट कर—मूंग समान गोली बना चांदीके वर्क चढ़ा लो।

महापौष्टिक-पाक

दालचीनी, शकाकुलमिश्री, कुलिन्जन, कबाबचीनी, बूजीदाना, दोनों तरहकी बहमन, इन्द्रजो, छोटी और बड़ी इलायचीके बीज, बालछड़, रामतुलसी, लौंग, रूमीमस्तगी, तेजपात, सब ६ नौ माशे, सालममिश्री ३ तोला, अगरूहालांके बीज ६ माशे, भांग शुद्ध ४ तोला, बदामकी मींगी, पिस्ता, चिलगोजा, अखरोटकी मीगी सब १० दस तोला, उत्तम बंग भस्म ६ माशा, चांदीके वर्क ३ माशा, मिश्री १। सेर। विधि—मिश्री चांदीके वर्क और मेवोंको छोड़ सबको कूट चूर्ण कर लो। मेवाको अधकचरा कूट अलग रख लो, मिश्रीकी चासनी बना कूटी हुई औषधि मिला दो बाद मेवा व भस्म डाल सबको मिला पाक जमा ऊपर चांदीकी वर्क लगा दो।

सेवनविधि—१ तोले से २ तोले तक प्रातः दुग्ध के साथ सेवन करो।

व्यापार व्यवसाय पर ग्रहोंके प्रभावकी समीक्षा

[लेखक—श्री प्रो० बी० सी० मेहता कमर्शियल एडवाइजर]



'श्रीस्वाध्याय'के गत दो अङ्कों में मैंने श्री मनुभाई पी. शुक्लके लेख व्यापारिक ज्योतिष पर पढ़े, मुझे वास्तवमें वे रुचिकर लगे। गत शरदङ्कमें उन्होंने ग्रहोंका व्यापार व्यवसाय पर प्रभाव शीर्षक लेखमें अपने उन्नत विचार उपस्थित किये हैं। मुझे अपने परम मित्र श्रीमनुभाई शुक्ला जीकी विद्वत्तामें किसी प्रकार की शङ्का नहीं है। हां, सिद्धान्तोंमें मत भेद होना एक दूसरी वस्तु है, उन्होंने जा सिद्धान्त इस विषयमें उपस्थित किये उसमें मेरा पूर्णतया मतभेद है और मैं तो उन सिद्धान्तोंका बिल्कुल असंगत और अनावश्यक समझता हूँ। तथा मैं सम्पादकजीको भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने पाठकोंके सामने मुझे अपने विचार प्रकट करनेका अवसर दिया। श्रीशुक्लाजीने अपने लेखमें एक जिज्ञासु सज्जनके प्रश्नका उत्तर देते हुए यह बतलाया कि चन्द्रमंगल योग किसी खास नक्षत्र की राशीमें होने पर ही मनुष्य लक्षाधीश बन सकता है और इसके सपाटमें उन्होंने फलके विचारसे दो प्रकार का तर्क उपस्थित किया। पहला राशिमान और दूसरा नक्षत्रमानसे फल बतानेकी पद्धति बताई। आगे जाकर उन्होंने पाराशर मतानुसार ग्रह और नक्षत्रोंके स्वामी आदि बतलाकर ग्रहोंके तीन भेद कर लिये और उनको सात्विक तामसिक और राजसिक गुणानुभेदसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि योगायोग एकसे गुणप्रधान ग्रहोंका सम्बन्ध होनेसे ही बनता हैं। फिर उसके आगे एक मेष लग्नकी कुण्डली उपस्थितकर अपना मत प्रतिपादन करनेके लिये चन्द्र और मंगलका नक्षत्रमानसे योग निष्फल बतलाया।

अब प्रश्न यह उठता है कि वास्तवमें यह बात ठीक है या गलत ? उक्त सिद्धान्त माननीय हैं या नहीं ? इसके पहले कि मैं इस सिद्धान्तकी आलोचना करूं एक बातका ध्यान पाठकोंको दिलाना चाहता हूँ कि जिस प्रकार ग्रहोंका नक्षत्र सम्बन्ध उन्होंने बताया वह केवल महात्मा पाराशरके दशापद्धतिकी देन है। अर्थात् जिस मनुष्यका कृत्तिका उत्तराफाल्गुनी और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें जन्म होता है उसको सूर्यकी दशा सबसे पहले लगती है और इसी प्रकार तीन तीन नक्षत्र (नौ नौके अन्तरसे) का स्वामी एक ग्रह होता है और इनमें से जिस नक्षत्रमें मनुष्य जन्मता है उसी नक्षत्रके स्वामी ग्रहकी दशाको आदि लेकर मनुष्यकी जीवन पर्यन्तकी दशा निकाल ली जाती है।

जिन महात्मा पाराशरकी ये देन है उन्हीं महात्मा पाराशरके ग्रहयोगों पर भी कुछ अत्यन्त बहुमूल्य सिद्धान्त भी है और उन सिद्धान्तोंकी जानकारी किये बिना संसारका कोई मनुष्य ज्योतिष विद्यामें सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। आज भारतवर्षमें तो महात्मा पाराशरका ही सर्वत्र सम्मान है और प्रत्येक ज्योतिषी उन्हींके बताये हुए योगायोग व पद्धतिसे अपना कार्य करता है, यह बात अवश्य है कि इनकी पद्धति इतनी कठिन है कि प्रत्येक मनुष्य उनके सिद्धान्तोंको पूर्णरूपसे नहीं समझ सकता, यद्यपि पाराशरजीने अपने सिद्धान्तोंका सारभूत केवल ४२ श्लोकोंमें ही "गागरमें सागर" समान एकत्रित कर दिया है; किन्तु उस वस्तुको समझना बढ़ी टेढ़ी खीर है। कुछ भी हो, यहां पर मैं उन बातोंका विशेष विवेचन न करते हुए प्रस्तुत विषयपर आता हूँ कि जिस प्रकार उन्होंने प्रत्येक ग्रहको तीन २ नक्षत्र बांटेहैं उसी प्रकार उन्होंने ग्रहोंके आपसमें चार प्रकारके सम्बन्ध भी बान्धे हैं।

उसमें प्रथम सम्बन्ध है:—स्थान सम्बन्ध, दूसरा है सहवास सम्बन्ध, तीसरा है एकधा दृष्टि सम्बन्ध

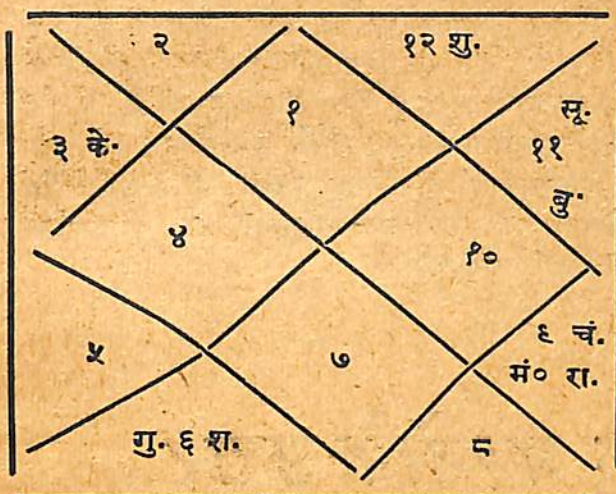
और चौथा है सम्पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध। इन चारोंमें सबसे बलवान् चौथा सम्बन्ध अर्थात् १८० अंशका सम्बन्ध माना है। अर्थात् एक ग्रह दूसरे ग्रहसे सप्तम स्थानमें बैठकर उस ग्रहको देखें। अब यदि हम शुक्ला साहबके सिद्धान्तके अनुसार नक्षत्रमान और राशिमानके आधार पर योगायोग लगावें तो हमारा यह सम्पूर्ण दृष्टिसम्बन्ध कहीं नहीं ठहरता, क्योंकि प्रत्येक राशिसे सप्तम राशि शत्रु ग्रहकी राशि होती है। जैसे कर्कसे सप्तम मकर और सिंहसे सप्तम कुम्भ इत्यादि और इनके स्वामी भी एक दूसरेसे अलग गुण प्रधानके होंगे। कर्क राशि जिस गुण प्रधानकी होगी उससे ठीक उल्टे गुण प्रधानकी राशि उससे सातवीं होगी और इस विचारसे सप्तम दृष्टिके योगायोग निश्चित विफल चले जायेंगे।

पाराशर मतानुसार केन्द्र त्रिकोणके स्वामियोंका परस्परका सम्बन्ध ही राजयोग और धनयोगका द्योतक है। अब यदि मेष लग्नमें किसीका जन्म हो और सूर्य चन्द्रमाका कहीं भी दृष्टिसम्बन्ध हो तो उक्त शुक्ल जीके मतानुसार राजयोग निष्फल जायगा, किन्तु यह बात किसी भी सिद्धान्तसे सिद्ध नहीं होता सब आचार्य इस बातकी पुष्टि करते हैं कि सप्तम सम्बन्ध केन्द्र त्रिकोणेशका प्रबल राजयोग कारक है और अनुभवमें भी यहीं आता है, अतः शुक्ला साहबकी थ्योरी यहां बिल्कुल फैल हो जाती है।

अब रही मेष लग्नमें चन्द्र स्वगृही और मङ्गल उच्चका होने पर भी चन्द्रमङ्गल योग लक्ष्मीका दाता क्यों नहीं हुआ? इसके लिये मैं केवल इतना कह देना पर्याप्त समझता हूँ कि चन्द्र मङ्गल लक्ष्मी योग बनाता अवश्य है, किन्तु प्रत्येक कुण्डलीमें नहीं।

क्योंकि योगायोगमें पाराशर तथा अन्य आचार्योंने ग्रहोंको विशेष मान नहीं दिया है। बल्कि भावों और भावोंके स्वामियोंको दिया है। और सब ही ग्रहोंका शुभत्व व अशुभत्व प्रत्येक कुण्डलीमें अलग २ है। एक कुण्डलीमें शनि अत्यन्त क्रूर व मारक ग्रह होता है तो दूसरे लग्नकी कुण्डलीमें शनि अत्यन्त कारक शुभ ग्रह भी सिद्ध होता है। जिस प्रकार वृष औ तुला लग्नमें शनि अत्यन्त योग कारक व शुभ फलदाता ग्रह होता है तो धन और कर्क लग्नमें अत्यन्त क्रूर व दोषी, क्योंकि वृष व तुला लग्नोंमें शनिको केन्द्र त्रिकोणका स्वामित्व मिलता है, अतः अत्यन्त शुभ है तथा धनुः और कर्क लग्नमें मारक स्थानोंका स्वामित्व मिलता है इसलिए यहां अत्यन्त अशुभ हो जाता है। अब जब कभी दो अशुभ ग्रह सम्बन्ध करेंगे तो अच्छा फल कैसे दे सकते हैं।

बस इसी आधार पर आप मेष लग्नकी कुण्डलीमें उस चन्द्र मंगलके योगको समझ सकते हैं। इस लग्नमें चन्द्रमा चतुर्थेश हैं, इसलिए अत्यन्त दोष पूर्ण हैं (शुभ ग्रह होनेके कारण) और उसने जो मंगल ग्रहसे सम्बन्ध किया तो उस मंगलमें भी अष्टमेशका पूर्ण दोष है, अतः मेष लग्नमें चन्द्र-मंगल-योग कभी लक्ष्मी पति नहीं बना सकता, चाहे वह कर्क और मकर राशिमें हो और चाहे किसी भी अन्य राशिमें यह बात निश्चित है। हां यदि आपने किसी ऐसे व्यक्तिको देखा हो कि जिसके किसी शुभ स्थितिमें मेष लग्न होते हुए भी चन्द्र-मंगल-योग बना हो और वह लक्ष्मीपति हो तो आपको यह निश्चय समझ लेना चाहिये कि उस कुण्डलीमें चन्द्र मंगलके अतिरिक्त अन्य भी कोई योग बना है, जिससे वह लक्ष्मीपति बन गया है, चन्द्र मंगलके कारणसे नहीं। और इसका प्रमाण आपको थोड़ेसे ध्यानसे उस कुण्डलीको देखनेसे मिल जायगा। कुछ वर्षों पहले मुझे भी एक सज्जनने मेरी इस तर्कका खण्डन करते हुए मेष लग्नकी एक ऐसे मनुष्यकी जन्मकुण्डली बताई जो एक बहुत बड़ी स्टेटके दीवान थे और जिसमें चन्द्र-मंगल एकत्र थे। वह कुण्डलीमें विज्ञ पाठकोंके अवलोकनार्थ यहां उपस्थित करता हूँ।



इस कुण्डलीमें चन्द्र-मंगलके साथ राहु है, लघुपाराशरीके १४ वें श्लोकके अनुसार यहां चन्द्र-मंगलके साथ राहुका बैठना ही प्रबल राजयोग कारक बन गया। क्योंकि राहुको भाग्येश होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और चतुर्थेशके साथ भाग्येशका अर्थात् चतुर्थेश और नवमेशका केन्द्र त्रिकोणाधिप सम्बन्ध प्रबल राजयोगका द्योतक हुआ। इसके अतिरिक्त नवम और दशभावके स्वामी शनि और बृहस्पति इकट्ठे हुए और धनेश शुक्र उच्च राशि स्थित होकर इन दोनोंसे सम्पूर्ण दृष्टि सम्बन्ध करते हैं अतः जब उक्त महाशयको राहुकी दशा प्रारम्भ हुई उस समय ही राज्यकी दीवानी मिली, चन्द्र और मङ्गल की दशामें साधारण स्थान पर रहे। इससे यह सिद्ध हुआ कि मेष लग्नमें केवल चन्द्रमा मङ्गलसे लक्ष्मी योग नहीं बन सकता।

इसके बाद शुक्ला साहबने इन्हीं तीनों गुणोंकी पद्धतिका व्यापार ज्योतिष पर भी अच्छा प्रभाव बताया और उदाहरण स्वरूप पाश्चात्योंका अच्छेसे अच्छा त्रिकोणयोग विफल सिद्ध करना चाहा तथा अपने मतका प्रतिपादन करनेके लिये सन् १९४४ के २४ अप्रैलको शुक्र और गुरुका त्रिकोण योग बना उसको उपस्थित करके यह बताया कि दोनों ग्रहोंने उच्च राशिमें स्थित होकर त्रिकोणयोग बनाया पर रुईमें तेजी नहीं हुई इसलिये यह नेष्ट नवम पंचमका योग हुआ। मानो आपने अपना फतवा ही दे दिया। इस पर मैं आपसे बड़ी नम्रतासे यह प्रश्न करता हूँ कि ऐसा कौनसा सिद्धान्त है जिससे आप यह कहते हैं कि कर्कमें बृहस्पति और मीनमें शुक्र जब ट्राइन अर्थात् त्रिकोण योग बनाते हैं तो रुईकी तेजी ही होती है ? मान्यवर ! आप यहां चूकते हैं क्योंकि यदि आप जरा ध्यानसे देखेंगे तो आपको ज्ञात होगा कि इस गुरु और शुक्रने अपनी ड्यूटी पूर्णतया पूरी की है। पाश्चात्य मतके अनुसार चांदी और सोनेमें इस त्रिकोण योगने भारी तेजी की और मेरा तो ख्याल है कि सन् १९४४ के अप्रैल २४ के दिन ही सोना और चांदीके ऊंचेसे ऊंचे भाव अर्थात् चांदी १४४ और सोना १०३ हुआ, जिसकी भविष्यवाणी आपके इस सेवकने एक मास पहले ही Astrological Magazine के अप्रैल १९४४ के अङ्कमें की थी और मेरा विचार है कि आपने भी अवश्य पढ़ी होगी।

कर्क राशि चांदी और सोनेकी राशि है और मीन राशि भी चांदीकी है, यदि इन दो राशियों पर किसी प्रकार ग्रह आकर एक दूसरेसे सम्बन्ध करते हैं तो वह योग उन्हीं वस्तुओं पर प्रभाव करेगा जिन वस्तुओंका सम्बन्ध उन राशियोंसे होगा।

अब यदि यह बृहस्पति शुक्रका त्रिकोणयोग रुई की तेजी नहीं करता है तो इसका दोष इसमें नहीं है। हां, यदि चांदी सोनेमें जो कि इन दो राशियोंकी खास वस्तुएं हैं इनमें जबरदस्त तेजी नहीं आती तो बेशक इस त्रिकोण योगको विफल मान लेते और श्री शुक्लाजीके सिद्धान्तका प्रतिपादन करते। लेख बहुत ही लम्बा हो गया है अतः मैं क्षमा चाहता हूँ, यदि अवसर हुआ तो आगामी लेखोंमें मैं अपने विचार फिर प्रकट करूंगा।

अन्त में मैं थोड़ा सा अनुरोध श्रीशुक्लाजी साहब से कर देना चाहता हूँ कि आप पाश्चात्य-ज्योतिषके सिद्धान्तोंको इतना हेय न समझें, उनमें भी पर्याप्त तथ्य भरा हुआ है। हो सकता है कि वे सब सिद्धान्त

भारतसे ही गये हों किन्तु इस बातको तो हम स्वीकार किये बिना नहीं रह सकते कि हमारे ही सिद्धान्त भले ही हों परन्तु पाश्चात्त्य विद्वानोंने उनको पूर्णतया परिमार्जित किया है और हमें उनको भली प्रकारसे उपयोग करनेका सरल मार्ग बताया है इसलिये वे लोग भी धन्यवादके पात्र हैं।

मैं इस विषयका एक साधारण विद्यार्थी हूँ। १५ वर्षसे भारतीय व पाश्चात्त्य मतोंका बड़ी दिलचस्पीके साथ अध्ययन करता हूँ और मेरा अनुमान है कि इस विषयमें पूर्णतया पारङ्गत होनेमें कम-से-कम १०० वर्ष की आवश्यकता है। अतः किसी भी ज्योतिषीको अभिमानवश पाश्चात्त्य-सिद्धान्तों पर छींटाकशी नहीं करनी चाहिये।

ज्यौतिष सम्बन्धी कुछ प्रश्नोंके उत्तर

[लेखक—राजकुमार गुरु ज्यौतिषालङ्कार श्री पं० तारादत्त जी राज ज्योतिषी]

'श्रीस्वाध्याय' के गत चतुर्थवर्षके 'वसन्ताङ्क' में ज्योतिषसम्बन्धी कुछ प्रश्न प्रकाशित हुए थे, उनके उत्तर निम्न हैं—

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च'

(यजु० अ० ७ कं० ४२)

इत्यादि श्रुतियोंके अनुसार 'कालात्मा दिनकृन्मनस्तु हिनगुः' (बृहज्जातक ग्रहयोनि-भेदाध्याय श्लो० १) इत्यादि ज्योतिषोक्तियोंके अनुसार भी सूर्य आत्माओंका अधिष्ठाता होनेसे जीवन शक्तिका आधार रूप है। यह पुरुष ग्रह है। अतएव पुरुष राशियोंमें इसकी राशियां विशेष रूपसे व्याप्त हैं। विषम राशि ही पुरुष राशि है। इसलिए विषम राशियोंके मूल बिन्दु जीवन मूल बिन्दु हैं। जीवन कालके विभागोंका नाम ही अवस्था है। अतएव यही अवस्था मूल बिन्दु है। इन बिन्दुओंसे दोनों ओर छः छः अंशों तक बाल्यावस्था, इसके अनन्तर छः अंशों तक कुमारावस्था, अनन्तर छः अंशों तक युवावस्था, छः अंशों तक वृद्धावस्था, और आगे ६ अंशों तक मृतावस्था होती है। इस प्रकार भचक्रमें विषम राशियोंमें क्रमसे और सम राशियोंमें व्युत्क्रमसे अवस्थाओंका होना स्पष्ट है।

कर्कके ५ अंशमें बृहस्पतिकी मरणावस्था होती है। तदनुसार मरणफलकी प्राप्ति है। परन्तु परमोच्चमें होनेसे इसकी प्रबल दीप्तावस्था भी होती है। (स्वोच्चे दीप्तः समाख्यातः) निरवकाश दीप्तावस्था सावकाश मरणावस्थाको बाधित करती है। इसी प्रकार अन्यत्र भी यथा संभव व्यवस्था उचित है। 'धने स्थितौ च भौमेन्दू कथितौ धननाशकौ।' यह पाराशरीका पद्य है। पाराशरी होरामें धन स्थान मारक स्थान है।

चन्द्राक्रांत नवांशेशो मारकेश युतो यदि।
मारकस्थानगो वापि जातोऽसौ निर्धनो नरः॥

इत्यादि वाक्योंके समान मारक स्थानमें स्थिति इस वाक्यमें भी दरिद्रता कारक है। इस विषयको स्पष्टतर प्रकारसे जाननेके लिए 'ज्यौतिष-मीमांसा दर्शन' का अवलोकन उचित होगा।

मेवाड़के प्रजाप्रिय श्री १०५ मान् महाराणा साहब

आपकी विश्वविख्यात ऐतिहासिक राजधानी (उदयपुर) में इस वर्ष इन तीन मासोंमें दो अखिल-भारतीय अभूतपूर्व सम्मेलन सुसम्पन्न हुए। आपकी सरकारके पूर्ण सहयोग से ही दोनों सम्मेलन सफल रहे।

(१)

गत विजयादशमी पर श्री० क० मा० मुन्शीजीकी अध्यक्षतामें अ०भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका ३३ वां अधिवेशन हुआ। सम्मेलन के सभापतिको भेंटके लिए निमन्त्रित करके 'हिन्दुआं-सूर्य' ने हिन्दी प्रेमका पूर्ण परिचय दिया था।



(२)

अभी दिसम्बरके अन्तमें युवकहृदय सम्राट श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरूकी अध्यक्षतामें अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद्का ८वां अधिवेशन हुआ। परिषदके अध्यक्ष श्री नेहरूजीसे भेंट करके आपने प्रजाप्रेमका पूर्ण परिचय दिया।

फाल्गुन कृष्ण ११ ता० २७ फरवरीको मेवाड़राज्यमें आपका शुभ जन्मदिवसोत्सव सोत्साह मनाया जायगा। इस शुभावसर पर प्रजाजनके नाते हम भगवान् श्री एकलिङ्गजीसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे प्रजा-वत्सल महाराणा साहब शतायु हों।

—सम्पादक।

अडोल-महीमहेन्द्र—





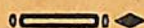
राजाधिराज श्री १०५ मान् हरिसिंह जी साहब
जनरल मिनिस्टर उदयपुर (मेवाड़)

आप नीतिकुशल परमउदार प्रजाप्रिय शासक हैं । वर्तमान महाराणा साहबके आप परम कृपापात्र एवं सत्परामर्श--दाता हैं । प्राचीन आर्य-संस्कृति और हिन्दी-साहित्यसे आपको विशेष प्रेम है । उच्चाधिकारी और शासक होते हुए भी आपमें अभिमान लेशमात्र भी नहीं है । न्यायपरायणता सहृदयता उदारतादि आपके अनेक सद्‌गुण अनुकरणीय हैं । सत्साहित्य एवं स्वाध्याय प्रेमी होनेके नाते 'श्रीस्वाध्याय' पर भी आपकी विशेष कृपा है ।

काश्मीरकी विख्यात योगिनी लल्लेश्वरी

[लेखक—श्री डा० श्रीनाथजी तिक्कू शास्त्री A. M. S. (B.H.U.)]

(गताङ्कसे आगे)



भारतमें सास बहूका झगड़ा तो प्रसिद्ध ही है। परन्तु लल्लाकी सास तो मानो सब सासोंका प्रतिनिधित्व करने वाली प्रतीत होती है। सरल प्रकृति शुद्धचरिता बहूको केवल वह अनेक प्रकारके कष्ट ही नहीं देती थी, अपितु उस पर विविध प्रकारके दोषारोपण भी करता थी। लल्लाको काम काजके अनन्तर चर्खा कातना पड़ता था, इस कलामें लल्ला इतनी प्रवीण थी कि वह मृणालतन्तु (नदरूकी सूत) से भी सूक्ष्म तार कातती थी; परन्तु लल्लाकी सास उसे भी मोटा तार कहकर ईर्ष्यावश उसके कते हुए सूतको एक तालाबमें फेंक देती थी। यह तालाब लल्लाकी जन्मभूमि पद्मपुर (पाम्पोर) में अब भी ललत्राग् (लल्ला-तड़ाग) के नामसे प्रसिद्ध है। लल्लाके दुःख और यातनाओंने उसको अपनी गुप्त साधनासे वञ्चित नहीं किया, अपितु उसके लिए तो यह और भी संसारसे वैराग्य होनेके दृढ़ कारण प्रतीत हुए।

योगीश्वरी लल्ला—

ज्यों-ज्यों लल्ला संसारसे विरक्त होने लगी त्यों-त्यों उसे मिथ्या मोह और सांसारिक लज्जाके बन्धन भी शिथिल और निःसार प्रतीत होने लगे। अब वह घरसे बाहिर बहुत देर तक नदी तटों पर अपनी साधनामें ही मस्त रहती थी। घरके लोगोंकी अब यह परवाह नहीं करती थी। घरके लोग उसे ढूंढ़ ढूंढ़कर लाते थे, परन्तु लल्ला फिर उसी प्रकार घरसे चली जाती थी। इसके लिये उसका पति उसे बहुत पीटता था और सास भी उसी भांति डाटती थी किन्तु, जब उनकी यह चेष्टायें निष्फल हो गईं तो उन्होंने लल्लाको अब अनुनय-विनय करके ही अपने वशमें लानेका प्रयत्न आरम्भ किया परन्तु, लल्लाको इससे क्या उसके लिए तो सान्त्वना-भर्त्सना लालन-ताड़न एक ही रूप रखता है। अन्तमें अपने प्रयत्नों से हार मानकर लल्लाके घर वालोंने अपने पुरोहित श्रीकण्ठ सिद्ध (काश्मीरमें यह सिद्ध मालूके नामसे प्रसिद्ध हैं) की शरण ली। सिद्ध श्रीकण्ठ एक उच्चकोटि के विद्वान् और उपासक थे, उन्होंने योगमार्गका भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। उसने लल्लाको समझाना प्रारम्भ किया, परन्तु लल्लाके भाषणसे उसे स्पष्ट प्रतीत हो गया कि लल्ला अध्यात्मजगत्के साम्राज्यमें रमण कर रही है और वह सांसारिक बन्धनोंसे नहीं बांधी जा सकती है। उसने लल्लाके पति इत्यादिका भी इस विषयसे परिचित कर दिया और लल्लाको योगशास्त्रका उपदेश देना भी प्रारम्भ किया। लल्ला थोड़े ही दिनोंमें इस शास्त्रमें पारङ्गत ही नहीं हुई अपितु अपने गुरु 'सिद्ध' जी से भी बहुत आगे बढ़ गई। वास्तवमें सिद्ध श्रीकण्ठ ही लल्लाका गुरु था और उसीसे उसने अध्यात्ममार्गके दर्शन किये थे, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि लल्ला अत्यल्पकालमें ही योग मार्गमें बहुत ही उत्कृष्ट पद पर प्राप्त हो गई। एक समय वह अपने गुरुके पास गई और देखा कि गुरु सिर पर लोई लेकर एकाग्र भावसे कुछ जप रहे हैं परन्तु उनका मन वास्तवमें उस समय किसी और ही विचारमें पड़ा था। लल्लेश्वरीने कहा कि "गुरु जी! आप जप कर रहे हैं ? या नन्द मर्गमें घोड़ोंको हांक रहे हैं ?" वास्तव में बात भी ऐसी ही थी। सिद्ध जी तो उस समय अपने घोड़ोंकी चिन्तामें पड़े थे जिनको उन्होंने 'नन्द-

मर्ग' चरागाहमें चरनेके लिए भेजे थे। एक समय 'सिद्ध' जी ने लल्लेश्वरीसे कहा कि 'तुम मुझे अपनी योगकलाका कुछ चमत्कार दिखाओ' लल्लेश्वरीने कहा कि 'अच्छा आने वाली पूर्णिमासीको आप मेरे पास आना।' जब पूर्णिमाका दिन आया तो लल्लेश्वरीने अपने नीचे एक सकोरा (शराब) और सिर पर एक दूसरा शराब रखा। गुरुजीसे कहा कि 'आप मेरे कमरेमें अब अमावसके दिन आना।' १५ दिन बाद अर्थात् अमावसके दिन सिद्धजीने कमरा खोला और देखा कि लल्लेश्वरीका पिण्ड शरीर तो केवल दो शराबोंके अन्दर ही लीन हो गया है। जब उन्होंने शराब-सम्पुटको खोला तो देखा उसमें केवल एक काम्पता हुआ रक्तका बिन्दु मात्र ही अवशिष्ट है। उन्होंने शराबोंको सम्पुट कर दिया और पूर्णिमाके दिन पुनः कमरेमें प्रविष्ट होकर देखा कि लल्लेश्वरी पूर्णचन्द्रिकाके समान ज्योतिर्मय है। फिर लल्लेश्वरीसे सिद्ध जी ने पूछा कि—'देवि! आप रक्तकणके रूपमें ही अवशिष्ट रहने पर भी क्यों हिल रही थी?' उसने कहा—"मैं इस भयसे—कि कहीं इस रूपमें भी मुझे माया मोह योगच्युत न करे—काम्प रही थी।" सिद्धजीको लल्ला (अपनी शिष्या) के योग बल पर अतीव विस्मय और असीम आनन्द हुआ।

लल्ला अवधूत रूपमें—

सामाजिक बन्धनोंको तोड़ कर "लल्ला" अब जंगलोंमें पहाड़ोंमें तथा गली बाजारोंमें घूमने लगी। उसे अपने शरीरकी अथवा बाह्य विषयोंकी कुछ सुध नहीं रहती थी। वह अर्धनग्न तथा कभी कभी दिगम्बर अवस्थामें ही घूमा करती थी। कभी कन्थाधारिणी बन कर उन्मत्तकी भांति असम्बद्ध भाषण करती हुई भ्रमण करती थी। उसको लोग उन्मत्त मान कर उसे हीनदृष्टिसे भी देखते थे, उस पर पत्थर भी फेंकते थे। परन्तु वह किसीको भी कुछ नहीं कहती थी। हृदयके चक्षुओंसे देखने वाले तो उसे प्रणाम करते थे और उसके भक्त बने हुये थे। वह जब अपनी अटपटी वाणीमें कुछ दिव्य सन्देश सुनाती थी तब उन वाणियोंको उनके भक्तजन लिपिबद्ध करते थे। यही वाक्य लल्लेश्वरी के वाक्योंके नामसे प्रसिद्ध है जिनको ग्रन्थके रूपमें भास्करकण्ठने संगृहीत किया है और उनका संस्कृत में अनुवाद भी किया है। लल्लाकी वाणी महावाक्योंके समान मूल्य रखती है और उसमें गूढ़ तत्त्वोंकी पुट पाई जाती है। लल्लेश्वरीकी वाक्यावलीसे प्रतीत होता है कि वह भवन (मटन) विजयेश्वर (विज्यब्रोर) पट्टन, हरमुकुट, और श्रीनगरमें अधिकतर अपने अवधूत रूपमें पर्यटन करती रहती थी। अज्ञ लोग उसे गालियां देते और पत्थर फैंका करते थे परन्तु लल्लेश्वरी उन्हें कुछ नहीं कहती थी, केवल उन्हें अपने आत्माके रूपमें ही मानकर उनकी अज्ञता पर मन ही मन हंसा करती थी। लल्लेश्वरीकी इस अवस्थाकी उपमा हम काश्मीरके प्रसिद्ध शैवाचार्य उत्पलदेवकी जीवनलीलासे दे सकते हैं।

सत्समागम—

एक बार हजरत अमीर कबीर सैयद हमदानी हमदान (फारिस) से काश्मीर आये। जब लल्लादेवीने उनको आते देखा तो वह झट एक बनियेके पास गई और उससे शरीरका आच्छादन करनेके लिये वस्त्र मांगा परन्तु उसने नहीं दिया। इसके अनन्तर वह एक नानबाईके जलते हुये तन्दूरमें प्रविष्ट हुई। उस नानबाईने उस तन्दूरको भयभीत हो एक हांडीसे ढक दिया। परन्तु कुछ समयके बाद लल्लेश्वरी दिव्यवस्त्र पहन कर स्वयं बाहिर निकली। हजरत हमदानीने पूछा कि—"आज तनको ढकनेकी इतनी आवश्यकता क्यों पड़ी?" लल्लाने कहा—"अभी तक तो मैं औरतें ही औरतें अपने चारों तरफ देखती थी परन्तु आज पुरुषके दर्शन हुये इसलिये मुझे लज्जा आई।" इसके बाद उनके साथ लल्लाका अच्छा रोचक संलाप हुआ और उसने स्पष्ट कह दिया कि लल्ला वास्तवमें आत्मज्योतिसे परिपूर्ण और प्रकाशमान हैं।

हजरत हमदानीकी जियारत अब भी श्रीनगरमें बड़ी प्रसिद्ध हैं।

उन्हीं दिनों काश्मीरमें सूफीमतके कई मुसलमान सन्त रहते थे, इनमेंसे कई तो हिन्दुओंके वंशज थे, परन्तु सूफीमतके सन्तोंके सम्पर्कमें आनेसे तथा मुसलमानोंके साथ भोजनादिका व्यवहार रखनेसे वह उनके सम्प्रदायमें लब्ध प्रतिष्ठ हो गये थे। ऐसे सन्तोंमें नन्दऋषि—जिसको मुसलमान नूरदीन साहिबके नामसे पुकारते हैं—प्रसिद्ध हैं। इस उच्च कोटि के महात्माके साथ लल्लेश्वरीका कईबार मिलन हुआ था और उसने उनकी अध्यात्म विषयक शंकाओं का भी कई बार समाधान किया था।

लल्लाका मत—

यों तो लल्लाकी वाणीमें बार-बार शिवका नाम आया है, परन्तु वह वास्तवमें निर्गुणवाद या रहस्यवाद का ही बार बार उल्लेख करती है। उसने उपनिषदोंके रहस्यपूर्ण विषयोंका बड़ी ही रोचक और सरल काश्मीरी भाषामें प्रतिपादन किया है। वह आत्मज्ञानको ही उत्कृष्ट और मोक्षका रूप मानती है और आडम्बरी बातोंसे अतिशय घृणा करती है। उसकी वाणीसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि वह वास्तवमें स्वयं जीवन्मुक्तावस्थाको प्राप्त हुई थी। उसकी जीवनीसे ज्ञात होता है कि उसपर सूफीमतका भी अधिक प्रभाव पड़ा है, इसका कुछ कुछ आभास उसकी कवितामें भी मिलता है। मुसलमान लेखकोंका विश्वास है कि लल्ला आरिफा मुसलमान मतसे अधिक प्रभावित हो गई थी, परन्तु यह धारणा केवल खींचातानी ही है। यह निःसन्देह मान सकते हैं कि लल्लाके विचार हिन्दूधर्मकी संकुचित सीमाके बाहिर अपने विशालक्षेत्रमें फैल चुके थे और जिस अवस्थामें वह पहुंच चुकी थी उस अवस्थामें लल्ला जैसी आत्मनिष्ठा योगिनीके लिये मूर्तिपूजा, वर्णाश्रम-विचार अथवा अन्य सामाजिक और धार्मिक बन्धन कुछ नहीं कर सकते।

लल्लेश्वरी अपने रहस्यज्ञानमयी वाणीका योगिनीके रूपमें गांव गांव नगर-नगर और घर-घर सन्देश सुनाती थी। उसके अद्भुत चमत्कारोंसे अन्तमें लोगोंके मनमें उसके लिये न केवल परम आदर एवं श्रद्धा ही अपना घर कर गये थे, अपितु लोग उसे साक्षात् भगवती का ही अवतार मानने लगे थे। यही कारण है कि अब भी काश्मीरी जनता हिन्दू या मुसलमान सब उसे देवी की भांति ही मानती है तथा आदर और श्रद्धासे उस का नाम लेती हैं एवं उसके श्लोकोंको यत्र तत्र समय समय पर बड़ी भक्तिसे बोलते हैं। काश्मीरमें आबालवृद्ध इस देवीके नामसे परिचित हैं।

अवसान काल

लल्लेश्वरीने अपना पिण्ड छोड़ा या नहीं? इस विषयमें ऐतिहासिकोंका बड़ा ही मतभेद है। अंग्रेजी लेखकोंका कथन है कि लल्लाने अपना पिण्ड शरीर विजयेश्वर (बीज बिहार)में छोड़ा था। परन्तु इसके विरुद्ध यह कहा जाता है कि यदि ऐसा ही होता तो लल्लाके स्थानपर कोई समाधि या मकबरा नहीं मिलता है। कई प्राचीन लेखकोंका यह भी कहना है कि लल्ला ने विजयेश्वरमें अपना शरीर तो छोड़ा था परन्तु उस का शरीर उसी समय अदृश्य होगया; केवल एक ज्योति उसके शरीरसे निकल गई और वह आकाशमें समा गई। कुछ प्राचीन लोग यह भी मानते हैं कि वह मरी नहीं अपितु जीवन्मुक्त है; क्योंकि वह काश्मीरमें बहुत से महात्माओंको दर्शन देती रही है। हमें कई प्रामाणिक व्यक्तियोंसे ज्ञात हुआ है कि यह बात बिल्कुल सच है। आजसे १०० वर्ष पहलेकी बात है कि हाङ्गलगुण्ड ग्रामके प्रसिद्ध सिद्धपुरुष मिर्जा काकसाहेब श्रीनगर जा रहे थे। उनके साथ हरीराम नामक एक भक्त था जिसको लल्लाके दर्शनकी बहुत इच्छा थी। जब मिर्जा काकसाहेब पद्मपुरमें लल्लातड़ाग पर बैठे थे तो एक छोटी लड़की उनकी गोदमें आकर बैठ गई और उनसे बातें करने लगी, फिर सहसा अदृश्य हो गई। हरीरामके पूछने पर काकसाहेबने कहा कि यही लड़की तो लल्लेश्वरी थी।

एक प्रतिष्ठित महात्माने हमसे कहा है कि पद्मपुर के पास बालाश्रम (बालहोम) ग्राममें एक शिष्या

थी रहती थी, वह अपने जीवनके चरमकाल तक नित्य प्रातः उठ कर उमायन (उग्यन्) की पहाड़ी पर जाती थी और वहां लल्लेश्वरीके साथ खेलती थी। उसने यह रहस्य जीवनके अन्त तक किसीसे भी नहीं कहा था, परन्तु एक समय अपने पुत्रोंके अत्याग्रहसे उसने यह भेद प्रकट कर दिया। इसके अनन्तर उसकी मृत्यु हो गई। इन बातोंकी प्रामाणिकता अथवा अप्रामाणिकताको सिद्ध करनेका हमारा लक्ष्य नहीं है और न यहां पर समय ही है। परन्तु यह अवश्यमेव मानना पड़ेगा कि भगवती लल्लेश्वरी एक उच्च कोटिकी सिद्धा और ब्रह्मज्ञाननिष्ठा थी और आज भी वह मारुति, व्यास, इत्यादि महापुरुषोंकी भांति अपने भक्तोंको दर्शन देकर कृतार्थ करती है। धन्य है वह देश जिसमें लल्लेश्वरी जैसी महामायाका अवतार हो चुका है।

वासन्ती फाग

[ले०—श्री पं० चन्द्रदत्तजी शास्त्री जोशी 'चन्द्र']

कैसा फाग खिला है।

कोने-कोनेमें भारतके आज मनोहर फाग खिला है।
हिमगिरिके उत्तुङ्ग शिखर पर बालसूर्यका राग खिला है॥ कैसा०
गौरीशङ्कर गिरिस्कन्धपर पूर्व दिशाका लाल खिला है।
सागरके निर्मल जलपर रविकी किरणोंका जाल बिछा है॥ कैसा०
जलनिधिकी लीलासे लहरोंका आपसमें ताल मिला है।
काशी मथुरा और त्रिवेणी संगममें जो प्रयाग मिला है॥ कैसा०
मानसरोवर और रामेश्वर सभी जगह इक राग मिला है।
आओ वीरों आओ वीरो आज हमारा भाग खिला है॥ कैसा०
वीर प्रताप शिवा बन्देके प्रणको भूल न जाना क्षणको।
दुःखी भारतमाताको हमसे आशा संवाद मिला है॥ कैसा०
हम सबका मिलकर नभमें संदेशरूप यह नाद मिला है।
देशभक्तके निर्मल-मनको माताका अनुराग मिला है॥ कैसा०
राष्ट्रप्रेमके मतवालोंको प्रेम-तपस्या त्याग मिला है।
कैसा फाग खिला है।

स्फुट विचार

आजाद-हिन्द-फौज और नेताजी—

तर्पयन्ति स्वराष्ट्रं ये शोणितैरुन्निनीषवः ।
धन्यास्ते कृतपुण्यास्ते वन्दनीयपदाम्बुजाः ॥

राष्ट्रालोकके उक्त सिद्धान्तानुसार न केवल नेताजी ही प्रत्युत आजादहिन्द-फौजमें भाग लेनेवाले बच्चे-बच्चेकी चरणरज भारतीयोंके लिए पूज्य और शिरोधार्य है। भारतीय वीरोंकी कथायें हम इतिहासोंमें तो बहुत पढ़ा सुना करते हैं, किन्तु उस भारतीय शौर्यका प्रत्यक्ष और जीवित प्रमाण नेताजी और उनकी स्वतन्त्रभारत सेनाने उपस्थित कर दिया है। अपने रक्तसे मातृभूमिका तर्पण करनेवाले, सर्वथा निष्काम भावसे स्वराष्ट्रके लिये अपना सर्वस्व निछावर करने वाले इन वीरोंकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही थोड़ी है। और 'नेताजी' शब्दको वास्तविक अर्थमें चरितार्थ करने वाले सुगृहीतनामधेय श्री सुभाषचन्द्र वसुकी तुलनाके लिये तो हमें विश्व-इतिहासमें कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम और महान् मौर्य साम्राज्यके निर्माता आचार्य चाणक्यके अतुल साहस संगठनशक्ति महान् त्याग और बलिदान आदि अनेक सद्गुणोंकी कोटिमें 'नेताजी' आ विराजते हैं और—

क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे ।

यह उक्ति इन तीनों पर पूर्णतः घटित हो जाती है। जिस प्रकार भगवान् श्रीरामने अजेय महाबली अभिमानी और शक्तिशाली राक्षसाधिपति रावण का ससैन्य (सती शिरोमणि देवी सीताकी मुक्तिके बहाने) संहार करके भारतको सदाके लिये अभय करनेमें अपने शौर्यको प्रकट किया था और आचार्य चाणक्यने नन्द कृत अपमानसे प्रेरित होकर ही निज बुद्धि और विद्या-जन्य-पराक्रमको प्रकट किया था—उसी प्रकार हमारे नेताजी निःस्वार्थ महान् प्रयत्नकके कारण संसारके महापुरुषोंकी श्रेणीमें आ विराजते हैं। नेताजीके जीवनमें कहीं भी व्यक्तिगत स्वार्थका लेश भी नहीं दिखाई देता। परतन्त्रभारतके इस महा पराक्रमी वीराग्रणीने जबकि भारतका बच्चा २ नौकरशाहीके बन्धनोंमें आपाद मस्तक आबद्ध था अपने देशके सुदूर प्रान्तोंमें पहुँच कर विशाल सैन्यका संगठन कर आततायी अत्याचारी विदेशी आक्रान्ताको दण्ड देनेका महान् पुण्य कार्य किया, इसलिये नेताजी जहां एक ओर अनुपम वीर सेनापति हैं वहां सर्वश्रेष्ठ पुण्यात्मा और धार्मिक भी हैं, क्योंकि आततायियोंको दण्ड देने वाला सर्वश्रेष्ठ धार्मिक है। इसीलिये तो श्रीराष्ट्रालोकमें लिखा है कि—

स्वतन्त्रराष्ट्रियकुले जायन्ते सुभगाः नराः।
ईषत्प्राग्भव पुण्येन कोऽपिनास्त्यत्र संशयः ॥
तथाप्यनेकजन्मात्तपुण्यपुञ्जेन जन्म ते ।
अस्वतन्त्रकुले प्राप्य दण्डयन्त्याततायिनः ॥

अन्तमें हम अधिक कुछ न कहते हुए परमपिता प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि वह हमारे नेताजीको शतायुः करे और वह दिन शीघ्र लायें कि वे स्वतन्त्र-भारतके प्रधानके रूपमें हमारे मध्य फिर विराजमान हो रहे हों। उन्होंने—

अङ्गणवेदी वसुधा, कुल्या जलधिः स्थली च पातालम् ।
वल्मीकश्च सुमेरुः कृतप्रतिज्ञस्य वीरस्य ॥

अपने आचरण द्वारा बाणभट्टकी उक्त उक्तिको अक्षरशः चरितार्थ कर दिखलाया।

गांधी आश्रम वर्धामें होने वाला एक घृणित विवाह

इसमें कोई सन्देह नहीं कि बापू विश्व बन्द्य हैं। भारतकी राजनैतिक अवस्थाको सुधारनेके लिए उन्होंने पर्याप्त सफल प्रयत्न किये हैं। उनके तप और त्याग भी अनुपम हैं। किन्तु पिछले दिनों उन्होंने एक ऐसा कार्य किया जिसे दूसरे शब्दोंमें भारतीय-संस्कृति पर प्रत्यक्ष कुठाराघात कहा जा सकता है। उन्होंने अपने आश्रममें एक विवाह करवाया है, जिसमें विवाहपद्धतिके वैदिकमन्त्र या संस्कृत भाषाका सर्वथा बहिष्कार किया गया था। एक चारागत पुरोहितने तथाकथित हिन्दुस्तानी हीमें सब मन्त्र मनमाने ढंगसे पढ़कर वह विवाह करवाया। स्मरण रहे कि हम अपने धार्मिक कार्य भी यदि देववाणी संस्कृतको छोड़कर जनसाधारणकी भाषा हिन्दुस्तानी या हिन्दी हीमें करने लग पड़ेंगे तो हमारी प्राचीन आर्यसंस्कृतिका सर्वनाश ही हो जायेगा। इसलिए आर्य सभ्यतानुरागी धार्मिक जनोंको, देशभक्तोंको समय रहते सावधान हो जाना चाहिये और संस्कृत पर अथवा हमारी संस्कृति पर किये जा रहे इन कुठाराघातोंको रोकनेका अभीसे प्रयत्न आरम्भ करना चाहिए। इस सम्बन्धमें हम अपने स्वतन्त्र स्थित विचार आगामी अङ्कमें देंगे।

आगरा और जयपुरके संस्कृत-साहित्य-सम्मेलन

गत नवम्बर मासमें आगरामें और अभी दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें जयपुरमें दो संस्कृत-साहित्य सम्मेलन सम्पन्न हुये हैं। हर्षका विषय है कि आगरामें श्री बाबू सम्पूर्णानन्दजी, श्रीयुत कन्हैयलाल माणिकलाल मुन्शी आदि नेताओंने भी पर्याप्त उत्साहपूर्वक भाग लिया। हमारी सम्मति में भारतीय राजनैतिक प्रत्येक नेताको राजनैतिक कार्योंके साथ ही साथ संस्कृत भाषाके प्रचारकी प्रेरणा भी करनी चाहिए, क्योंकि भाषाकी रक्षाके बिना संस्कृतिकी रक्षा न होगी और जब संस्कृति ही नष्ट हो गई तो भारतका स्वतन्त्र होना न होना एक ही बराबर होगा। इसलिए भारतके अन्यान्य नेताओंसे निवेदन है कि वे भी श्री सम्पूर्णानन्दजी और श्री मुन्शीजीके समान संस्कृतके प्रति अपनी अभिरुचि दिखाकर अपने कर्तव्यका पालन करें। जयपुरके संयोजकोंको धन्यवाद देते हैं और संस्कृत प्रेमियोंसे साग्रह निवेदन करते हैं कि आगामी वर्ष काशी, देहली, लाहौर वा हरिद्वार आदिके स्थान पर सम्मेलनका अधिवेशन बुलाकर संस्कृत प्रचार कार्यको अग्रसर करें।

हिन्दुविश्वविद्यालय काशीका स्तुत्य कार्य

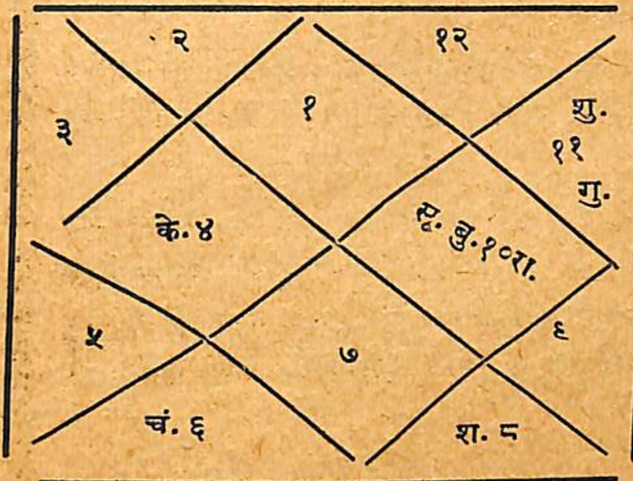
हिन्दूविश्वविद्यालय काशीने एक विज्ञप्ति द्वारा घोषित किया है कि विश्वविद्यालयने B. A. और B. Sc. परीक्षाओं तकका माध्यम हिन्दी भाषाका बना दिया है। अर्थात् बी० ए० तकके विद्यार्थी सभी विषय हिन्दीमें ही पढ़ सकेंगे और परीक्षामें उत्तर भी हिन्दी हीमें दे सकेंगे। यह कार्य आजसे कई वर्षों पूर्व हो जाना चाहिये था, किन्तु "बीती ताहि बिसार" के सिद्धान्तानुसार विश्वविद्यालयने यह घोषित कर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। इसके लिए विश्वविद्यालयके अधिकारीगण अत्यन्त धन्यवादके पात्र हैं। वास्तवमें महर्षि श्री मालवीयजी का प्रयत्न मानों अब फलीभूत होने लगा है। दूसरे विश्वविद्यालयोंको भी हिन्दुविश्वविद्यालयके इस आदर्शका अनुकरण कर शीघ्रातिशीघ्र हिन्दी भाषा को शिक्षाका माध्यम स्वीकार कर अपने कर्तव्यका पालन करना चाहिए। तथास्तु।

श्रीसुभाषचन्द्र वसुकी जन्मकुण्डली

कलकत्ताके प्रसिद्ध ज्योतिषी श्रीयुत शम्भुनाथसेन के सौजन्यसे श्रीयुत सुभाषचन्द्र वसुकी जन्मकुण्डली और उनके आयुके सम्बन्धमें निम्नाङ्कित संक्षिप्त विचार प्राप्त हुए हैं।

श्रीयुत सुभाषचन्द्र वसुका जन्म २३ जनवरी शनिवार सन् १८९८ ई०कों मध्याह्न १२ बजकर १३ मिनट पर कलकत्तामें हुआ। आपके जन्मके समय ग्रह स्थिति निम्न प्रकार थी

जन्म कुण्डली



"ज्योतिष शास्त्रानुसार विचार करने पर निश्चित होता है कि नेताजीकी आयु ७२ वर्षकी होनी चाहिए, अर्थात् अभी कमसे कम २५ वर्ष वह और अवश्य जीवित रहेंगे। नवम्बर मासमें जिस समय कुण्डली पर विचार किया गया और यह लेख प्रकाशनार्थ भेजा गया उस समय २१ अगस्त १९४५ ई०को रात्रिके प्रथम प्रहरमें वे जहां थे वहांसे ३७० मीलकी दूरी पर किसी पर्वत गुफामें अपने पांच साथियों के साथ बैठे हुए होंगे। वे या तो जनवरी १९४६ में ही भारत आजायेंगे। अथवा यदि उस समय न आये तो सन् १९४७के मार्च अप्रैल तक तो भारत आकर स्वतन्त्र भारतके प्रधान बनेंगे"

स्थानाभावके कारण नेताजीकी कुण्डली पर इस अंकमें हम अपना मन्तव्य नहीं दे सके। आगामी अंकमें हम अपना मन्तव्य प्रकाशित करेंगे। साथ ही दूसरे ज्योतिर्विद् महानुभावोंसे भी निवेदन करते हैं कि वे भी नेताजीकी कुण्डली पर विचार कर अपना मन्तव्य भेजनेकी कृपा करें।

—सम्पादक

सन् १९४६ में

रुई, चांदी, सोना और शेयरमें भारी घटाबढ़ी

धन कमानेका अपूर्व अवसर

केवल रुपया ६०) में उपरोक्त किसी भी एक वस्तुके सन् १९४६ के वार्षिक ग्राहक बनकर, पूरे वर्ष तक हमारी भारत विख्यात व सैंकड़ों प्रशंसापत्र प्राप्त तेजी-मन्दीकी स्पेशियल मासिक रिपोर्ट मय दैनिक घटाबढ़ी खरीद बेचकी तारीखें व जनरल बड़े चांसोंसे (जिसकी छुटक एक मासकी कीमत रुपया २०) एक चीज है) व्यौपारमें निश्चय फायदा उठाइये।

हमारी तेजी-मन्दीकी रिपोर्ट केवल सस्ती ही नहीं है, परन्तु अजोड़ व सर्वश्रेष्ठ भी साबित हो चुकी है, जिसके प्रमाणस्वरूप आये दिन ग्राहकोंके प्रशंसा-पत्रोंकी झड़ी लगी रहती है। उनमेंसे कुछ हालके आये हुये ताजा पत्र नीचे दिये जाते हैं:—

१. मैसर्स बाबु भाई चिम्मनलाल एण्ड को० बालासिनोर १५-११-४५—सन् १९४५ के आपकी रुईकी तेजी-मन्दीकी रिपोर्टके वार्षिक ग्राहक होने से हमें बहुत फायदा हुआ। कृपया सन् १९४६ में हमें रुई, चांदी और सोनेकी रिपोर्ट बराबर भेजते रहें।

२. सेठ नरसिंहदासजी के. पटेल रोक साइड बालकेसर रोड बम्बई ७-१२-४५—इस पत्रके साथ रु० ६०) का चैक भेज रहा हूँ कृपया सन् १९४५ जैसे मेरा नाम वार्षिक ग्राहकमें लिखकर सन् ४६ में भी चांदीकी रिपोर्ट बराबर भेजते रहें।

३. एस० के० देसाई, बी० ए० सराय रोड कराची १०-१२-४५—आज दिन मनीआर्डरसे रु० ६०) भेज रहा हूँ। कृपया सन् ४५ की तरह सही रुईकी रिपोर्ट पूरे अगले साल तक भेजते रहें।

४. लाला ईशरदास बैंकर्स सैदमिट्ठा बाजार लाहौर ५-१२-४५—कृपया नया सालका चन्दा रुपया ६०) वी० पी० से वसूल कर सोनेकी रिपोर्ट गत वर्ष जैसे पूरे सन् १९४६ तक जारी रखें।

जल्दी करिये सिर्फ २५ जनवरी १९४६ तक ही इस रियायती फीसमें वार्षिक ग्राहक बनाये जायेंगे। चूकोगे तो गत वर्ष जैसे पूरे साल भर पछताना पड़ेगा।

प्रोफेसर बी० सी० महता म्यू० कमिश्नर

डायरेक्टर—श्री जैन ज्योतिष ब्यूरो, ब्यावर (राज०)

स्वतन्त्रताके अग्रदूत 'नेताजी'



स्वाधीनभारतीय सेनाके संस्थापक एवं सर्वप्रिय प्रधानसेनापति श्री सुभाषचन्द्र वसु।

ता० २३ जनवरीको आपका जन्मदिवसोत्सव समस्त भारतमें सोत्साह मनाया जायेगा। आज सम्पूर्ण राष्ट्रमें यही ध्वनि गूंज रही है कि हमारे 'नेताजी' चिरजीवि हों, तथास्तु। विदेशोंमें अस्थायी स्वतन्त्रभारत सरकारका संगठन एवं संचालन करके आपने संसारके सामने यह सिद्ध कर दिया था कि हम भारतीय अपना शासनसूत्र-संचालन करनेमें सर्वथा समर्थ हैं, आयोग्य नहीं। जर्मन-राष्ट्रने आपको "हर एक्सीलेन्सी डिप्टी फ्युहरर आफ इण्डिया" की उपाधिसे सम्मानित किया था। यह चित्र जर्मनीमें लिया गया उसी समयका है।

स्वतन्त्र भारत सेनाके तीन प्रमुख वीर सेनानी



कैप्टिन श्री शाहनवाजखां



लैफ्टिनेण्ट श्री गुरुबख्शसिंह ढिल्लों



कैप्टिन श्री प्रेमकुमार सहगल

इन तीनों वीर योद्धाओं पर सम्राटके विरुद्ध युद्ध छेड़नेके अपराधमें दिल्लीके लालकिलेमें ऐतिहासिक अभियोग चलाया गया था। किन्तु ३ जनवरीको सायंकालके समय भारतके प्रधान सेनापति जनरल सर क्लाड आचिनलेक महोदयने दूरदर्शिता एवं सहृदयतासे काम लेते हुए इनकी मुक्तिकी घोषणा करके भारतीय जनमतका आदर किया है। समस्त राष्ट्रमें इनकी मुक्ति पर हर्षोल्लास प्रकट किया जा रहा है।

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

का

ज्योतिर्विज्ञान परिशिष्टांक

(हेमन्तांक सं० २००२ वि०)

"श्रीस्वाध्याय" के प्रत्येक स्तम्भकी सामग्री एक प्रकारसे स्थायी
साहित्यक ही वस्तु होती है। किन्तु धर्मस्तम्भमें
पर्वव्रतोत्सवादि निर्णय, राशिफलादि एवं अर्थ-
स्तम्भमें ग्रहोंका तेजीमन्दी पर प्रभाव, व्यापार
व्यवसाय आदि कुछ एक सामयिक
विषय भी आवश्यक होते हैं,
वे इस परिशिष्टाङ्क
में दिये जा
रहे हैं

प्रधान सम्पादक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य

सहायक सम्पादक—

श्री पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्यौतिषाचार्य प्रो० श्री रा. कृ. सं. कालेज खुर्जा

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला)

इस परिशिष्टका मूल्य ॥)

'श्रीस्वाध्याय' को मासिक बनानेकी योजना

ग्राहकोंसे आवश्यक निवेदन



हमारे प्रेमी ग्राहक 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक रूपमें देखनेके लिये बहुत उत्सुक हैं। कई व्यापारियोंने केवल ज्योतिषके अंशको ही मासिक रूपमें निकालनेके लिए आग्रह किया है। किन्तु वर्तमान विषम परिस्थितिमें सोलनमें प्रेस आदिका साधन न होनेसे हम विवश हैं। इस त्रैमासिकके प्रत्येक अङ्कको छपानेके लिए हमें अपना सब कार्य छोड़कर १५ दिन दिल्लीके प्रेसमें देने पड़ते हैं। मासिक पत्रके लिए प्रत्येक मासमें १५ दिन दिल्ली आदि किसी बाहरके प्रेसमें रहना हमारे लिये बहुत कठिन है। फिर भी हमने अब यह विचार किया है कि ज्योतिविज्ञान प्रेमियों और व्यापारियोंके लाभार्थ केवल डेढफार्म या दो फार्म १६ पृष्ठोंमें ज्योतिष सम्बन्धी एक दो महत्त्वपूर्ण लेख और प्रत्येक वस्तुकी तेजी मंदी, जनरल चान्स, दैनिक रिपोर्ट, राशिफल, पर्वव्रतादि निर्णय एक मासके देकर (जैसा कि यह परिशिष्ट है इतने ही पृष्ठोंका) इसे मासिक रूपमें भी निकाला जावे। इस मासिक संस्करणमें केवल ज्योतिर्विज्ञान सम्बन्धी यह एक ही स्तम्भ रहेगा और त्रैमासिक संस्करण पूर्ववत् निकलेगा जिसमें सब स्तम्भ यथापूर्व रहेंगे। इस मासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य ८) रु० और त्रैमासिकका वही ३॥) रहेगा।

५०० ग्राहकोंकी स्वीकृति आने पर

यदि आगामी अङ्कके प्रकाशित होने तक ५०० ग्राहकोंने मासिक अङ्क लेनेकी स्वीकृति हमारे पास भेज दी तो आगामी वैशाख सं० २००३ से ही हम इसे मासिक रूप दे सकेंगे। आशा है प्रेमी पाठक अधिकसे अधिक ग्राहक बनाकर हमें सहयोग देते हुए अपनी चिरप्रतीक्षित इच्छाको पूर्ण करेंगे।

मेरे अभिन्न मित्र बन्धुवर श्री पं० विशुद्धानन्दजी गौड़ ज्योतिषाचार्य (प्रो० श्री रा० कृ० संस्कृत कालेज खुर्जा) ने मुझे इस ज्योतिविज्ञान विभागके सम्पादन कार्यमें पूर्ण सहयोग देना स्वीकार कर लिया है, अतः आपके जितने भी धन्यवाद किये जायें थोड़े हैं। ज्योतिषाचार्यजी समर्घमहर्घ (तेजी मन्दी) विज्ञान वृष्टिविज्ञान भारतीय वायुशास्त्र और कृषिविज्ञानके विशेषज्ञ हैं; अतः आपके लेखोंसे भी 'श्रीस्वाध्याय' के पाठक लाभान्वित होते रहेंगे। प्रस्तुत अङ्कमें ज्योतिषाचार्यजीका माघ मासकी प्रत्येक वस्तुकी तेजी मंदी पर अन्वेषणात्मक लेख जा रहा है, पाठक इसका अनुभव करें और लाभ उठावें।

जब तक यह स्तम्भ मासिक रूपमें प्रकाशित होनेके साधन नहीं जुटते तब तक जो व्यापारी जिस वस्तुकी मासिक रिपोर्ट चाहेंगे उन्हें हाथसे लिखकर भेजी जा सकेगी। एक मासके हस्तलिखित स्पेशल चान्स या एक वस्तुकी मासिक रिपोर्टकी फी० ११) और पाक्षिक या १५ दिनकी रिपोर्टकी फी० ५) होगी।

निवेदक—

हरदेव शर्मा त्रिवेदी
(प्रधान सम्पादक)

श्रीस्वाध्यायसदन
सोलन (शिमला)

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

सन् १६४६ ई० का भविष्य

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी]



पौष कृ० १३ मंगलवारको अर्धरात्रिके समय कन्या लग्नमें ईसाई जगत्‌का नवीन वर्ष सन्१६४६ई. प्रारम्भ हुआ है। इसकी ग्रहस्थिति संसारके लिए विशेष शान्तिदायिनी प्रतीत नहीं होती। लग्नसे चतुर्थ में सूर्य शुक्र केतुका योग और कालचक्रके सुख-स्थानमें नीचस्थ वक्री मंगलके साथ शनिका योग संसारके सामाजिक राजनैतिकादि सर्वविध सुख-साधनमें महान्‌बाधक है। आजसे ठीक ३ वर्ष पूर्व श्रीस्वाध्यायके 'हेमन्ताङ्क'में हमने ग्रहस्थितिका विश्लेषण करते हुए इसी स्तम्भमें स्पष्ट लिखा था कि 'सं० २००५तक समस्त संसारमें पूर्ण शान्ति स्थापित नहीं हो सकती'....इत्यादि। इसके अनन्तर भी हमने इन स्तम्भोंमें जो-जो विचार प्रकट किये उनसे पाठक भलीभांति परिचित ही हैं। विश्वयुद्ध समाप्त होजाने पर भी अभी तक संसारमें शास्वत-शान्तिके लक्षण प्रकट नहीं हुए हैं।

इस आगामी वर्षकी ग्रहस्थिति राजा मंत्री आदि विचार और वर्ष वर्षेशादि लग्नोंके विचार करनेसे ज्ञात होता है कि यह वर्ष संसारकी महाशक्तियोंके सामने अनेक विषम-समस्याएं उत्पन्न करेगा। बड़े राष्ट्रोंमें पारस्परिक सहयोग और सद्भावना न रहेगी। कूटनीतिका आश्रय अधिक होगा। मित्रराष्ट्रोंकी साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धाके कारण अन्तर्राष्ट्रिय संगठन और सम्मेलन विफल रहेंगे। कई राष्ट्रोंके शासन विधानमें अकल्पित परिवर्तन होंगे।

इस वर्षमें होलिकादहन रविवारको और चैत्र कृष्णपक्षमें तिथिवृद्धि तथा शुक्लपक्षमें तिथिक्षय भी आगे दुर्भिक्षादि उत्पात और अन्नमहर्घता सूचक है।

मधुमासे कृष्णपक्षे तिथिवृद्धिर्यदा भवेत्।
शुक्लपक्षस्य हानिः स्यादन्नहीना तदा मही॥

यूरोपके अनेक प्रान्तों और सुदूरपूर्वके छोटे बड़े द्वीपसमूहोंमें भीषण अन्नसंकट और भांति-भांतिके उत्पातोंसे प्रजा त्रस्त रहेगी। टर्की ईरान ईराक पेलेस्टाइन स्पेन जर्मनी ग्रीस और चीन, जापान, जावा, सुमात्रा, तथा बाल्कन द्वीप समूहमें यत्र-तत्र गृहयुद्ध, अन्तःकलह एवं सामाजिक तथा राजनैतिक क्रान्ति का उग्ररूप दिखाई देता रहेगा। रशियाका प्रमुत्व और महत्त्वाकांक्षाएं क्रमशः बढती जावेंगी, अतः इस वर्षमें आगे चलकर मित्रराष्ट्रोंके साथ रूसके पारस्परिक सम्बन्ध बिगड़ने लगेंगे। कुछ अकल्पित आश्चर्यप्रद दुःखद घटनाएं संसारमें घटेंगी। शासन-विधान और मंत्रिमण्डलोंमें परिवर्तन होंगे। अप्रैल जुलाई अक्टूबरमें तीसरे युद्धकी स्थिति उत्पन्न होगी। यदि वहां युद्धकी भूमिका न बनी तो पश्चिम और पूर्वके किन्हीं दो प्रान्तोंमें दुर्भिक्ष भूकम्प जलप्रलयादि उत्पातसे जन धनकी बहुत हानि होगी। चीन जर्मनी टर्की फिलस्तीन और बाल्कनराष्ट्रोंमें क्रान्ति रक्तपात अधिक होगा।

भारतके लिए यह वर्ष राजनैतिक दृष्टिसे ऐतिहासिक एवं महत्त्वपूर्ण होते हुए भी भारतीय प्रजाके लिए पूर्ण सन्तोषकारक नहीं कहा जासकता। कई प्रकारकी आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक समस्याएं विकट रूपमें उपस्थित होंगी।

वर्षके आरम्भमें बृटिश उच्चाधिकारी भारतीय लोकमतके साथ अपनी पूर्ण सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे, किन्तु वर्षके उत्तरार्धमें शासकोंकी ओरसे

कठोर रुख प्रकट होगा। तथापि भारतीय जनता अपने लक्ष्यको ओर अग्रसर होती जायगी। राष्ट्रियताके शत्रुओंकी शक्ति इस वर्षमें क्षीण होगी।

राष्ट्रिय महासभाकी प्रतिष्ठा सर्वत्र बढ़ेगी। कई प्रन्तोंमें राष्ट्रियमन्त्रिमण्डल स्थापित होंगे। प्रान्तीय चुनाव आन्दोलनोंमें कांग्रेसको अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होगी। कुछएक प्रान्तोंमें संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनेंगे। अप्रैलके आस पास बृटिश शासकोंकी ओरसे भारतीयोंके हाथमें कुछ सत्ता सौंपी जायगी, किन्तु राष्ट्रियदल उससे पूर्ण रूपेण सन्तुष्ट न होगा, फलस्वरूप सत्ताप्राप्त भारतीयोंका विशेष समयतक अधिकारारूढ रह जाना सम्भव नहीं। वर्षके उत्तरार्धमें पुनः संघर्ष प्रारम्भ होनेकी सम्भावना है। अप्रैल तक राष्ट्रियसंगठन और आन्दोलन विशेष रूपसे होंगे। कुछ प्रान्तोंमें साम्प्रदायिक संघर्ष भी होंगे। वर्षा तूफान हिमपात महाभारी दुर्भिक्षादि उत्पातोंसे गुजरात काठियावाड़ बंगाल बिहार और मध्यभारतमें बहुत हानि होंगी। व्यापारमें बहुत उथलपुथल होगी। वर्षाकालके आरम्भमें वर्षा अच्छी होकर अन्तमें वर्षा हानिका योग है। जूनसे आगे अग्निकाण्ड और रोग वृद्धि अधिक होगी।

सं० २००३ का सविस्तर फलादेश (संसार और भारतकी सामाजिक राजनैतिक और व्यापारिक परिस्थितियों पर सप्रमाण विवेचन) हमारे शीघ्र प्रकाशित होने वाले सं० २००३के 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' में देखिये।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय

पौष शुक्ल	१० रविवार ता० १३ जनवरी	मकरसंक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल दूसरे दिन, पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त्तोंका
	१२ सोमवार ता० १४ ,,	मकर संक्रान्तिका पुण्यकाल दिन भर
	१३ मंगलवार ता० १५ ,,	भौमप्रदोष व्रत
	१५ गुरुवार ता० १७ ,,	सत्यव्रत माघस्नानारम्भ गुरुपुष्ययोग ३२।२६ उ०
माघ कृष्ण	३ रविवार ता० २० ,,	श्रीगणेश (सङ्कष्ट) ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ८।४३
	६ बुधवार ता० २३ ,,	श्रीसुभाषचन्द्र वसु जन्मदिन
	७ गुरुवार ता० २४ ,,	अनन्तश्री जगद्गुरु रामानन्दाचार्य जयन्ती
	११ सोमवार ता० २८ ,,	षट्तिलाएकादशी व्रत
	१२ बुधवार ता० ३० ,,	प्रदोष व्रत
	१४ शुक्रवार ता० १ फरवरी	पितृकार्येऽमा फरवरी
	३० शनिवार ता० २ ,,	मौनी अमावस महोदयपर्व शनैश्चरी ३० प्रयागस्नान

माघ शुक्ल	१ रविवार ता० ३	,,	चन्द्रदर्शन
	५ बुधवार ता० ६	,,	वसन्त पञ्चमी श्री ५
	७ शुक्रवार ता० ८	,,	अचला (रथ) सप्तमी
	८ शनिवार ता० ९	,,	भीष्माष्टमी
	११ मंगलवार ता० १२	,,	कुम्भसंक्रान्ति मु०१५ पुण्यकाल २२।१०या० जया ११व्र.
	१२ बुधवार ता० १३	,,	प्रदोष व्रत
	१३ गुरुवार ता० १४	,,	गुरुपुष्ययोग
	१४ शुक्रवार ता० १५	,,	सत्य व्रत श्रीरामचरणमहाप्रभु जयन्ती
	१५ शनिवार ता० १६	,,	माघस्नान समाप्ति
फाल्गुन कृष्णा	३ मंगलवार ता० १९	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।१७
	७ शनिवार ता० २३	,,	श्रीसीता जयन्ती ८
	९ सोमवार ता० २५	,,	समर्थ श्रीरामदास ९ जयन्ती
	११ बुधवार ता० २७	,,	विजया एकादशी व्रत
	१३ शुक्रवार ता० १	मार्च	प्रदोष व्रत मार्च
	१४ शनिवार ता० २	,,	श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत
	३० रविवार ता० ३	,,	अमावस्या
फाल्गुन शुक्ल	२ मंगलवार ता० ५	,,	चन्द्रदर्शन श्रीरामकृष्णपरमहंस जयन्ती
	७ रविवार ता० १०	,,	होलाष्टकारम्भ
	११ बुधवार ता० १३	,,	आमला एकादशी व्रत
	१३ शुक्रवार ता० १५	,,	प्रदोष व्रत
	१५ रविवार ता० १७	,,	होलिकादहन सत्यव्रत (होली)
चैत्र कृष्णा	१ सोमवार ता० १८	,,	धूलिवन्दन, श्वपचस्पर्श, आम्रपुष्पप्राशन
	४ गुरुवार ता० २१	,,	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे० टा० ९।४८
	७ सोमवार ता० २५	,,	श्री शीतला ७ पूजन
	८ मंगलवार ता० २६	,,	शीतलाष्टमी
	११ शुक्रवार ता० २९	,,	पापमोचनी एकादशी व्रत
	१२ शनिवार ता० ३०	,,	शनिप्रदोष व्रत
	१३ रविवार ता० ३१	,,	वारुणीपर्व गंगास्नान
	१४ सोमवार ता० १	अप्रैल	चैत्र १४, अप्रैल, मेला पृथूदक (कुरुक्षेत्र)
	३० मंगलवार ता० २	,,	भौमवती अमावस
चैत्र शुक्ल	१ बुधवार ता० ३	,,	चान्द्रसंवत्सरारम्भ, नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, तैलाभ्यङ्ग निम्बपत्रप्राशन चन्द्रदर्शन श्रीगौतम जयन्ती
	३ गुरुवार ता० ४	,,	मत्स्यजयन्ती गणगौरीपूजन
	८ मंगलवार ता० ९	,,	श्रीदुर्गाष्टमी अशोकाष्टमी भवान्युत्पत्तिः
	९ बुधवार ता० १०	,,	श्रीराम ९ व्रत श्रीस्वामीनारायण जयन्ती



माघकी तेजी मन्दी और विशेष चान्स

[लेखक—श्री पं० विशुद्धानन्द गौड़ ज्यौतिषाचार्य]

विशेष चांस

पौष शु० ११ से ग्वार, बाजरा, जौ, चना, गेहूंके भावोंमें मन्दीका योग बन गया है और यह मन्दी घटते वढ़ते भावोंमें माघ वदी ३० तक अवश्य ही स्थायी रहेगी। माघ वदी अमावस बाद बाजार भाव रुख तेजी पर होगा। ग्रहोंकी संक्रमण, उदय, अस्त व्यवस्थासे मन्दीका विचार धान्योंमें तो निश्चित प्राय है। व्यवहारिक अनुमानसे बाजरा आदि भावमें ।।=) मनकी मन्दी अवश्य आ जानी पूर्ण संभव है।

रुई, कपासमें तेजी। घी, तेलमें पौष शु० ११ से माघ अमावस तक मन्दीके योग पाये जाते हैं। व्यापारी बन्धु उपरोक्त विचारांशको ध्यान रखते हुये लाभ उठावेंगे।

माघ मासका सारांश

इस मासमें पांच शुक्रवार और पांच शनिवार हैं। सुदीमें वृहस्पति वक्री है। कुम्भकी संक्रान्ति भी १५ मुहूर्ती एवं बैठी स्थितिमें है। इन सब ग्रहोंकी विचार–स्थिति–विमर्शसे इस मासका निम्न-लिखित वस्तुओंमें निम्न फल बनता है। यह धारणा विचारसे दिया जा रहा है।

सोना चांदी

माघके प्रथम सप्ताहमें सोना, चांदी मन्दे अधिकांशमें रहेंगे। तेजी साधारण रहेगी। मन्दी आने पर खरीद करना ठीक रहेगा। दूसरे सप्ताहमें पहले कुछ साधारण तेजी आ कर फिर बाजार मुलायम होगा। तीसरे सप्ताहमें पहले तेजी, फिर मन्दा। चौथे सप्ताहमें पहले तेजी, फिर मन्दी। माघ सुदी ११ के आसपास अच्छी तेजीके आनेका योग है। इससे पूर्व तृतीय सप्ताहमें सोना, चांदी खरीदनेसे और चौथे सप्ताहके आरम्भमें बेचनेसे अच्छे लाभ होनेका योग प्रतीत होता है।

रुई

माघ वदी १ से ६ तक मन्दीका साधारणयोग है, सो खरीदना अच्छा प्रतीत होता है। ६ से १३ तक तेजी, तेजी आने पर बेचना भी ठीक है। १३ से सुदी ३ तक मन्दी साधारण। सुदी तीजके बाद बराबर योग तेजीका है। हर गिरते भाव रुईका खरीदना ही मूल्यवान् है।

वदी की अपेक्षा सुदीमें अच्छी तेजी है।

नोट:—रुईके भावोंके सम्बन्धमें मन्दीकी साधारण स्थिति होते ही खरीद करने वाले व्यापारी लाभ उठावेंगे। रुईमें जरीला रुई मई वायदा भी काफी तेज हो जायगा ५००) के अन्दाज भाव पहुंच जाने पूर्ण संभव है। तैयारमें भी रुईके भाव काफी तेजी लावेंगे। अमरीकन, सिन्ध, पंजाब, बंगालकी रुईके भावोंमें भी प्रति मन ५) ६) तेज हो जाने की पूर्ण सम्भावना है। सम्वत् २००३ के माघकी अपेक्षा २००४ के माघ तक रुईके भावोंमें दूनी तेजीका योग पाया जाता है। तुलाराशिके बाद वृश्चिकके आरम्भकी गुरु ग्रहकी चाल सर्वथा तेजीकों ही बतलाती है। जब २ भी ये योग बने हैं बराबर तेजी आई है। इसलिये हर घटे भावोंमें खरीद करने वाले व्यापारी बन्धु लाभ उठावेंगे।

सरसों, अलसी, एरंडा, सींगदाना

माघवदी पहले पक्षमें तेज, दूसरेमें मन्दी,

तीसरेमें भी मन्दी। तीसरे सप्ताहके आखीरके दिनों से बाजार तेज हो जायेगा।

ग्वार, जौ, बाजरा

माघ वदी १ से ७ तक मन्दीके योग हैं। ८ से अमावस तकके भावोंमें विशेष मन्दी नहीं है, भाव रुकेसे रहेंगे, रुख मुलायम रहेगा। अमावससे भाव सम्भलेगा। तीसरे सप्ताहसे बाजार भाव तेज हो जायेंगे। पूर्णमासी तक ।=) मनकी गर्मी भावोंमें आनी पूर्ण सम्भव है। इसलिये माघवदीमें आरम्भमें बेचने वाले लाभ उठावेंगे। मकर संक्रान्तिका असर मन्दीका है। माघ वदीके प्रथम सप्ताहमें ग्वार, जौ, बाजरा मंदा रहेगा। माघके सोदोंमें पहले बेचके कार्य करने वाले लाभ उठावेंगे। माघ वदी अमावससे खरीदका ध्यान बना लेने वाले लाभ उठावेंगे।

तेजीका असर माघसुदी ७ के बाद आवेगा। वसन्तपञ्चमी तक मुलायमकी ही स्थिति रहेगी, तीसरे सप्ताहसे तेजी हो जानेके योग पाये जाते हैं।

धान चावल बिनौला—

माघवदी १ से ६ तक मन्दी। ७ से १३ तक तेज। १३ से सुदी ३ तक मंदी। सुदी ४ तक तेजी।

खाण्ड—गुड़--शक्कर—

गिरे भाव गुड़, खाण्ड, शक्करकी खरीदकी राय है। माघसुदी ३ तक खरीद करनेका सुनहरी चांस है, बादमें बाजार सुरखी चाहता है।

माघकी दैनिक तेजी मन्दी

माघ कृ० १ शुक्रवार ता० १८ जनवरी रुई, चांदी, सोना तेज। ज्वार, जौ, बाजरा मंदे। गुड़, शक्कर खांड भाव मंदा, सरसों मंदी।

माघ कृ० २ शनि० ता० १९ जनवरी—रुई तेज। सोना, चांदी, मंदे। गुआर, जौ, बाजरा, तेज। गुड़ शक्कर, खांड, तेज। सरसों, तिल, तेल, घी तेज।

माघ कृ० ३ रवि० ता० २० जनवरी—रुई तेज, सोना, चांदी तेज। ग्वार, जौ, बाजरा तेज। गुड़, शक्कर, खांड तेज। सरसों, तिल, एरण्डा, घी तेज। आरम्भमें ही यह सब खरीदनेका दिन है।

माघ कृ० ४ सोम० ता० २१ जनवरी—रुई भाव मंदा। सोना, चांदी मंदा। गुआर, जौ, बाजरा मंदा। गुड़, शक्कर, सरसों, लोहा, घी मंदा। यह बेचान करनेका दिन है।

माघ कृ० ५ मंगल ता० २२ जनवरी—रुई, सोना, चांदी तेज। ग्वार, बाजरा भाव सम। रुख बाजार मंदीकी तरफ रहेगा।

माघ कृ० ६ बुध ता० २३ जनवरी—रुई, सोना, चांदी आरम्भमें तेज बादमें मंदे। ग्वार, बाजरा भाव मंदा। रुई, कपास, घी तेज।

माघ कृ० ७ बृह० ता० २४ जन०—रुई भाव मंदा। सोना, चांदी मंदा। ग्वार, बाजरा पहिले मंदा खरीदना चाहिये भाव बादमें तेज। गुड़, सरसों, रङ्ग, किराना, भाव तेज।

माघ कृ० ८ शु० ता० २५ जन० में खरीदना चाहिये भाव बादमें रुई, सोना, चांदी, गवार, बाजरा घी, गुड़, शक्कर, सरसों, तिल, तेल तेज हों।

माघ कृ० ९ शनि ता० २६ जन०—भाव सब चीजोंमें रुख मंदा, खुलते भाव बाजार बेचका ठीक जंचता है।

माघ कृ० १० रवि० ता० २७ जनवरी—रुई, सूत, रेशम, भाव तेज। सोना, चांदी पहिले मंदा फिर तेज। ग्वार, बाजरा, जौ, भाव मंदा।

माघ कृ० ११ सोमवार ता० २८ जन०—रुई भाव मंदा। सोना, चांदी पहिले मंदा, फिर तेज। ज्वार, बाजरा, भाव मंदा।

माघ कृ० १२ मङ्गल ता० २९ जन०—रुई भाव पहिले मंदा फिर तेज। सोना, चांदी तेज। ग्वार, बाजरा, जौ, गेहूं, चना मंदा।

माघ कृ० १२ बुधवार ता० ३० जन०—रुई भाव तेज। सोना, चांदी तेज। ग्वार, बाजरा, जौ, चना तेज, फिर मंदा।

माघ कृ० १३ गुरु० ता० ३१ जन०—रुई, भाव मंदा होगा, बेचना श्रेष्ठ। ग्वार, जौ, बाजरा मंदा। सोना, चांदी पहिले तेज, फिर मंदा।

माघ कृ० १४ शुक्र० ता० १ फरवरी—रुई भाव तेज। ग्वार, बाजरा, जौ, चना तेज। सोना, चांदी तेज।

माघ कृ० ३० शनि० ता० २ फरवरी—रुई, सूत रेशम मंदी। ग्वार, जौ, चना तेज, सोना, चांदी तेज। सरसों, घी, तिल, तेल तेज।

माघ शुक्ल १ रवि० ता० ३ फरवरी—चन्द्रदर्शन वक्री शनि रुई, कपड़ा, सूत तेज। ग्वार, बाजरा, जौ तेज। चना, सरसों, एरण्डी तेज। बिनौला, लोहा तेज। उड़द, मूंग, मसूर तेज। पहिले खरीदना शुभ है।

माघ शुक्ल २ सोमवार ता० ४ फरवरी—घनिष्ठा मे शुक्र भाव सब बस्तुओंमें तेज करता है।

माघ शु० ३ मंगल० ता० ५ फरवरी—घनिष्ठामें रवि भी सब चीजोंमें कुछ तेजी चाहता है। गेहूँ, ग्वार ,जौ, बाजरा खरीदना अच्छा है।

माघ शु० ५ बुध० ता० ६ फरवरी—भाव सभी चीजोंमें साधारण तेजीके होंगे। तिथि क्षय है। वैसे भी योग इस दिन तेजीका है। पहिले तेज होकर २ बजे बाद बाजार भाव मुलायम होगा। बसन्त पञ्चमी बादमें मंदा करेगी।

माघ शु० ६ गुरु० ता० ७ फरवरी—भाव बादमें तेज होंगे, खरीदनेका दिन है। बाजार भाव—रुई, सोना, चांदी, पीतल तेज होंगें। ग्वार, बाजरा, जौ, सरसों तेज।

माघ शु० ७ शुक्र० ता० ८ फरवरी—रुई, सूत, रेशम, कपड़ा मंदा। सोना, चांदी तेज। ग्वार, जौ, चना, बाजरा मंदा। सरसों, गुड़, शक्कर मंदा।

माघ शु० ८ शनि० ता० ६ फरवरी—रुई, सूत, कपड़ा मंदा। ग्वार, जौ, बाजरा मंदा। सरसों, गुड़, खांड मंदी।

माघ शु० ६ रवि० ता० १० फरवरी—कुम्भमें शुक्र आया है, रुईमें काफी तेजीका योग बनाता है। यह तेजी १५ दिन बाद अच्छी खिलेगी। सोना, चांदी, जौ, ग्वार, बाजरा, गेहूँ तेज।

माघ शु० १० सोम० ता० ११ फरवरी—रुई, सोना, चांदी मंदा। ग्वार, बाजरा, जौ, चना तेज।

माघ शु० ११ मंगल ता० १२ फरवरी—आज दिन कुम्भकी संक्रान्ति १५ मुहूर्त्ती धान्योंमें तेजी करती है। गेहूं, ग्वार, ज्वार, जौ, बाजरा, चनाके भाव तेज होंगे। रुई, सोना चांदी भाव भी तेज होंगे।आज दिन शनिभौमकी युति राहुके साथ बन रही है यह प्रजामें पीड़ा और व्यापारी प्रत्येक वस्तुओं में उलट फेर करती है। भाव बाजार रुख सब चीजोंमें तेजीका होगा—

माघ शु० १२ बुधवार ता० १३ फरवरी—आज दिन बृहस्पतिका वक्री होना रुईमें तेजीका योग बनाता है। गुड़, शक्कर, खाण्ड, तेज। ग्वार, जौ, बाजरा, गेहूँ, चना, तेज। सोना, चांदी तेज।

माघ, शु० १३ गुरुवार ता० १४ फरवरी—रुई, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, ग्वार, जौ, बाजरा, सरसों, बिनौला, तिल, तेल, तेज। गुड़ शक्कर मन्दा।

माघ, शु० १४ शुक्रवार ता०१५ फरवरी—रुई, सोना, चांदी, ग्वार, बाजरा, चना, गेहूं, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तैल और किराना मन्दा। रङ्ग तेज।

माघ, शु० १५ शुक्रवार ता० १६ फरवरी—सोना चांदी मन्दी। कपास रुई तेज। गेहूं, चना, ग्वार, जौ, बाजरा, मन्दा। सरसों तिल तेल तेज।

व्यापारिक तेजी-मन्दी और ज्योतिष

[लेखक—श्री प्रोफेसर बी० सी० महता एस्ट्रोलॉजर कमर्शियल एडवाइजर]

गत शरदङ्कके लेखमें जो कि पृष्ठ ७८ में प्रकाशित हुआ था मैंने रुईके व्यापारियोंसे ता० ७ नवम्बरसे ही तेजीका व्यापार शुरू करनेका अनुरोध किया और पूरे दिसम्बर मास तक जनरल रुख तेजीकी बतलाई थी उसीके अनुसार बराबर रुईने अपना रंग दिखाया और आशासे अधिक बाजार भड़क गया, जिससे ज्योतिष पर आधार व विश्वास न रखने वाले मनुष्योंने भी उक्त भविष्यवाणीसे लाभ उठाया। अब जनवरीमें रुईके बाजार की क्या स्थिति रहेगी इसका विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, नहीं तो कहीं ऐसा न हो कि पोतेमें पड़े हुए व्यापारी ठीक समय पर अपना खरीदा हुआ माल नहीं निकाल सके और मन्दीका झटका आ उपस्थित हो और व्यापारी महाशय लाभसे वंचित रहजायें।

जनवरीका महीना रूईके व्यापारियोंके लिये कम महत्त्वका नहीं हैं, क्योंकि इस महीनेमें ऐसे योगायोग बनेहैं कि भारतका प्रत्येक व्यापारी रुईमें भारी तेजीकी धारणा व स्वप्न देखे और रुईमें बजाय तेजीके जबरदस्त मन्दी आजाय। अतः हमारा पाठकोंसे अनुरोध है कि जिन २ महाशयोंने रूईका व्यापार नवम्बर और दिसम्बरमें तेजीका किया हो वे सब जनवरीकी १० तारीखके पहले २ अपना सब पोतेका माल बेचदें और चुपचाप नफा खालें। किन्तु मन्दीका नया व्यापार न करे, क्योंकि अभी कुछ महीनों तक हम प्यारे पाठकोंको यह सलाह देते हैं कि रुईके व्यापारमें अपना यह खास सिद्धान्त बनायें कि पहले खरीदो और बादमें बेचो। अर्थात् मन्दीके रिएक्शनमें खरीदो और तेजी आनेपर नफा खाओ। लिहाजा ता० १० जनवरीके पहले अपना सब पोते का व्यापार खतम करके शांतिसे बैठ जाइये। और मन्दीका इन्तजार करिये। हमारा ऐसा ख्याल है कि ता० २० या २५ जनवरी तक रुईके मार्केटमें काफी अच्छी मन्दी आजायगी। बस तारीख २५ से ही फिर पोतेमें पड़ जावें और धीरे २ रुई खरीदते जावें, अबसे रुई इकतरफी तो नहीं बढ़ेगी किन्तु मन्दीके रिएक्शनके साथ बाजार तेजीकी तरफ बढ़ेगा।

फरवरीके पहले सप्ताहमें ही बाजार काफी तेज हो जाएगा। ता० ३ फरवरीसे बाजार इकतरफा जावेगा। ता० ११ से फिर विशेष जोर पकड़ेगा और तारीख २३ फरवरीसे फिर तेजीकी तरफ भड़केगा। इस बीच थोड़े २ मन्दीके रिएक्शन आवेंगे जरूर लेकिन वो झूठी अफवाहों व सटोरियोंकी चालोंके सिवाय और कुछ नहीं समझना चाहिये। फरवरीका महीना तेजी की तरफ ही रहेगा।

मार्च महीनेमें दुतरफी घटा बढ़ी रहेगी। ता० २ को तेजी, ता० ४को मन्दी, फिर ता० ६-१०-११ १२ और १३ को तेजी रहकर ता०१७-१८-१६-२३ २६ और २८ अच्छी मन्दीके रीएक्शन आवेंगे। सो ध्यान रहे।

चांदी सोनेके मार्केटमें जनवरीके प्रथम सप्ताहमें तेजी रहेगी और बादमें बाजार मन्दा हो जावेगा। विशेष मन्दीका जोर ता० १२ से २७ के बीचमें है, लेकिन मन्दी इकतरफी नहीं आकर घटा बढ़ीके साथ आवेगी। जनवरीमें मुमकिन है चांदी १२०के करीब व सोना ७२-७३ करीब बिक सकता है, लेकिन मंगल और शनि दो प्रबल ग्रह तेजीकी तरफ हैं, लिहाजा

अप्रैल तक चांदी सोनेकी मन्दीमें समय २ पर ये ग्रह रोड़ा अटकावेंगे।

जनवरीमें चांदी सोनेकी घटा बढ़ीकी तारीखें निम्न लिखित हैं।

तेजी — २-३-४-५-६-८-११-१५-१६-२३-२६ और ३०, बाकी सब मन्दीकी तारीखें समझनी चाहिये।

फरवरीमें चांदी सोनेमें वापिस बाजार भड़केगा। ता० १ से ४ तक तेजी और ५-६ मंदी होकर फिर ता० १५ तक घटा बढ़ीके साथ बाजार तेजीकी तरफ ही रहेगा, उसकेबाद ता० २३ तक मंदीका ट्रेण्ड नजर आता है और फिर बाजार तेजीकी तरफ बढ़ेगा। ता० २७-२८को अच्छी तेंजीकी सम्भावना है।

मार्चका महीना चांदी सोनेमें अच्छी तेजी बतलाता है। ता० ६ से तो बाजार भड़क जावेगा। इस महीनेमें चांदीसे भी ज्यादा सोनेमें घटा बढ़ी होगी जनरल व्यापार तेजीका करना चाहिये। शेयरके लिये भी यह महीना तेजीका नजर आता है।

मंदीकी तारीखें:—ता० ४-७-१६-१८-२३-२६-२८ और ३१ हैं, बाकी सब तेजीकी तारीखें समझनी चाहिये। विशेष अगले लेखमें।

तीन मासका साप्ताहिक भविष्य-प्रकाश

ग्वार, बाजरा, मक्की, तारामीरा, गेहूँ, रुई, सोना, चांदी आदिकी तेजी-मन्दी

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]



प्रथम सप्ताह ता. १२ से १८ जनवरी तक

इस सप्ताहमें तीन दिन तेजी ४ दिन मन्दी। पहिले ता. १२ चांदी,सोना, रुई खरीदो और ता०१५ को डबल बेचो। मूंग, गुवार, बाजरा,चावल, वायदा माघ बेचना ठीक है। किन्तु बीचमें १५दिनके अन्दर मुनाफा मिले तो छोड़ो नहीं ऊंचे भावोंमें फिर बेचो।

दूसरा सप्ताह ता. १९ से २५ जनवरी तक

इस सप्ताहमें प्रायः चांदी, सोने, रुईके भाव एक विदेशी खबरोंसे मन्दे जायेंगे। किन्तु अधिक गिरने की सम्भावना नहीं है, घटे भाव खरीदनेकी राय हैं। ४ दिन मन्दी ३ दिन तेजीके रहेंगे। बाजरा, चावल, गुवार मन्दीमें आकर तेज होंगे। तारामीरा कालीमिर्च बारदाना, वायदा मार्च बेचना लाभकारी होगा। मूंग, गुवार, अलसीकी आखरी तेजी है बेचो।

तीसरा सप्ताह ता० २६ से २ फरवरी तक

इस सप्ताहमें चांदी, सोना रुई एक प्रखर तेजीमें होंगे। ता० २६ को घटे भाव खरीदो। ता० २९।३० में मन्दी देखो तो और खरीदो, शनिवारी अमावस अच्छा मुनाफा पेश करेगी। अलसी, बाजरा, बारदाना, तिल्ली, गुवार, चावल, घटे भाव खरीदनेकी राय है।

चौथा सप्ताह ता० ३ से १० फरवरी तक

इस सप्ताहमें बाजार सम रहेगा। २) ३) टके चांदीमें ३) सोनेमें दिन ४ मन्दी ३ तेजी रहेगी, घटे भाव खरीदो, ऊंचे भावोंमें बेचो लाभ हो जायगा, किन्तु ता० ५ की तेजीमें लक्ष रखना चतुर सटोरिया का काम है। तिथिका क्षय यदि तेजी ता० ५ की रही तो बाजार तेजीमें इकतरफा रहेगा यदि इसदिन मन्दी आई तो बाजारोंमें अच्छी मंदी आनेकी सम्भावना

हैं, ता० ५ को तेजीमें बेचने वाले अच्छा लाभ उठालेंगे, अलसी, बाजरा, गुवार, मन्दीमें खरीदो।

पांचवां सप्ताह ता० ११ से १८ फरवरी तक

इस सप्ताहके ग्रहयोग तीन बड़ोंके अच्छे सम्बन्ध से एक खासा मन्दी लायेंगे। चांदी, सोना, बारदाना, चावल, रुई, बिनोला, बाजरा, अलसी ३ दिन तेजी दिखा कर ४ दिन जबरदस्त मन्दीका अनुभव करेंगे व्यापारी सावधान। ता० १४ के १० बजेतक मन्दी न देखो — तो सौदा खड़ा मत रखो, फौरन पोतेमें हो जाओ, कारण ता० १४ को उल्कापातके योगोंसे खेती को हानि और एशियामें राजाप्रजामें गृहयुद्ध होनेसे मन्दीकी चाल अनुभव न हो सके।

छठा सप्ताह ता० १८ से २५ फरवरी तक

इस सप्ताहमें ४ दिन तेजी ३ दिन मन्दी। चांदी, सोना, रुई ता० १८ को खरीदो, २० को बेचो लाभ होगा। बाजरा, मक्की, गुवार मन्दीमें खरीदो। तारामीरा, कालीमिर्च वायदा बैशाख बेचना ठीक है। मूंग, अलसी, तिल्लीके भाव मन्दे रहेंगे।

सातवां सप्ताह ता० २६ से ५ मार्च तक

इस सप्ताहमें दो दिन मन्दी ५ दिन तेजी रहेगी। ता० २६ को चांदी, सोना, रुई बेचो। २८ को डबल खरीदो, ५ तक लाभ हो जायगा। गुवार, बारदाना, मक्की, चावल, खरीदो, वायदा बैशाख २१ दिनमें अच्छा लाभ हो जायगा। तारामीरा, कालीमिर्च मन्दीकी तरफ रहेंगे।

आठवां सप्ताह ता० ६ से १३ मार्च तक

इस सप्ताहमें ४ दिन मन्दी ३ दिन तेजी। ता० ५ को सोना, चांदी बेचो, ७ को डबल खरीदो लाभ हो जायगा। रुई, गुवार, चावल, मक्की बाजरेमें तेजी आयेगी; मिलता मुनाफा उठा लें, आगे गल्लेके ग्रह भारी मन्दीमें हैं। रुई जरीला, कालीमिर्च, शीगदाना, अलसी, अरण्डा वायदा बैशाख बेचो मन माना लाभ सामने होगा। सावधान चार ग्रह वक्री जबरदस्त तेजीमें हैं, मन्दीकी लाईन सिर्फ आपको खरीदका मौका देगी।

नवमा सप्ताह १४ से २१ मार्च तक

इस सप्ताहमें ५ दिन तेजी दो दिन मन्दी। ता० १४ को चांदी, सोना, रुई खरीदो, १६ तक लाभ। यदि ता० १६ को मंदी आवे तो और खरीदो, ता० १८ को बेचने पर लाभ रहेगा। बाजरा, मक्की, गुवार, सम। कालीमिर्च, तारामीरा तेज होकर मंदे। मूंग, तिल, तेल मंदीमें।

दशवां सप्ताह ता० २२ से २८ मार्च तक

इस सप्ताहमें ४ दिन मंदी ३दिन तेजी। ता०२२ को रातके भावोंमें सोना, चांदी, रुई बेचो। ता० २५ को डबल खरीदो। ता० २ तक अच्छा लाभ सामने होगा। मक्की, चावल, गुवार, तारामीरा, कालीमिर्च मंदीमें खरीदनेकी राय दे रहे हैं, १५ दिनमें लाभ।

ग्यारहवां सप्ताह ता०२९ मार्चसे ४ अप्रैल तक

इस सप्ताहमें तेजी ४ दिन, ३ दिन मन्दी। ता०२९ चांदी, रुई, सोना डबल खरीदो। ता० २ को डबल बेचो लाभ सामने होगा। चावल, गुवार, मक्की साधारण।=) मनकी तेजी-मंदीमें नफा उठा लेना सच्चा काम है। तारामीरा, कालीमिर्च तेज होकर मंदे होंगे। ता० २२ की खरीदका नफा लो और बेचो।

बारहवां सप्ताह ता० ५ से १२ अप्रैल तक

इस सप्ताहमें तेजी ३ दिन, ५ दिन मंदी। चांदी, सोना, रुई ता० ४ को खरीदो। ता० ७ को डबल बेचो। इस सप्ताहमें मंदीके जबरदस्त योग हैं, चांदी में १६) सोनेमें १२) रुईमें ६०)।



त्रैमासिक राशिफल

[लेखक—श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य]



ता० १३ जनवरी से १२ फरवरी तक

किस राशि वालोंको व्यापार कैसा रहेगा ?

मेषः—चांदी, रुई, गुवार, बाजरा, श्रेष्ट। ताः १५ १६।२६।३१।४।१२ लाभकारक। सोना अलसी मूंग चावल मक्की सम, कालीमिर्च तारामीराका व्यापार नुकसानदायक होगा।

वृषभः—गुवार, बारदाना सोना चांदी श्रेष्ठ। वायदा माघ श्रेष्ठ। कालोमिर्च अरैंडा सींगदाना मध्यम। बारदाना पाट नेष्ट।

मिथुनः—चांदी अलसी गुवार रुई श्रेष्ठ। १६।२०।२७।५।११। श्रेष्ट। सोना, कालीमिर्च, बारदाना मध्यम। काकड़ा, तिल्ली, मूंग मक्को, चावल, बेचने से लाभ। गल्ला नेष्ट।

कर्कः—रुई, चांदी, शेयर श्रेष्ठ। ता० १७।२१ २८।३।७।१२ श्रेष्ठ। बारदाना पाट मध्यम। कालीमिर्च नेष्ट।

सिंहः—शेयर बारदाना हैसीयन चांदी गुवार श्रेष्ठ। ता० १४।१८।२२।२८।४।६।१२ श्रेष्ट। मक्की गुवार अलसी मध्यम। काली मिर्च लोहा तिल्ली नेष्ट।

कन्याः—तारामीरा मूंग अलसी चांदी, सोना श्रेष्ट। ता० २५।३०।५।७।८।११ श्रेष्ट। मक्की बाजरा मध्यम। जूट लाख चपड़ा नेष्ट

तुलाः रूई चांदी अलसी श्रेष्ट। ता० १८।२४।२६ ३१।२६।६। श्रेष्ट। कालीमिर्च बाजरा गुवार मध्यम तिल तेल नेष्ट।

वृश्चिकः—सोना शेयर रेश लाटरीसे लाभ। ता० १२।२०।२७।३।१० श्रेष्ट। चांदी रूई मध्यम। गुवार बारदाना कालीमिर्च एरंडाकी खरीद हानिप्रद।

धनुः—चांदी रूई अलसी गुवार श्रेष्ट। ता० १३ २३।२४।३०।२।४।८।१२ श्रेष्ट। सोना कालीमिर्च मक्की बाजरा मध्यम। चावल तारामीरा हानिप्रद।

मकरः—मूंग अलसी वारदाना शेयर जूट धान्य श्रेष्ट। ता० २१।२७।३०।६।११ श्रेष्ट। चांदी, सोना रुई मध्यम। बाजरा गुवार मक्की हानि प्रद।

कुम्भः—चांदी सोना पाट गुवार श्रेष्ट। ता० १८ २८।२६।२।६।१२ श्रेष्ट। अलसी बाजरा नेष्ट, बाकी मध्यम।

मीनः—सोना चांदी रूई श्रेष्ठ। ता० १२।२२ २६।५।६ श्रेष्ट। बाजरा मक्की चावल मध्यम। कालीमिर्च तारामीरा नेष्ट।

ता० १३ फरवरीसे १४ मार्च तक—

किस राशिको कौनसी वस्तुका व्यापार ठीक रहेगा ?

मेषः—सोना पाट लाख चपड़ा अलसी बारदाना रेश लाटरीसे लाभ। ता० १५।१८।२३।३१।५।६।१३ श्रेष्ट। गुवार चांदी बाजरा मध्यम। कालीमिर्च किराना कपड़ा नेष्ट। स्टाक हानिप्रद होगा।

वृषभः—चांदी रुई बिनौला अलसी श्रेष्ट। ता० १४, १८, २२, २६, २७, ४, ६, १२, श्रेष्ट। बाजरा कालीमिर्च पाट शेयर फीचर मध्यम। मक्की कपड़ा लौहाका स्टाक हानिप्रद।

मिथुनः—चांदी अलसी बारदाना, पाट सोना श्रेष्ठ। ता० १६, २४, २६, ४, ६, ८, १०, श्रेष्ठ। सोना रुई काली मिर्च तारामीरा बाजरा गुवार मध्यम। एरण्डा शींगदाना फीचर नेष्ट।

कर्कः—चांदी सोना रुई फीचर लाटरी श्रेष्ठ। ता० १३, १५, २१, २४, २६, ३, ४, ६, ११, श्रेष्ट। बाराज मक्की गुवार साधारण। कालीमिर्च बारदाना नेष्ट।

सिंहः—सोना पाट लाख चपड़ा बाजरा, चावल फीचर शेयरके व्यापारसे लाभ। ता० १७, २३, २४, २८, १, ३, ७, श्रेष्ठ। चांदी रुई गुवार मध्यम। कालीमिर्च तारामीरा नेष्ट।

कन्याः—मूंग अलसी बारदाना चांदी सोना श्रेष्ठ। ता० १३, १६, २२, २८, २, ४, ६ श्रेष्ठ। शेयर गुवार बाजरा मक्की चावल नेष्ट।

तुलाः—रुई फीचर चांदी लाटरीसे लाभ। ता० १५, १६, २४, १, ८, १२, श्रेष्ठ। बाकी मध्यम।

वृश्चिकः—अलसी शेयर बारदाना फीचर चांदी सोना श्रेष्ठ। ता० १६, २०, २५, २७, ३, ६, १२, श्रेष्ठ। गुवार बाजरा चावल साधारण लाभकारी होंगे। थोड़े नफेमें सौदा बराबर करते रहो।

धनुः—चांदी, सोना गुवार रुई फीचर श्रेष्ठ। ता० १५, १६, २३, २५, ३, ४, ६, १२, श्रेष्ठ काली मिर्च बारदाना एरण्डा बाजरा चावल साधारण।

मकरः—सोना शेयर बाजरा चावल मक्की श्रेष्ठ लाभकारी। ता० १७, २६, १, ५, ८, १२, श्रेष्ठ। चांदी रुई बिनौला मध्यम, बाकी नेष्ट।

कुम्भः—चांदी रुई फीचर शेयर गुवार श्रेष्ठ। ता० १७, २१, २५, २६, ३, ७, १० श्रेष्ठ। बाजरा बारदाना गुवार मध्यम, काली वस्तु नेष्ट।

मीनः—चांदी सोना बाजरा गुवार, चावल मक्की के व्यापारसे लाभ हो। ता० १४, १८, २२, २६, ४, ८, श्रेष्ठ। रुई फीचर पाट नुकसानदायक।

ता० १४ मार्चसे १३ अप्रैल तक

किस राशि वालेको किस वस्तुका व्यापार कैसा रहेगा?

मेषः—चांदी, सोना, रुई, अलसी, फीचर, शेयरसे लाभ। ता० १४, १७, १६, २२, २४, १, ४, ५, ८, १३, श्रेष्ठ। बाकी सब मध्यम।

वृषभः—रुई सोना शेयर बारदाना गुवारसे लाभ। ता० १७, २१, २७, ३, ७, ५, ६, श्रेष्ठ बाकी सब वस्तु मध्यम।

मिथुनः—अलसी एरण्डा कालीमिर्च बारदाना सोनासे लाम। ता० १४, २०, २२, २७, ३०, १, ४, ७, १२ श्रेष्ठ। बाकी सब मध्यम।

कर्कः—बाजरा, मक्की, चावल, चांदी, सोना, तारामीरा तोरियासे लाभ श्रेष्ठ। बाकी वस्तु मध्यम लाभ कारी समझें। ता० १५, २१, २८, ४, ६ श्रेष्ठ।

सिंहः—चांदी, सोना, रुई, शेयर, लाख, पाट, हैसियन, चमड़ासे लाभ। ता० १८, २३, २८, ३०, १, ४, ६, १३, श्रेष्ठ। बाकी सब मध्यम।

कन्या—चांदी, गुवार, चावल, बाजरा, मक्की, अलसीसे लाभ। ता० २१, २६, २६, ३०, २, ४, १०, लाभकारी। सब वस्तु व्यापारमें मध्यम रहेगी।

तुला—चांदी, रुई, अलसी, सरसों, तिल, तेल, घृत, गुवारसे लाभ। ता० १४, १६, १६, २१, २७, ३०, ३, ७, ६, १३ श्रेष्ठ, बाकी मध्यम।

वृश्चिकः—अलसी, सरसों, बारदाना, पाट, रुई, फीचर, लौटरी, सोनेसे लाभ। ता० १३, १५, २१, २४, २६, ४, ५, ११ श्रेष्ठ, बाकी मध्यम।

धनुः—चांदी, सोना, रुई, बारदाना, फीचर शेयर लाभकारी, बाकी सर्व वस्तुका व्यापार मध्यम। ता० १४, १६, २१, २४, २७, ३, ५, ७, १३ श्रेष्ठ।

मकरः—अलसी, सरसों, पाट, एरंडा, रुई, फीचर, बिनौलासे लाभ बाकी मध्यम, चांदी, सोनामें स्टाक हानिप्रद रहेगा। ता० १८, २२, २६, २, ६, ८ श्रेष्ठ।

कुम्भः—चांदी, रुई, फीचर, शेयरके व्यापारसे लाभ बाकी सर्व वस्तु मध्यम। ता० १४, १६, २१, २२, २५, २६, २, ४, ८, १२ श्रेष्ठ।

मीनः—चांदी, सोना, रुई, गुवार, फीचरसे लाभ हो। बाजरा, मक्की, चावलमें मामूली लाभ, बाकी सर्व वस्तु मध्यम रहेंगी। ता० १८, २२, २६, ३०, २, ४, ८, १० श्रेष्ठ।

सूचना

यह राशिफल केवल इसलिये दिया गया है कि व्यापारी सदा अपने कार्यके पहिले नामसे राशि जानकर प्रत्येक महीनेमें यह देख लें कि हमको किन किन वस्तुओंसे लाभ हैं, उन्हींका व्यापार करें। सम और हानिकारक वस्तुओंका व्यापार थोड़ा करें या थोड़े नफे नुकसानमें बराबर करके स्टाक न रखें।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य-प्रकाश

[ले०—श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्यौतिषाचार्य्य]

तेजी-मन्दीके गूढ़ रहस्यको 'नरपतिजयचर्य्या' नामक ग्रन्थमें त्रैलोक्यदीपक सर्वतोभद्र-चक्रसे नरपति कविने राश्यादि वस्तु और ग्रहवेधसे दैनिक तेजी-मन्दीका वर्णन किया है, किन्तु इस वेधमानसे स्थूल तेजी-मन्दी निकलती हैं। इससे अतिसूक्ष्म वराहमिहिराचार्यने अपने ग्रन्थ—"बृहद्रत्न मञ्जूषा" नामक ग्रन्थके अर्घप्रकरणमें अपूर्व ज्ञानका विकाश किया है। इसका कुछ ज्ञान जो मैंने समझा है उसे यहां पर लिखता हूँ। यथाकाल समयमें वेधतुल्य—ग्रहमान उस स्थानके बनाने चाहिये कि जहां पर केन्द्र स्थान समझा जावे, उस स्थानके क्रमसे १२-२-४-७-१० बजे स्टेण्डर्ड टाईमसे स्पष्ट ग्रह अलग २ बनाने चाहियें। इसी प्रकार शुद्ध नक्षत्र-भोगकाल ग्रहोंके समयके अनुसार ही बनाना चाहिये। इसके बाद चांदी, सोना, रुई इत्यादिकी जो राशि मानी गई है, उनके चरण १, २, ३, ४ का निर्णय करके ग्रहोंकी क्रूर पाप शुभ संज्ञा स्थापित करके स्पष्ट ग्रहोंको १० अंश तक सम; २० अंश तक विशेष फलकारी, २० से ३० तक फिर सम फलकारक मानकर वेध दैनिक लेना चाहिये। राशिके वेधसे स्थूल और नक्षत्रचरण-वेधसे सूक्ष्म वेध होता है। इसके तीन भेद हैं, यदि क्रूर ग्रह सीधा वेध करें तो फल मामूली तेजी, तिरछा वेध (वाम) हो तो अच्छी तेजी। यदि तिरछा दायां वेध करें तो दो तरफा बाजार रहता है। इसी प्रकार पाप ग्रहों के वेधसे विस्मयकारक तेजी, शुभ ग्रहोंके वेधसे विस्मयकारक मन्दी होती हैं (मुख्य) क्रूर, पाप, शुभ तीनोंसे तेजीमन्दी अलग २ देखना चाहिये, जिस तरफ दो सही आवे उसको अधिक महत्त्व, तीनों तरफके एक योग को अचूक फलकारक समझना चाहिये। इसी प्रकारसे त्रैमासिक दैनिक तेजीमन्दी बम्बई नगरके स्थानीय स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार चार परियडीकल तेजी-मन्दी व्यापारियोंके सामने रखता हूँ। कारण, व्यापारी समाजको ज्योतिष पर विश्वास और श्रद्धा बढ़े और इसके द्वारा व्यापारी जनता लाभान्वित होकर 'श्रीस्वाध्याय' की प्रति भारतवर्षके कोने-कोनेमें व्यापारी समाज अपनायें, जिससे 'श्रीस्वाध्याय' समर्थ होकर शीघ्र ही त्रैमासिकके बजाय मासिक होनेका प्रबन्ध कर सके। यह कार्य्य व्यापारियोंकी सद्भावना एवं पांच हजार ग्राहक संख्या होने पर ही पूर्ति हो सकती हैं, अस्तु।

चांदी सोनाकी दैनिक तेजी-मन्दी—

जनवरी तारीख	वार	बम्बई स्टैं० टा० १२ बजे	२ बजे	४ बजे	७ बजे	१० बजे	रिमार्क
१४	सो०	मंदी	तेजी	सम	तेजी	तेजी	खरीदो १२ बजे
१५	मं०	तेजी	,,	मंदी	सम	तेजी	बेचो ४ बजे
१६	बु०	,,	मंदी	,,	तेजी	,,	खरीदो ४ ,,
१७	गु०	मंदी	,,	तेजी	,,	मंदी	दोतरफा
१८	शु०	,,	तेजी	,,	मंदी	,,	बेचो ७ बजे
१९	श०	तेजी	मंदी	मंदी	तेजी	तेजी	खरीदो ४ ,,
२१.	सो०	मंदी	तेजी	तेजी	मंदी	मंदी	बेचो ४ बजे
२२	मं०	,,	मंदी	,,	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,

तारीख	वार	बम्बई स्टॅ० टा० १२ बजे	२ बजे	४ बजे	७ बजे	१० बजे	रिमार्क
जनवरी २३	बु०	तेजी	तेजी	मंदी	मंदी	मंदी	बेचो २ ,,
२४	गु०	,,	मंदी	,,	,,	तेजी	खरीदो २ ,,
२५	शु०	मंदी	तेजी	तेजी	तेजी	मंदी	बेचो ७ ,,
२६	श०	,,	मंदी	मंदी	,,	तेजी	खरीदो ४ ,,
२८	सो०	तेजी	तेजी	मंदी	मंदी	तेजी	दोतरफा
२९	मं०	,,	,,	तेजी	,,	मंदी	बेचो ४ ,,
३०	बु०	मंदी	तेजी	,,	,,	तेजी	खरीदो ४ ,,
३१	गु०	तेजी	,,	मंदी	,,	,,	बेचो २ ,,
फरवरी १	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	बेचो ७ बजे
२	श०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	,,	तेजी	खरीदो ४ बजे
४	सो०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	बेचो ७ बजे
५	मं०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	तेजी	तेजी	खरीदो ४ बजे
६	बु०	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	बेचो १० ,,
७	गु०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	,,	तेजी	खरीदो ४ ,,
८	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	बेचो १० ,,
९	श०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	मन्दी	तेजी	खरीदो ७ ,,
११	सो०	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	मन्दी	बेचो २ ,,
१२	मं०	मन्दी	मन्दी	,,	तेजी	,,	दोतरफा
१३	बु०	,,	,,	तेजी	,,	तेजी	खरीदो २ बजे
१४	गु०	तेजी	तेजी	,,	मन्दी	मन्दी	बेचो ४ बजे
१५	शु०	मन्दी	,,	,,	तेजी	,,	खरीदो १२ ,,
१६	श०	तेजी	,,	मन्दी	मन्दी	,,	बेचो २ ,,
१८	सो०	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो १२ ,,
१९	मं०	,,	,,	मन्दी	मन्दी	,,	बेचो ४ ,,
२०	बु०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	तेजी	मन्दी	,,
२१	गु०	,,	,,	,,	,,	तेजी	खरीदो २ बजे
२२	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	बेचो ७ ,,
२३	श०	मन्दी	,,	,,	,,	,,	,, ,, ,,
२५	सो०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
२६	मं०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	बेचो ४ ,,
२७	बु०	मन्दी	,,	,,	तेजी	,,	खरीदा १ ,,
२८	गु०	,,	,,	,,	,,	तेजी	बेचो १० ,,
मार्च १	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	खरीदो १२ बजे
२	श०	,,	,,	मंदी	,,	,,	बेचो ४ ,,

तारीख	वार	बम्बई स्टॅं० टा० १२ बजे	२ बजे	४ बजे	७ बजे	१० बजे	रिमार्क
मार्च ४	सो०	मन्दी	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	खरीदो १२ ,,
५	मं०	तेजी	,,	,,	मन्दी	,,	बेचो ४ ,,
६	बु०	मन्दी	,,	मन्दी	तेजी	,,	खरीदो ४ ,,
७	गु०	,,	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो १२ ,,
८	शु०	तेजी	,,	,,	,,	मंदी	बेचो ४ ,,
९	श०	मंदी	मंदी	मंदी	,,	तेजी	खरीदो १२ ,,
११	सो०	,,	,,	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
१२	मं०	तेजी	तेजी	तेजी	मंदी	मंदी	बेचो ४ ,,
१३	बु०	मंदी	मंदी	मंदी	मंदी	मंदी	बेचो १२॥ ,,
१४	गु०	,,	,,	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
१५	शु०	तेजी	तेजी	,,	,,	,,	बेचो १० ,,
१६	श०	मंदी	मंदी	मंदी	,,	मंदी	खरीदो ४ ,,
१८	सो०	तेजी	तेजी	तेजी	मंदी	,,	बेचो ४ ,,
१९	मं०	मंदी	मंदी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
२०	बु०	तेजी	तेजी	तेजी	मंदी	मंदी	बेचो ४ ,,
२१	गु०	मंदी	मंदी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
२२	शु०	तेजी	तेजी	,,	,,	मंदी	बेचो १० ,,
२३	श०	मंदी	मंदी	मंदी	,,	तेजी	खरीदो ४ ,,
२५	सो०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	खरीदो २ ,,
२६	मं०	,,	,,	मन्दी	,,	तेजी	बेचो ४ ,,
२७	बु०	,,	,,	तेजी	मंदी	मंदी	खरीदो ७ ,,
२८	गु०	मंदी	मंदी	मंदी	तेजी	तेजी	बेचो १२ ,,
२९	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	,,	मंदी	खरीदो १२ ,,
३०	श०	मंदी	मंदी	,,	,,	,,	बेचो १२ ,,
अप्रैल १	सो०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	तेजी	खरीदो १२ बजे
२	मं०	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	बेचो ७ ,,
३	बु०	मन्दी	मन्दी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो २ ,,
४	गु०	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	तेजी	दो तरफा
५	शु०	तेजी	तेजी	तेजी	तेजी	मन्दी	बेचो ७ ,,
६	श०	मंदी	मंदी	मंदी	तेजी	तेजी	खरीदो ७ ,,
८	सो०	मन्दी	मन्दी	मन्दी	तेजी	तेजी	खरीदो १॥ ,,
९	मं०	तेजी	मन्दी	तेजी	तेजी	तेजी	बाजार देखो
१०	बु०	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	मन्दी	बेचो ४ ,,
११	गु०	मन्दी	मन्दी	तेजी	तेजी	तेजी	खरीदो ४ ,,
१२	शु०	तेजी	तेजी	मन्दी	मन्दी	मन्दी	बेचो ४ ,,

राजस्थान-क्षत्रिय-विद्यापीठ

गताङ्कमें हमने व्यक्त किया था कि वर्तमानमें क्षात्रधर्मको जागृत करनेकी परमावश्यकता है। जब तक क्षात्रधर्मका विधिवत् पालन न होगा तब तक राष्ट्रका कल्याण नहीं हो सकता। हमें विदित हुआ है कि अजमेरमें "राजस्थान-क्षत्रियविद्यापीठ" नामक संस्था प्रान्तिक-क्षत्रियसभाकी ओरसे स्थापित हो गई है।

सुप्रसिद्ध आर्य नरेश राजाधिराज श्री उम्मेदसिंहजी शाहपुराधीश सरीखे आदर्श नृपतिगण इस संस्थाको समुन्नत करनेके लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। भिनायके राजासाहब श्री कल्याणसिंहजीका सदुत्साह भी प्रसंशनीय है।

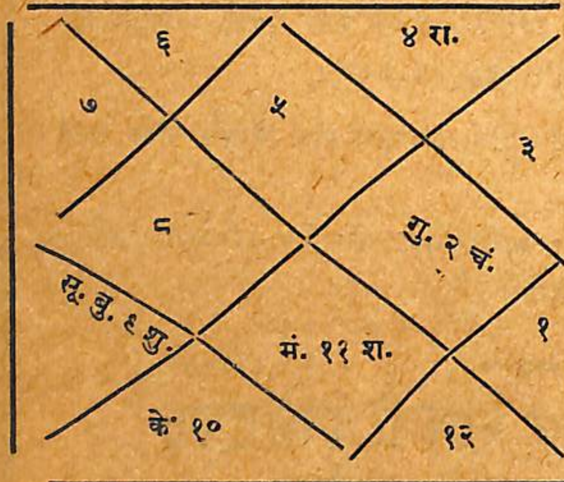
हम विद्यापीठकी हार्दिक समुन्नति और सफलता चाहते हैं। आगामी अङ्कमें इस क्षत्रिय विद्यापीठके सम्बन्धमें विशेष प्रकाश डाला जायगा।

—सम्पादक

सम्मान्य ग्राहकोंकी जन्मकुण्डलियां

सं० १९६२ पोष शु० १२ रविवासरे श्रीसूर्योदयादिष्टम् ३७।५४ रोहिणीनक्षत्रस्य तृतीयचरणे धनुष्यर्कगता० २४ दिनमान २५।६ सिंह लग्नमें श्रीमान् प्रो० हंसराज महोदयका जन्म। लग्न ४।२५। २७।४७। जन्मस्थान जगरावां (पंजाब)।

जन्म कुण्डली



विचारणीय भाव

भाग्य, उन्नति, परिवर्तन, व्यापारमें हानि लाभ, स्वास्थ्य आदि।

जन्म लग्न—श्रीमती सौ० शकुन्तलादेवीजी (धर्मपत्नी श्री प्रो० हंसराजजी अग्रवाल)।

सं० १९७० ज्येष्ठ कृष्ण ६ गुरुवार ३५।२१ पू० भा० मे० ३७।५ सूर्योदयादिष्टघट्यः ७।१५ वृषार्कतः गतांशाः १७ मिथुनलग्नोदये जन्म। कुण्डलीमें ग्रहस्थिति निम्न है—चतुर्थ केतु, सप्तम धनुराशिमें गुरु, नवम चन्द्रमा, दशम मङ्गल राहु, ११वें मेषका शुक्र, १२ वें वृषभके सूर्य बुध शनि।

पता—**श्री हंसराज अग्रवाल एम० ए०**
संस्कृत प्रोफेसर गवर्नमेण्ट कालेज, लायलपुर (पंजाब)

पंचांगके सम्बन्धमें



'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी ग्राहक 'श्रीविश्वविजय-पञ्चाङ्ग' प्राप्त करनेके लिए अत्यधिक उतावले हो रहे हैं। उनकी आवश्यकता और इच्छाओंको ध्यानमें रखते हुए हमने सबसे पहले यह पञ्चाङ्ग प्रेमी पाठकों को देनेका निश्चय किया था, किन्तु बहुत कुछ प्रयत्न करने पर भी समय रहते सरकारकी ओरसे कागज और छपाईकी स्वीकृति नहीं मिली इसका हमें महान् दुःख था। जगदम्बाकी कृपासे वह दुःख दूर हुआ और अब इसी मासमें सरकारी स्वीकृति आगई है, अतः छपाईका कार्य बड़े जोरशोरसे प्रारम्भ हो गया है। इसी जनवरी मासके अन्त तक तैय्यार हो जायेगा। अतः ग्राहकोंको जितने पञ्चाङ्गोंकी आवश्यकता हो वे 'श्री मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास संस्कृतपुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाजार लाहौर' इस पते पर पत्र लिखकर शीघ्रसे शीघ्र मंगवा लेवें। अन्यथा विलम्ब करने पर बहुतसे ग्राहक गतवर्षकी भांति वञ्चित रह सकते हैं। इसी पञ्चाङ्ग छपाईके लिए लाहौर जानेकी शीघ्रताके कारण इस अङ्कमें वेदभाष्यकार श्री पं० जयदेवजी विद्यालङ्कार आदि कुछ मान्य विद्वानोंके अन्वेषणात्मक लेख हम प्रकाशित नहीं कर सके, वे आगामी अङ्कमें प्रकाशित होंगे।

—सम्पादक

हिन्दी संस्कृतके विद्यार्थियों एवं साहित्यानुरागियोंके लिए अपूर्व अवसर

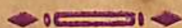
'श्रीस्वाध्याय' का साहित्यांक



'श्रीस्वाध्याय' का आगामी अङ्क 'साहित्याङ्क' होगा। इसमें वैदिक कालसे लेकर आधुनिक काल तकके भारतीय साहित्य व साहित्यकारोंका समालोचनात्मक सचित्र परिचय तो रहेगा ही। साथ ही रस, अलङ्कार, कविता, नाटक, वर्तमान विश्वकी प्रगति आदि विभिन्न विषयों पर भी गम्भीर विवेचनपूर्ण ठोस सामग्री भी रहेगी। इसके अतिरिक्त लब्धप्रतिष्ठ भारतीय विद्वान् कविगणों साहित्यकारोंकी भावपूर्ण सरस कविता, नाटक, गल्पादि भी दिये जायेंगे। संक्षेपमें यह अङ्क सर्वसाधारण साहित्यानुरागियोंके लिये तो संग्राह्य होगा ही साथ ही भूषण, प्रभाकर, मध्यमा, उत्तमा आदि उच्च श्रेणियोंके परीक्षार्थियोंके लिये तो अत्यन्त ही उपयोगी होगा, अतः जिज्ञासुओंको चाहिए कि वे अभीसे ३॥) मनीआर्डरसे भेजकर स्थायी ग्राहक बन जावें। अन्यथा सम्भव है गत 'नववर्षाङ्क की भांति इस आगामी साहित्याङ्कके भी हाथों-हाथ निकल जानेके कारण इस महत्त्वपूर्ण अङ्कसे वञ्चित रहना पड़े या अतिरिक्त मूल्य देकर लेना पड़े। यह अङ्क मार्च मासमें ही पाठकोंके हाथोंमें पहुंच जायेगा।

—व्यवस्थापक

'श्रीस्वाध्याय' के लिए कौन क्या कहते हैं ?



त्यागमूर्त्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है।........ यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान-पाने योग्य है........।

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी, अध्यक्ष अ० भा० हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं।........मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ........।

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला।........इस पत्र और इसके सञ्चालक मण्डलसे राष्ट्रियकार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी........।

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति (पू० भू० अध्यक्ष अ० भा० हिन्दी-पत्रकार-संघ)—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है........यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

कवि सम्राट् श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' के पञ्चमवर्षका प्रथमाङ्क बड़ा सुन्दर निकला है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्ध कर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्री डा० बलदेवप्रसादजी मिश्र M. A. L. L. B., D. litt. प्रिन्सिपल आर्ट कालेज, बिलासपुर (म० प्रा०)—"जिस उद्देश्यको लेकर यह पत्र निकल रहा है वह प्रत्येक भारतीयसंस्कृतिके प्रेमीको परमप्रिय है ही........ऐसे पत्रोंका जितना अधिक प्रचार हो उतना ही अच्छा।

श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय M. A. भू० पू० प्रधान युक्त प्रान्तीय आर्यप्रादेशिक सभा—"........पत्र बहुत अच्छा है। सभी लेख विद्वत्तापूर्ण तथा लाभदायक है। साहित्य-जगत्में इसका यथोचित सम्मान होगा।........"

ज्यौतिषाचार्य विद्याभूषण श्री पं० हरकृष्णदयालुजी शास्त्री राजज्यौतिषी सुकेत स्टेट—"श्रीस्वाध्याय' सर्वाङ्ग सुन्दर है, अनुपम सामग्रीसे विभूषित है, देख कर चित्त परमआल्हादित होता है। सर्वतोमुखी उन्नतिकी कामना करता हूँ ...."

श्री बा० हरिदासजी वैद्य, अध्यक्ष हरिदास एण्ड कम्पनी मथुरा—"........नववर्षाङ्कमें जो भी सामग्री दी है वह अभूतपूर्व है। मैं तो पहला दूसरा लेख पढ़ते ही दिलोजान से मुग्ध हो गया।........इस पत्रसे बड़ा लाभ होगा। मैं तो कहूंगा हर पढ़े लिखे सज्जनको इसकी खूब कद्र करनी चाहिये।........"

श्री पं० ठाकुरदत्तजी वैद्य, अध्यक्ष अमृतधारा औषधालय लाहौर, प्रधान पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन—" 'श्रीस्वाध्याय' को देख कर चित्त प्रसन्न हुआ। लेख उत्तम २ निकल रहे हैं........जो वास्तवमें एक ग्रन्थ ही होता है।........इसमें शास्त्रोंके विभिन्न विचार आते रहनेसे सब सिद्धान्तोंका पता लगता रहता है, मैं इसकी सफलता चाहता हूँ।........"

श्री डा० विश्वपालजी शर्मा अध्यक्ष सुखसंचारक कम्पनी मथुरा—"........'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है।........गौरवपूर्ण जीवनके लिए ऐसे पत्रकी परम आवश्यकता है। स्वाध्यायसे राष्ट्रधर्मका ज्ञान होता है। मैं आपके सराहनीय प्रयासकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।........"

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस देहली में छपकर, श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (शिमला) से प्रकाशित।